शीशों का मसीहा

हिंदुस्तानी बुक ट्रस्ट (बम्बई) एक साहित्यिक संस्था है जिसका उद्देश्य व्यापार नहीं है और जिसके सब खर्चे निजी अनुदान से पूरे किए जाते हैं। इसके तत्वावधान में हिंदी, उर्दू और फारसी के उच्चकोटि के कवियों का काव्य उर्दू और देवनागरी लिपि में एक साथ प्रकाशित किया जाता है। आधुनिक साहित्य भी इस संस्था का एक आवश्यक विभाग है। हिन्दी और उर्दू पढ़ने और बोलने वालों के बीच भावनात्मक एकता पैदा करना और सफाई के स्तर को ऊँचा करना हिंदुस्तानी बुक ट्रस्ट के उद्देश्यों में शामिल हैं।

●

ट्रस्टी
विद्याशंकर
लाला योधराज
सैयद शहाबुद्दीन दसनवी

●

संपादक
डॉ० मुल्कराज आनन्द
सरदार जाफरी

●

शीशों का मसीहा

12134
30/12/2009

श्री जुबली नागरी भण्डार
पुस्तकालय एवं वाचनालय
स्टेशन रोड़, बीकानेर

फैज़ अहमद 'फैज़'

हिंदुस्तानी बुक ट्रस्ट, बम्बई
की ओर से
राजकमल प्रकाशन

हिंदुस्तानी बुक ट्रस्ट, बम्बई १९६९

प्रथम संस्करण, १९६९

प्रकाशक
हिंदुस्तानी बुक ट्रस्ट,
२०, खेतान भवन जे० टाटा रोड,
बम्बई १ की ओर से
राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
८, फैज बाजार दिल्ली ६

मूल्य ₹० [illegible]

मुद्रक
नवीन प्रेस, दिल्ली-६

फ़ैज़

—अज फ़ैज

अपने बारे म बातें करने से मुझे सख्त वहशत होती है, इसलिए कि सब 'बोर' लोगो का मरगूब शगल[1] यही है। इस अंग्रेजी लफ्ज के के लिए मआ'जरत[2] चाहता हूँ लेकिन अब तो हमारे यहाँ इसके मुश्तिकात[3] 'बोरियत' वगैरह भी इस्ते'माल मे आने लगे हैं, इसे अब उर्दू रोजमर्रा मे शामिल समझना चाहिये। तो मैं यह कह रहा था कि मुझे अपने बारे में कील आ काल[4] बुरी लगती है। बल्कि मैं तो शे'र मे भी हत्ती-उल इमकान[5] वाहिदे मुतकल्लिम का सीग[6] इस्तेमाल नही करता और 'मैं' के बजाय हमेशा से 'हम' लिखता आया हूँ। चुनाच जब अदबी सुरागरसा हजरात मुझसे यह पूछने बैठते हैं कि तुम शे'र क्यो कहते हो, कसे कहते हो और किसलिए कहते हो तो बात को टालने के लिए जो दिल मे आये कह देता हूँ। मसलन यह कि मैं जैसे भी कहता हूँ, जिस लिए भी कहता हूँ तुम शे'र मे से ढूढ लो। मरा सर खाने की क्या जरूरत है। लेकिन उनमे से ढीठ किस्म के लोग जब भी नही मानते। चुनांच आज की गुफ्तगू की सब जिम्मेदारी उन हजरात के सर है मुझ पर नही।

शे'र गोई का कोई वाहिद[7] उ'ज्रे गुनाह[8] तो मुझे नही मालूम। इसमे बचपन की फजा ए गिद-ओ-पेश[9] मे शे'र का चचा, दोस्त अहबाब की तरगीब[10] और दिल की लगी सभी कुछ शामिल है। यह "नक्शे फरियादी" के पहले हिस्से की बात है जिसमे १९२८-२९ से १९३४-३५ तक की तहरीर[11] शामिल हैं जो हमारी तालिब इल्मी के दिन थे। यो तो उन सब अशआ'र का करीब-करीब एक ही जहनी और जज्बाती वारदात से तअ'ल्लुक है और इस वारदात का जाहिरी मुहरिक[12] तो वही एक हादसा है जो इस उ'म्र मे अकसर नौजवान दिलो पर गुजर जाया करता

है। लेकिन अब जो देखता हूँ तो यह दौर भी एक दौर नही था, बल्कि उसके भी दो अलग अलग हिस्से थे जिनकी दाखिली[13] और खारिजी[14] कैफियत काफी मुख्तलिफ थी।

यह या है कि सन् १९२० से १९३० तक का जमाना हमारे यहाँ मआशी[15] और समाजी तौर से कुछ अजब तरह की बेफिक्री, आसूदगी और वलवल अग्रेजी का जमाना था, जिसमे अहम कौमी और सियासी तहरीको के साथ-साथ नस्र ओ-नज्म मे बेशतर सजीद फिक्र-ओ-मुशाहिदे[16] के बजाय कुछ रगरेलियाँ मनाने का सा अदाज था। शेर मे अव्वलन हसरत मोहानी और उनके बाद जोश, हफीज जालधरी और अख्तर शीरानी की रियासत कायम थी। अफसाने मे यलदरम और तनकीद मे हुस्न बराए हुस्न और अदब बराए-अदब का चर्चा था। "नक्शे-फरियादी" की इब्तिदाई नज्म—'खुदा वह वक्त न लाये कि सोगवार हो तू', 'मिरी जाँ अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको' (पृष्ठ २६), 'तहे नजूम कही चाँदनी के दामन मे' (पृष्ठ ३२) वगैरह, वगैरह—इसी माहौल के जेरे असर मुरत्तब[17] हुई और इस फजा मे इब्तिदा ए इ'श्क का तहय्युर[18] भी शामिल था। लेकिन हम लोग इस दौर की एक झलक भी ठीक से न देख पाये थे कि सोहबते यार आखिर शुद।

फिर देस पर आलमी कसादबाजारी[19] के साये ढलने शुरू हुए। कालेज के बडे बडे बाके तीसमारखाँ तलाशे मआ'श[20] मे गलियो की खाक फाकने लगे। यह वे दिन थे जब यकायक बच्चा की हँसी बुझ गयी। उजडे हुए किसान खेत खलिहान छोडकर शहरो मे मजदूरी करने लगे और अच्छी खासी शरीफ बहू बेटियाँ बाजार मे आ बैठी। घर के बाहर यह हाल था और घर के अन्दर मर्गे सोजे मुहब्बत[21] का कुहराम मचा था। यकायक यू महसूस होने लगा कि दिल ओ दिमाग पर सभी रास्ते बन्द हो गये हैं और अब यहा कोई नही आयेगा। इस कैफियत का इख्तमाम[22] जो "नक्शे फरियादी" के पहले हिस्से की आखिरी नज्मों की कैफियत है, एक निस्बतन गैर मा'रूफ नज्म पर होता है जिसे मैंने यास' (पृष्ठ ३६) का नाम दिया था। वह नज्म यू है

बरबते दिल के तार टूट गये
हैं जमीबोस राहता के महल

मिट गये किस्स हा-ए फिक्र-ओ-अमल
बज्मे हस्ती के जाम फूट गये

छिन गया कैफे कौसर आ तसनीम

जहमते गिरिय-ओ बुका बे-सूद
शिकव ए-बख्ते नारसा बे सूद
हो चुका खत्म रहमतो का नुजूल
बन्द है मुद्दतों से बाबे-कुबूल
बेनियाजे दुआ है रब्बे-करीम

बुझ गई शम्ए-आरजू ए जमील
याद बाकी है बेकसी की दलील

इतजारे फिजूल रहने दे
राजे उल्फत निबाहने वाले
वारे गम से कराहने वाले
काविश बे हुसूल रहने दे

सन् १९३४ मे हम लोग कालेज से फारिग हुए और सन् १९३५ मे मैंने एम० ए० ओ० कालेज अमतसर मे मुलाजमत कर ली। यहाँ स मेरी और मेरे बहुत से हम अस्र[२३] लिखने वालो की जहनी और जज्बाती जिंदगी का नया दौर शुरू होता है। इस दौराने कालेज मे अपने रुफका[२४] साहबजादा महमूदुज्जफर मरहूम और उनकी बेगम रशीद जहा से मुला कात हुई। फिर तरक्कीपसद तहरीक की दाग बल पडी, मजदूर तहरीका का सिलसिला शुरू हुआ और यू लगा कि जैसे गुलशन मे एक नही कई दबिस्ताँ[२५] खुल गये हैं। इस दबिस्ता मे पहला सबक जो हमने सीखा यह था कि अपनी जात को बाकी दुनिया से अलग करके सोचना अव्वल तो मुमकिन ही नही इसलिए कि इसम बहरहाल गिद ओ-पेश के सभी तजुबात शामिल होते हैं और अगर ऐसा मुमकिन हो भी तो इतहाई ग़र-सूदमद फे'ल है कि एक इसानी फद की जात अपनी सब मुहब्बतो और खुबूरता,[२६] मसरता और रजिशो के बावजूद बहुत ही छोटी-सी बहुत ही महदूद और हकीर[२७] शै है। उसकी वुसअत[२८] और पिहाई[२९] का पैमाना तो बाकी आलमे मौजूदात[३०] से उसके जहनी और जज्बाती रिश्ते

हैं, आम तौर से इंसानी बिरादरी के मुश्तरका दुख-दर्द के रिश्ते। चुनांचे गमे-जाना[३१] और गमे-दौरां[३२] तो एक ही तजुर्बे के दो पहलू हैं। इस लिये एहसास की इब्तिदा "नक्शे फरियादी" के दूसरे हिस्से की पहली नज्म से होती है। इस नज्म का उनवान[३३] है "मुझ से पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न मांग" (पृष्ठ ४७) और अगर आप खातून हैं तो मिरे महबूब न मांग"।

मुझसे पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न माग
मैंने समझा था कि तू है तो दरख्शां है हयात
तेरा गम है तो गमे दहर का झगडा क्या है
तेरी सूरत से है आलम मे बहारो को सबात
तेरी आखो के सिवा दुनिया मे रक्खा क्या है

तू जो मिल जाये तो तकदीर निगू हो जाय

यू न था मैंने फक्त चाहा था यू हो जाये
और भी दुख हैं जमाने म मुहब्बत के सिवा
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा
अनगिनत सदियो के तरीक बहीमान तिलिस्म
रेशम ओ अतलस-ओ-कमखाब म बुनवाये हुए
जा-ब जा बिकते हुए कूच-ओ बाजार मे जिस्म
खाक मे लिथडे हुए खून मे नहलाये हुए

जिस्म निकले हुए अमराज के तन्नूरो से
पीप बहती हुई गलते हुए नासूरो से
लौट जाती है इधर को भी नजर क्या कीजे
अब भी दिलकश है तिरा हुस्न मगर क्या कीजे

और भी दुख हैं जमाने मे मुहब्बत के सिवा
राहतें और भी हैं वस्ल की राहत के सिवा
मुझसे पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न माग

इसके बाद तेरह चौदह बरस 'क्यो न जहा का गम अपना लें' मे गुजरे और फिर फौज सहाफत,[३४] ट्रेड यूनियन वगरह वगैरह करने के

बाद हम चार बरस के लिए जेलखाने चले गये। 'नक्शे फरियादी' के बाद की दो किताबें 'दस्ते सबा' और 'जिंदानामा' इसी जेलखाने की यादगार है। बुनियादी तौर से तो ये तहरीरें उन्हीं ज़हनी महसूसात और मामूलात से मुनसलिक[३४] हैं जिनका सिलसिला 'मुझसे पहली सी मुहब्बत' से शुरू होता है। लेकिन जेलखाना आशिकी की तरह खुद एक बुनियादी तजुर्बा है, जिसमे फिक्र-ओ-नजर का एकाध नया दरीचा[३५] खुद ब खुद खुल जाता है। चुनांचे अव्वल तो यह कि इब्तिदा ए-शबाब की तरह तमाम हिस्सियात[३७] यानी Sensations फिर तेज हो जाती है और सुब्ह की पौ, शाम के धुधलके, आसमान की नीलाहट हवा के गुदाज के बारे मे वही पहना-सा तहय्युर लौट आता है। दूसरे यू होता है कि बाहर की दुनिया का वक्त और फासले दोनो बातिल[३८] हो जाते हैं। नजदीक की चीजें भी बहुत दूर हो जाती हैं और दूर की नजदीक और फर्दा व दी[३९] का तफरका[४०] कुछ इस तौर से मिट जाता है कि कभी एक लम्हा कयामत मालूम होता है और कभी एक सदी कल की बात। तीसरी बात यह है कि फरागते हिस्सा[४१] म फिक्र ओ मुतालआ[४२] के साथ उस्से सुखन[४३] के जाहिरी बनाव सिंगार पर तवज्जो देने की ज्यादा मुहलत मिलती है। इस जेलखाने के भी दो दौर थे। एक हैदराबाद जेल का, जो इस तजुर्बे के इनकिशाफ[४४] का, तहय्युर का जमाना था, एक माटगोमरी जेल का जो इस तजुर्बे से उकताहट और थकन का जमाना था। इन दो कैफियतो की नुमाइंदा ये दो नज्मे हैं। पहली 'दस्ते-सबा' मे से और दूसरी 'जिंदानामा' मे से

जिंदां की एक शाम

शाम के पेच-ओ-खम सितारो से
जीना जीना उतर रही है रात
यू सबा पास से गुजरती है
जैसे कह दी किसी ने प्यार की बात
सह्न ने जिंदा के बे-वतन अशजार
सरनिगू महव है बनाने मे
दामने-आसमां पे नक्श ओ निगार

शान ए बाम पर दमकता है
मेहरबां चांदनी का दस्ते-जमील

खाब मे घुल गई है आवे नुजूम
नूर मे घुल गया है अ'श का नील
सब्ज गोशा मे नीलगू साये
लहलहाते हैं जिस तरह दिल म
मौजे दर्दे फिराके-यार मे आये
दिल से पैहम खयाल कहता है
इतनी शोरी है जिंदगी इस पल
जुल्म का जह्र घोलने वाले
कामरा हो सकेंगे आज न कल
जल्व गाहे - विसाल की शम्एँ
वह बुझा भी चुके अगर तो क्या
चाँद को गुल कर तो हम जानें

ऐ रोशनियों के शह र

सब्ज सब्ज सूख रही है फीकी जद दोपहर
दीवारो को चाट रहा है तनहाई का जहर
दूर उफक तक घटती, बढती, उठती, गिरती रहती है
कुहर की सूरत वे रौनक दर्दा की लहर
विसात है उस कुहर के पीछे रोशनियो का शहर

ऐ रोशनियो के शह र
ऐ रोशनियो के शह र

कौन कहे किस सिम्त है तेरी रोशनियो की राह
हर जानिब वे नूर खडी है हिज्र की शहरपनाह
थक कर हर सू बैठ रही है शौक की माद सिपाह

ऐ रोशनियो के शह र
ऐ, रोशनियो के शह र

शब्रखू से मुह फेर न जाये अरमानो की रो
खैर हो तेरी लैलाओ की, उन सबसे कह दो
आज की शब जब दिये जलाय ऊँची रखें लौ

'ज़िंदानिनाम' के बाद का ज़माना कुछ ज़हनी अफरा-तफरी का ज़माना है जिसमें अपना अख़बारी पेशा छूटा। एक बार फिर जेलख़ाने गये, मार्शल लॉ का दौर आया और ज़हनी और गिर्द ओ पेश की फ़ज़ा में फिर से कुछ इसदारे राह[४५] और कुछ नई राहों की तलाश का एहसास पैदा हुआ। इस सुकून और इंतज़ार की आईनादार एक नज़्म है 'शाम' (पृष्ठ १६६) और एक नामुकम्मल ग़ज़ल के चंद अशआर हैं 'कब ठहरेगा दर्द, ए दिल, कब रात बसर होगी।'

—फ़ज़

---

१ प्रिय व्यसन २ क्षमा ३ किसी शब्द से बने हुए दूसरे शब्द ४ चर्चा, बखान ५ यथासंभव ६ प्रथम पुरुष एकवचन ७ एकमात्र ८ अपराध का बहाना ९ चारों ओर का वातावरण १० रुचि ११ रचनाएँ १२ प्रेरक १३ आत्मगत १४ वस्तुगत १५ आर्थिक १६ चिंतन और अध्ययन १७ व्यवस्थित १८ हैरत, कौतूहल १९ विश्वव्यापी मंदी २० रोज़ी की तलाश २१ प्रेम की जलन का अंत २२ अंत २३ समकालीन २४ रफ़ीक़ (साथी) का बहुवचन २५ पाठशाला २६ द्वेषी २७ तुच्छ २८ विस्तार २९ गहराई ३० अस्तित्व का संसार ३१ प्रेमिका का दुख ३२ ज़माने का दुख ३३ शीर्षक ३४ पत्रकारिता ३५ संलग्न ३६ धरोहर ३७ चेतनाएँ ३८ मिथ्या ३९ भविष्य और अतीत ४० अंतर ४१ विरह का अवकाश ४२ चिंतन और अध्ययन ४३ कविता की देवी ४४ प्रकट होना ४५ राह खुलना

क्रम

१ नक्शे-फ़रियादी

१ अशआ'र १५
२ मुदा वह वक्त न लाये १६
३ ग़ज़ल १७
४ इतिहा ए-प्यार १८
५ मैं दिलफिगार नही १९
६ अजाम २०
७ सरोदे-शबाना २१
८ गज़ल २२
९ आखिरी खत २३
१० गज़ल २४
११ हसीन ए खयाल से २५
१२ मिरी जां अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको २६
१३ बा द अज वक्त २७
१४ सरोदे शबाना २८
१५ अशआ'र २९
१६ कतआ'त ३०
१७ इन्तजार ३१
१८ तहे नजूम ३२
१९ हुस्न और मौत ३३
२० तीन मजर ३४
२१ मरोद ३५
२२ यास ३६
२३ आज की रात ३७
२४ गजल ३८
२५ एक रहगुजर पर ३९
२६ गज़ल ४१

२७ एक मजर ४२
२८ मेर नदीम ४३

२ "दिले बफरोख्तम जाने खरीदम'

२९ मुझसे पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न माँग ४७
३० गजल ४८
३१ सोच ४९
३२ गजल ५०
३३ रकीब से ५१
३४ तनहाई ५३
३५ गजल ५४
३६ गजल ५५
३७ गजल ५६
३८ चद रोज और मिरी जान ! ५७
३९ मगें सोज़े मुहब्बत ५८
४० कुत्ते ५९
४१ बोल ६०
४२ गजल ६१
४३ इकबाल ६२
४४ गजल ६३
४५ मौजूए' सुखन ६४
४६ हम लोग ६६
४७ शाहराह ६७
४८ सियासी लीडर के नाम ६८
४९ ए दिले बेताबे, ठहर ६९
५० मिरे हमदम, मिरे दोस्त ! ७०

३ दस्ते सबा

५१ मताए लौह-ओ कलम ७१
५२ गजल ७२
५३ सुब्हे-आजादी (अगस्त '४७) ७३
५४ कहा से आई निगारे सबा ७४

५५ लौह-ओ क़लम ७९
५६ न पूछ जब से तिरा इंतज़ार कितना है ८०
५७ दो आवाज़ें ८१
५८ दामने-यूसुफ़ ८४
५९ तौक़-ओ-दार का मौसम ८५
६० सरे मक़तल ८७
६१ ग़ज़ल ८८
६२ ग़ज़ल ८९
६३ ग़ज़ल ९१
६४ तुम्हारे हुस्न के नाम ! ९२
६५ तराना ९३
६६ ग़ज़ल ९४
६७ नज़्रे सौदा ९५
६८ दो इंश्क ९६
६९ ग़ज़ल ९९
७० ग़ज़ल १००
७१ ग़ज़ल १०१
७२ नौहा १०२
७३ ईरानी तुलबा के नाम १०३
७४ ग़ज़ल १०५
७५ अगस्त १९५२ १०६
७६ निसार मैं तिरी गलियों पे १०७
७७ ग़ज़ल १०९
७८ शीशों का मसीहा कोई नहीं ११०
७९ ग़ज़ल ११४
८० नज़्रे ग़ालिब ११५
८१ ग़ज़ल ११६
८२ ज़िंदा की एक शाम ११७
८३ ज़िंदाँ की एक सुबह ११८
८४ याद १२०
८५ ग़ज़ल १२१
८६ ग़ज़ल १२२

८७ मुलाकात

४ ऐ साकिनाने-कुजे कफस ! सुब्ह को सबा

८८ गजल
८९ गजल
९० ऐ हबीबे-अ'बरदस्त !
९१ गजल
९२ गजल
९३ गजल
९४ न आज लुत्फ कर इतना
९५ गजल
९६ वासोख्त
९७ गजल
९८ गजल
९९ गजल
१०० ऐ रोशनियो के शहर
१०१ गजल
१०२ हम जो तारीक राहो मे मारे गये
१०३ फिक्रे सूद ओ जिया तो छूटेगी
१०४ गजल
१०५ दरीच
१०६ दद आयेगा दबे पाव
१०७ सुब्ह फूटी तो आसमा पे तिरे
१०८ Africa Come Back
१०९ गजल
११० यह फस्ल उमीदो की हरदम
१११ बुनियाद कुछ तो हो
११२ कोई आ'शिक किसी महबूब से
११३ अगस्त १९५५
११४ गजल

११५ दस्ते-तहे-सग आमद १६१
११६ मयखानों की रौनक हैं १६३
११७ जश्न का दिन १६४
११८ रात ढलने लगी है सीना मे १६५
११९ शाम १६६
१२० ग़जल १६७
१२१ तुम यह कहते हो अब कोई चार नही ! १६८
१२२ दोस्तो, कू ए जानां की नामेहरबां १६९
१२३ न दीद है न सुखन, अब न हर्फ है न पयाम १७०
१२४ वे दम हुए बीमार दवा क्यो नही देते १७१
१२५ शोरिशे जजीर बिस्मिल्लाह १७२
१२६ आज बाजार मे पा-ब जौलां चलो १७३
१२७ ग़जल १७४
१२८ कदे-तनहाई १७५
१२९ हम्द १७७
१३० ग़जल १७८
१३१ आ गयी फस्ले-सुर्ख़ १७९
१३२ गजल १८०
१३३ दो मर्सिए १८१
१३४ इन दिनो रस्म-ओ रहे शह्‌रे निगारां क्या है १८३
१३५ आज यू मौज-दर-मौज ग़म थम गया १८४
१३६ कहाँ जाओगे १८५
१३७ गजल १८६
१३८ शहरे-यारां १८७
१३९ गजल १८८
१४० खुशा जमानते गम १८९
१४१ जब तेरी समदर आँखो में १९०
१४२ रग है दिल का मिरे १९१
१४३ पास रहो १९२
१४४ गजल १९३

१४५ गज़ल १९४
१४६ गज़ल १९५
१४७ मज़र १९६

६ नई नज़्में और गज़लें

१४८ गज़ल १९९
१४९ कतअ' २००
१५० गज़ल २०१
१५१ दीद ए बीना २०२
१५२ सोचने दो २०४
१५३ रुख़्सत २०६
१५४ इनक़लाबे रूस २०७
१५५ गजल २०८
१५६ गजल २०९
१५७ आज के नाम २१०
१५८ यतीम लहू २१३
१५९ ऐ वतन, ऐ वतन २१४
१६० कास -ए-सर लेके चलो २१५
१६१ सरे-आगाज २१६
१६२ दुआ' २१७
१६३ कतअ' २१८

१

नक्शे-फ़रियादी

अशआ'र

(१)

रात यू दिल मे तिरी खोई हुई याद आई
जैसे वीराने म चुपके से वहार आ जाये
जैसे सहराओ[1] मे हौले से चले वादे-नसीम[2]
जसे वीमार को वे-वज्ह करार आ जाये

(२)

दिल रहीने - गमे - जहाँ[3] है आज
हर नफस[4] तश्न - ए - फुगाँ[5] है आज
सस्त वीराँ है महफिले - हस्ती
ऐ गमे - दोस्त तू कहाँ है आज

---

१ निजन, जगल २ सुगधित हवा ३ दुनिया के दुखो से पीडित
४ साँस ५ क्रदन की प्यासी ।

ख़ुदा वह वक़्त न लाये

ख़ुदा वह वक़्त न लाये कि सोगवार[1] हो तू
सुकूं की नींद तुझे भी हराम हो जाये
तिरी मसर्रते-पैहम[2] तमाम हो जाये
तिरी हयात तुझे तल्ख़ जाम हो जाये

ग़मों से आईन-ए-दिल गुदाज़[3] हो तेरा
हुजूमे-यास[4] से बेताब होके रह जाये
वफ़ूरे-दर्द[5] से सीमाब[6] होके रह जाये
तिरा शबाब फ़क़त ख़्वाब होके रह जाये

ग़रूरे-हुस्न सरापा नियाज़[7] हो तेरा
तवील रातों में तू भी क़रार को तरसे
तिरी निगाह किसी ग़मगुसार को तरसे
ख़िज़ाँरसीदा तमन्ना बहार को तरसे

कोई जबीं न तिरे संगे-आस्ताँ[8] पे झुके
कि जिस्से-इज्ज-ओ-अक़ीदत[9] से तुझको शाद करे
फ़रेबे-वादा-ए-फ़र्दा[10] पे ए'तमाद करे
ख़ुदा वह वक़्त न लाये कि तुझको याद आये

वह दिल कि तेरे लिए बे-क़रार अब भी है
वह आंख जिसको तिरा इंतज़ार अब भी है

---

१ उदास २ निरंतर सुख ३ नम बोझल ४ निराशाओं की भी
५ पीड़ा की अति ६ पारा ७ श्रद्धा ८ चौखट का पत्थर ९ नम्र
और श्रद्धा १० भविष्य के वादे का धोखा।।

दिल मरहूने - जोशे - बाद - ओ - नाज[1]
इश्क मिन्नतकशे - फुसूने - नियाज[2]
दिल का हर तार लरजिशे - पैहम[3]
जाँ का हर रिश्त वक्फे-सोज ओ-गुदाज[4]

सोजिशे - दर्दे - दिल किसे मालूम
कौन जाने किसी के इश्क का राज
मेरी खामोशियो मे लरजाँ है
मेरे नालो की गुमशुदा आवाज

हो चुका इ'श्क अब हवस ही सही
क्या करें फज है अदा-ए नमाज
तू है और इक तगाफुले - पैहम[5]
मैं हूँ और इतजारे - बेअदाज

खौफे - नाकामी - ए - उमीद है 'फैज'
वरन दिल तोड दे तिलिस्मे - मजाज[6]

---

१ शराब और सौदर्य की उमग मे डूबा हुआ २ दशन के जादू का अभिलाषी ३ निरतर कपन ४ जलन और नर्मी पर निछावर ५ निरतर उपेक्षा ६ ससार का भ्रम, मायाजाल ।

इतिहा-ए-कार[1]

पिंदार[2] के खूगर[3] को
नाकाम भी देखोगे ?
आगाज[4] से वाकिफ हो
अजाम भी देखोगे ?

रगीनी-ए-दुनिया से मायूस-सा हो जाना
दुखता हुआ दिल लेकर तनहाई मे खो जाना

तरसी हुई नजरो को
हसरत से झुका लेना
फरियाद के टुकडो को
आहो मे छुपा लेना

रातो की खमोशी मे छुपकर कभी रो लेना
मजबूर जवानी के मलबूस[5] को धो लेना

जज़वात की वुसअ'त[6] को
सिज्दो से वसा लेना
भूली हुई यादो को
सीने से लगा लेना

---

१ अन (किसी काम का) २ अभिमान घमड ३ आदी ४ आर
५ कपडा, वस्त्र ६ विस्तार।

मैं दिलफिगार[1] नही, तू सितम शआ'र[2] नही
बहुत दिनो से मुझे तिरा इतजार नही
तिरा ही अक्स है इन अजनबी बहारो मे
जो तेरे लब, तिरे बाजू, तिरा कनार[3] नही

---

१ घायल दिलवाला २ अत्याचारी स्वभाववाला ३ गोद।

अजाम

है लबरेज[1] आहो से ठडी हवाएँ
उदासी मे डूबी हुई हैं घटाएँ
मुहब्बत की दुनिया पे शाम आ चुकी है
सियहपोश है जिदगी की फजाएँ

मचलती हैं सीने मे लाख आरजूएँ
तडपती है आखो मे लाख इल्तिजाएँ[2]
तगाफुल[3] के आगोश मे सो रहे है
तुम्हारे सितम और मेरी वफाएँ

मगर फिर भी ऐ मेरे मा'सूम कातिल
तुम्हे प्यार करती है मेरी दुआएँ

अदा-ए-हुस्न की मा'सूमियत को कम कर दे
गुनाहगार नजर को हिजाब[4] आता है

---

१ परिपूर्ण २ प्रार्थनाएँ ३ उपेक्षा ४ लज्जा।

सरोदे-शबाना

गुम है इक कैफ[1] मे फजा-ए-हयात[2]
खामुशी मिज्द - ए - नियाज[3] मे है
हुस्ने - मा'सूम ख्वावे - नाज मे है

ऐ कि तू रग ओ-बू का तूफान है
ऐ कि तू जल्वगर बहार मे है
जिंदगी तेरे इख्तियार मे है
फूल लाखो बरस नही रहते
दो घडी और है वहारे - शबाव
आ कि कुछ सुन - सुना लें हम
आ मुहब्बत के गीत गा ले हम

मेरी तनहाइयो पे शाम रहे ?
हसरते - दीद[4] नातमाम रहे ?
दिल मे बेताव है सदा - ए - हयात[5]
आँख गौहर निसार[6] करती है
आसमाँ पर उदास हैं तारे
चाँदनी इतजार करती है

आ कि थोडा - सा प्यार कर लें हम
ज़िंदगी जरनिगार[7] कर लें हम

---

१ नशा २ जीवन का वातावरण ३ श्रद्धा से झुकना ४ दर्शन
अभिलाषा ५ जीवन स्वर ६ निछावर ७ स्वर्णिम।

गज़ल

इ'श्क मिन्नतकशे-क़रार[1] नहीं,
हुस्न मजबूरे-इतजार नहीं
तेरी रंजिश की इंतिहा मालूम !
हसरतों का मिरी शुमार नहीं
अपनी नजरें बिखेर दे साकी
मय बअंदाज-ए-खुमार[2] नहीं
जेरे-लब है अभी तबस्सुमे-दोस्त
मुनतशिर[3] जल्व-ए-बहार नहीं
अपनी तकमील[4] कर रहा हूँ मैं,
वरन तुझसे तो मुझको प्यार नहीं
चारए-इंतजार[5] कौन करे,
तेरी नफरत भी उस्तवार नहीं
'फैज़' जिंदा रहे वह हैं तो सही
क्या हुआ गर वफाशेआ'र[6] नहीं

---

१ चैन का इच्छुक। २ उतरा नशा पूरा करने भर को ३ बिच्छिन्न बिखरा हुआ ४ पूर्ति ५ प्रतीक्षा का समाधान ६ वफा करनेवाला।

आखिरी ख़त

वह वक्त मिरी जाँ बहुत दूर नहीं है
जब दद से रुक जायेंगी सबजीस्त[1] की राहे
और हद से गुजर जायेगा अदोहे-निहानी[2]
थक जायेगी तरसी हुई नाकाम निगाहे
छिन जायेंगे मुझसे मिरे आँसू, मिरी आहे
छिन जायेगी मुझसे मिरी बेकार जवानी

शायद मिरी उल्फत को बहुत याद करोगी
अपने दिले-मा'सूम को नाशाद करोगी
आओगी मिरी गोर[3] पे तुम अश्क बहाने
नौखेज़[4] बहारो के हसी फूल चढाने

शायद मिरी तुबत[5] को भी ठुकरा के चलोगी
शायद मिरी बे-सूद वफाओ पे हँसोगी
इस वज्ञ' का भी तुम्हे पास[6] न होगा
लेकिन दिले-नाकाम को एहसास न होगा
अलकिस्स मआले-गमे-उल्फत[7] पे हँसो तुम
या अश्क बहाती रहो फरियाद करो तुम
माजी[8] पे नदामत[9] हो तुम्हे या कि मसर्रत[10]
खामोश पडा सोयेगा वामाँद-ए-उल्फत[11]

---

१ जिंदगी २ छुपा हुआ तूफान ३ कब्र ४ नवोदित ५ कब्र मान ७ प्रेम-पीडा का परिणाम ८ बीते दिन, अतीत ९ शर्मिंदगी खुशी ११ प्रेम से थका हुआ।

गजल

हर हकीकत मजाज[1] हो जाये
काफिरो की नमाज हो जाये
दिल रहीने-नियाज हो जाये
बेकसी कारसाज हो जाये
मिन्नते-चारसाज कौन करे
दर्द जब जाँ-नवाज हो जाये

इश्क दिल मे रहे तो रुस्वा[3] हो
लब पे आये तो राज हो जाये
लुत्फ का इन्तजार करता हूँ
जौर[4] ता-हद्दे-नाज हो जाये
उम्र बे-सूद कट रही है 'फैज'
काश अफशा-ए-राज[5] हो जाये

---

१ भ्रम २ श्रद्धा से पूर्ण ३ बदनाम ४ अत्याचार ५ रहस्योद्घाटन।

हसीन -ए-खयाल से

दे दे

रसीले होट, मा'सूमाना पेशानी, हसी आंखे
कि मैं इक बार फिर रगीनियो मे गर्क हो जाऊँ
मिरी हस्ती को तेरी इक नजर आगोश मे ले ले
हमेशा के लिए इस दाम[1] मे महफूज हो जाऊँ
जिया-ए-हुस्न[2] से जुल्माते-दुनिया[3] मे न फिर आऊँ

गुजश्त हसरतो के दाग मेरे दिल से धुल जाये
मैं आनेवाले गम की फिक्र से आजाद हो जाऊँ
मिरे माजी-ओ-मुस्तकबिल[4] सरासर महव हो जाये
मुझे वह इक नजर, इक जाविदानी[5]-सी नजर दे दे

(ब्राउनिंग)

---

१ जाल २ रूप की ज्योति ३ ससार का अँधेरा ४ अतीत और भविष्य ५ अमर।

मिरी जां अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको

मिरी जां अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको
अभी तक दिल में तेरे हुस्न की कंदील रोशन है
तिरे जल्वों से बज्मे-जिंदगी जन्नत-ब-दामन[1] है
मिरी रूह अब भी तनहाई में तुझको याद करती है
हर इक तारे-नफस[2] में आरजू बेदार है अब भी
हर इक बे रंग साअ'त मुंतजिर है तेरी आमद की
निगाहें बिछ रही हैं रास्ता जरकार[3] है अब भी
मगर जाने-हजीं[4] सदमे सहेगी आखिरश कब तक ?
तिरी बे-मेहरियों[5] पे जान देगी आखिरश कब तक ?
तिरी आवाज में सोई हुई शीरीनियां आखिर
मिरे दिल की फसुर्द[6] खिल्वतों[7] में जा न पायेंगी
ये अश्कों की फरावानी[8] से धुंदलाई हुई आंखें
तिरी रा'नाइयों[9] की तमकनत[10] को भूल जायेंगी
पुकारेंगे तुझे तो लब कोई लज्जत न पायेंगे
गुलू में तेरी उल्फत के तराने सूख जायेंगे
मबादा[11] यादहा-ए-अह्दे-माजी[12] महव हो जायें
ये पारीना[13] फसाने मौजहा-ए-गम[14] में खो जायें
मिरे दिल की तहों में तेरी सूरत घुल के बह जाये
हरीमे-इश्क[15] की शम्अ'-ए-दरख्शां बुझके रह जाये
मबादा अजनबी दुनिया की जुल्मत घेर ले तुझको
मिरी जाँ अब भी अपना हुस्न वापस फेर दे मुझको

---

१ आँचल में स्वर्ग लिये हुए २ सासों का क्रम ३ सुनहले कामदार ४ दुखी प्राण ५ निष्ठुरता ६ उदास ७ एकांत ८ बाहुल्य ९ सुंदरता छटा १० आभा, तड़क भड़क ११ कहीं ऐसा न हो १२ बीते दिनों की या १३ पुराने १४ दुःख की लहरें १५ प्रेम का घर।

बा'द अज वक्त

दिल को एहसास से दो चार न कर देना था
साजे-रवावीद[1] को वेदार न कर देना था
अपने मा'सूम तबस्सुम की फरावानी को
वुसअ'ते-दीद[2] पे गुलबार[3] न कर देना था
शौके - मजबूर को बस एक झलक दिखलाकर
वाकिफे - लज्जते - तकरार[4] न कर देना था
चश्मे - मुश्ताक[5] की खामोश तमन्नाओ को
यक-ब-यक माइले - गुफ्तार[6] न कर देना था
जल्व - ए - हुस्न को मस्तूर[7] ही रहने देते
हसरते - दिल को गुनहगार न कर देना था

---

१ सोया हुआ बाजा २ दृष्टि का विस्तार ३ फूल बरसाना ४ दुबारा के सुख से परिचित ५ लालायित आँखें ६ बोलने को तैयार ७ गुप्त।

सरोदे-शबाना[1]

नीम शब, चाद, खुद-फरामोशी
महफिले-हस्त-ओ-बूद[2] वीरां है
पैकरे-इल्तिजा[3] है खामोशी
बज्मे-अजुम[4] फसुर्दः-सामा[5] है
आबशारे-सुकूत[6] जारी है
चार सू बे-खुदी सी तारी है
जिंदगी जुज्वे-रवाव[7] है गोया
सारी दुनिया सराव[8] है गोया
सो रही है घने दरख्तो पर
चाँदनी की थकी हुई आवाज
कहकशा[9] नीम-वा[10] निगाहो से
कह रही है हदीसे-शौके-नियाज[11]
साजे-दिल के खमोश तारो से
छन रहा है खुमारे-कैफ आगी[12]
आरजू, रवाव, तेरा रू-ए-हसी[13]

---

१ रात्रि सगीत २ है और था (वतमान और अतीत) की दुनिया ३ साकार प्रार्थना ४ सितारो की महफिल ५ बुझी हुई, उदास ६ निश्चलता का झरना ७ स्वप्न का हिस्सा ८ मगतृष्णा ९ आकाश गगा १० अधखुली ११ दशन-अभिलाषा की कहानी १२ मादक नशा १३ सुन्दर मुखडा।

अशआ'र

वह अह्‌दे-ग़म[1] की काहिशहा-ए-बेहासिल[2] को क्या समझे
जो उनकी मुख़्तसर रूदाद भी सब्र-आज़मा[3] समझे
यहाँ बावस्तगी, वाँ बरहमी[4], क्या जानिये क्यों है
न हम अपनी नज़र समझे, न हम उनकी अदा समझे
फ़रेबे-आरज़ू की सह्‌ल-अगारी[5] नहीं जाती
हम अपने दिल की धड़कन को तिरी आवाज़े-पा समझे
तुम्हारी हर नज़र में मुनसलिक[6] है रिश्त-ए-हस्ती
मगर ये दूर की बातें कोई नादान क्या समझे
न पूछ अह्‌दे-उल्फ़त की, बस इक ख़्वाबे-परीशाँ[7] था
न दिल को राह पर लाये, न दिल का मुद्दआ'[8] समझे

---

१ दुःख के दिन २ व्यर्थ वेदना ३ उकता देनेवाला ४ नाराज़गी ५ सुगमता की खोज ६ बँधा हुआ ७ बिखरा हुआ सपना ८ उद्देश्य, अभीष्ट।

क़तआ'त

वक्फ़े- हिरमान - ओ - यास[1] रहता है
दिल है, अक्सर उदास रहता है
तुम तो गम देके भूल जाते हो
मुझको एहसाँ का पास[2] रहता है

फ़ज़ा ए-दिल पे उदासी बिखरती जाती है
फ़सुदगी[3] है कि जाँ तक उतरती जाती है
फ़रेबे-ज़ीस्त[4] से कुदरत का मुद्दआ'[5] मा'लूम
यह होश है कि जवानी गुज़रती जाती है

---

१ [illegible] २ [illegible] ३ [illegible] ४ [illegible]
५ [illegible]

इन्तजार

गुजर रहे है शब-ओ-रोज तुम नही आती
रियाजे - जीस्त[1] है आजुद - ए - वहार[2] अभी
मिरे खयाल की दुनिया है सोगवार अभी
जो हसरते तिरे गम की कफील[3] है, प्यारी
अभी तलक मिरी तनहाइयो मे बसती है
तवील रातें अभी तक तवील हैं, प्यारी
उदास आँखे अभी इन्तजार करती हैं
बहारे - हुस्न पे पाबदी - ए - जफा कब तक ?
यह आजमाइशे - सब्रे - गुरेजपा[4] कब तक ?
कसम तुम्हारी, बहुत गम उठा चुका हूँ मैं
गलत था दा'व -ए-सब्र-ओ-शिकेब,[5] आ जाओ
करारे - खातिरे - बेताब[6] थक गया हूँ मैं

---

१ जीवन का अभ्यास २ बहार का सताया हुआ ३ बद ४ बार बार टूटनेवाले धीरज की परीक्षा ५ धैर्य ६ बेचैन हृदय की शांति ।

तहे-नजूम

तहे-नजूम[1] कही चाँदनी के दामन मे
हुजूमे-शौक[2] से इक दिल है बे-करार अब भी
खुमारे-रवाब से लबरेज अहमरी[3] आँखे
सफद रुख पे परीशाँ अ'म्बरी[4] आखे
छलक रही है जवानी हर इक बुने-मू[5] से
रवाँ हो बर्गे-गुले-तर से जैसे सैले-शमीम[6]
जिया-ए मह[7] मे दमकता है रगे पैराहन
अदा-ए-इ'ज्ज[8] से आचल उडा रही है नसीम
दराज कद की लचक से गुदाज पैदा है
अदा - ए - नाज से रगे - नियाज पैदा है
उदास आँखो मे खामोश इल्तिजाएँ है
दिले-हजी[9] मे कई जा-ब लब दुआएँ है
तहे - नजूम कही चाँदनी के दामन मे
किसी का हुस्न है मसरूफे-इतजार अभी
कही खयाल के आबादकद गुलशन मे
है एक गुल कि है नावाकिफे बहार अभी

---

१ सितारो के नीचे २ उमगो की भीड ३ लाल ४ सुगन्धित ५ रोम रोम ६ ठण्डी हवा का झोका ७ चाद की रोशनी ८ कोमलता ९ व्यथित हृदय ।

हुस्न और मौत

जो फूल सारे गुलिस्ताँ मे सबसे अच्छा हो
फरोग़-नूर[1] हो जिससे फजा-ए-रगी मे
खिजाँ के जौर-ओ-सितम[2] को न जिसने देखा हो
बहार ने जिसे खूने-जिगर से पाला हो
वह एक फूल समाता है चश्मे-गुलची मे

हजार फूलो से आबाद बागे-हस्ती है
अजल[3] की आँख फक्त एक को तरसती है
कई दिलो की उमीदो का जो सहारा हो
फजा-ए-दह्र[4] की आलूदगी[5] से बाला हो
जहाँ मे आके अभी जिसने कुछ न देखा हो

न कहते-ऐ'श-ओ-मसरत,[6] न गम की अरजानी[7]
कनारे-रहमते-हक[8] मे उसे सुलाती है
सुकूते-शब[9] मे फरिश्तो की मर्सिय ख्वानी[10]
तवाफ[11] करने को सुब्हे-बहार आती है
सबा चढाने को जन्नत के फूल लाती है

---

१ प्रकाश की वृद्धि २ अत्याचार ३ मौत ४ दुनिया की हवा लिप्त होना ६ सुख का अभाव ७ सस्ता होना ८ विधाता की कृपालु ९ रात का सन्नाटा १० मर्सिय पढना ११ परिक्रमा।

तीन मंजर

तसव्वुर[1]

शोखिया मुज्तर[2] निगाहे-दीद - ए - सरशार में
इ'शरते ख्वाबीद रंगे - गाज - ए - रुखसार में
सुर्ख होटो पर तबस्सुम की जियाएँ,[3] जिस तरह
यासमन[4] के फूल डूबे हो मये - गुल्नार में

सामना

छनती हुई नजरो से जजबात की दुनियाएँ
बेरवाबियाँ, अफसाने, महताब, तमन्नाएँ
कुछ उलझी हुई बातें, कुछ बहके हुए नग्मे
कुछ अश्क जो आखो से बे-वजह छलक जाय

रुखसत

फसुर्द[5] रुख, लबो पर इक नियाज-आमेज[6] खामोशी
तबस्सुम मुज्महिल[7] था, मरमरी हाथो मे लरजिश थी
वह कैसी बेकसी थी तेरी पुर-तमकीन आँखो मे
वह क्या दुख था तिरी सहमी हुई खामोश आहो मे

---

१ कल्पना २ मचलती हुई ३ ज्योति ४ चमेली ५ उदास ६ थर्ड
भरी ७ बुझी हुई।

सरोद

मौत अपनी, न अमल अपना, न जीना अपना
सो गया शोरिशे-गेती[1] मे करीन अपना
नाखुदा[2] दूर, हवा तेज, क़री[3] कामे-निहंग[4]
वक्त है फेंक दे लहरो मे सफीन[5] अपना
अ'से-ए-दह्र[6] के हंगामे तहे-रवाब सही
गम रख आतिशे-पैकार[6] से सीन अपना
साकिया रज न कर जाग उठेगी महफिल
और कुछ देर उठा रखते है पीना अपना
बेशकीमत है ये गमहा-ए-मुहब्बत मत भूल
जुल्मते-याम[7] को मत सौप खजीन[8] अपना

१ दुनिया के शोर २ खेवनहार ३ निकट ४ घड़ियाल का जबड़ा ५ नाव ६ युद्ध की ज्वाला ७ निराशा का अधकार ८ निधि, खजाना।

यास[1]

तरबते - दिल[2] के तार टूट गये
हैं जमी - बोस[3] राहतों के महल
मिट गये किस्स हा-ए-फिक्र-ओ-अ'मल
बज्मे - हस्ती के जाम फूट गये
छिन गया कैफे कौसर-ओ तस्नीम[4]
जहमते - गिरिय - ओ-बुका[5] बे-सूद
शिकव - ए - बस्ले - मारसा[6] बे-सूद
हो चुका खत्म रहमतों का नुजूल[7]
बद है मुद्दतों से बाबे - कुबूल[8]
बे-नियाजे - दुआ है रब्बे - करीम
बुझ गई शम्ए - आरजू-ए - जमील[9]
याद बाकी है बेकसी की दलील
इतजारे - फजूल रहने दे
राज - उल्फत निबाहनेवाले
बारे-गम से कराहनेवाले
काविशे-बे-हुसूल[10] रहने दे

---

१ निराशा २ हृदय तंत्री ३ धराशायी ४ जन्नत की नहरों का मजा ५ क्रन्दन और रुदन का कष्ट ६ अभागपन का दुखडा ७ अवतरण ८ स्वीकृति का द्वार ९ सुंदर कामना का दीपक १० निष्फल खोज ।

आज की रात

आज की रात साज़े दर्द न छेड
दुख से भरपूर दिन तमाम हुए
और कल की खबर किसे मा'लूम ?
दोश ओ-फर्दा[1] की मिट चुकी हैं हदूद
हो न हो अब सहर किसे मा'लूम ?
जिंदगी हेच[2] ! लेकिन आज की रात
एजदियत[3] है मुमकिन आज की रात
आज की रात साज़े-दर्द न छेड

अब न दुहरा फसानहा-ए-अलम[4]
अपनी किस्मत पे सोगवार न हो
फिक्रे-फर्दा[5] उतार दे दिल से
उम्रे-रफ्ता[6] पे अश्कबार[7] न हो
अहदे-गम[8] की हिकायते मत पूछ
हो चुकी सब शिकायते मत पूछ
आज की रात साज़े-दर्द न छेड

---

१ बीता हुआ और आनेवाला कल २ खुदाई, खुदा होना ३ दुःख की घनियां ४ भविष्य की चिंता ५ बीता जीवन ६ आंसू बहाना ७ दुःख दिन।

हिम्मते - इल्तिजा नहीं बाकी
जब्त का हौसला नहीं बाकी

इक तिरी दीद छिन गयी मुझसे
वरन दुनिया मे क्या नहीं बाकी

अपनी मश्के-सितम[1] से हाथ न खींच
मैं नहीं या वफा नहीं बाकी

तेरी चश्मे अलमनवाज[2] की खैर
दिल मे कोई गिला नहीं बाकी

हो चुका खत्म अ'ह्दे-हिज्र-ओ-विसाल[3]
जिंदगी मे मजा नहीं बाकी

---

१ अत्याचार का अभ्यास २ दुःख को पूछनेवाली (सहानुभूति करनेवा
आँख ३ विरह और मिलन के दिन ।

एक रहगुजर पर

वह जिसकी दीद मे लाखो मसरते[1] पिन्हाँ
वह हुस्न जिसकी तमन्ना मे जन्नते पिन्हाँ
हजार फित्ने[2] तहे-पा-ए-नाज[3] खाकनशीं
हर इक निगाह खुमारे-शबाब[4] से रंगी
शबाब, जिससे तखय्युल[5] पे बिजलियाँ बरसें
विकार[6], जिसकी रकावत[7] को शोखियाँ तरसें
अदा-ए-लग्जिशे-पा[8] पर कयामतें कुर्बां
बयाज-रुख[9] पे सहर की सबाहतें[10] कुर्बां
स्याह जुल्फो मे वारफ्त[11] नकहतो[12] का हुजूम
तवील रातो की खुवाबीद राहतो का हुजूम
वह आँख जिसके बनाव पे खालिक[13] इतराये
जबाने-शे'र को तारीफ करते शर्म आये
वह होट फैज से जिनके बहारे-लाल फरोश
बहिश्त-ओ-कौसर-ओ-तस्नीम-ओ-सलसबील[14] ब-दोश[15]
गुदाज़ जिस्म, कबा जिस पे सजके नाज करे
दराज़ कद जिसे सर्वे-सही[16] नमाज़ करे
गरज वह हुस्न जो मुहताजे-वस्फ-ओ-नाम[17] नही
वह हुस्न जिसका तसव्वुर बशर[18] का काम नही

---

१ खुशियाँ २ उपद्रव ३ सुन्दरता के पैर के नीचे ४ यौवन-मद ५ कल्पना ६ गरिमा ७ बराबरी ८ परो के काँपने का ढग ९ चेहरे का गोरा रग १० सफ़ेदी, रोशनी ११ बहती हुई १२ सुगन्ध १३ स्रष्टा १४ जन्नत और उसकी नहरें १५ कन्धे पर लिये हुए १६ सब से सीधे पेड १७ परिचय या नाम का मुहताज १८ मनुष्य।

किसी जमाने में इस राहगुज़र से गुजरा था
व सद-गुरूर-ओ-तजम्मुल[१९] इधर से गुजरा
और अब यह राहगुजर भी है दिलफरेब-ओ-हसी
है इसकी खाक में कैफे-शराब-ओ शे'र[२०]मकी
हवा में शोखी-ए रफ्तार[२२] की अदाएँ है
फजा में नर्मी-ए गुफ्तार[२३] की सदाएँ
गरज वह हुस्न अब इस जा का जुज्वे-मजर[२४] है
नियाजे-इश्क[२५] को इक सिज्द गह मयस्सर

---

१९ सैकड़ा अभिमान और रूप लेकर २० मदिरा और कवि
मादकता २१ बसा हुआ २२ चाल की चचलता २३ वाणी की कं
२४ दृश्य का अश।

शीशा का

गज़ल

चश्मे-मयगू[1] जरा इधर कर दे
दस्ते-कुदरत[2] को बे-असर कर दे
तेज है आज दर्दे-दिल साकी
तल्खी-ए-मय को तेजतर कर दे
जोशे-वहशत[3] है तिश्न काम[4] अभी
चाके-दामन को ता-जिगर कर दे
मेरी किस्मत से खेलने वाले
मुझको किस्मत से बे-खबर कर दे
लुट रही है मिरी मताए'-नियाज़[5]
काश वह इस तरफ नजर कर दे
'फैज़' तकमीले-आरजू[6] मा'लूम
हो सके तो यूं ही बसर कर दे

---

१ मद भरी आंख २ प्रकृति का हाथ ३ उन्माद की तीव्रता ४ अतृप्त विनम्र की पूजा ६ कामना की पूर्ति ।

एक मंजर

बाम-ओ-दर खामशी के बोझ से चूर
आसमानो से जू-ए-दर्द[1] रवाँ
चाँद का दुख-भरा अफसाना-ए-नूर[2]
शाहराहो की खाक मे गल्ताँ[3]
ख्वाबगाहो मे नीम-तारीकी
मुज्महिल[4] लय ख्वाबे-हस्ती[5] की
हल्के-हल्के सुरो मे नौह कुनाँ

---

१ पीडा की धारा २ ज्योति की कहानी ३ डूबा हुआ ४ नीरस ५ जीवन-वीणा।

मेरे नदीम

ख़याल-ओ-शे'र की दुनिया में जान थी जिनसे
फ़ज़ा-ए-फ़िक्र-ओ-अमल[1] अर्ग़वान[2] थी जिनसे
वह जिनके नूर से शादाब थे मह-ओ-अंजुम[3]
जुनूने-इ'श्क की हिम्मत जवान थी जिनसे
वह आरज़ूएँ कहाँ सो गयी है, मेरे नदीम[4]?
वह ना-सुबूर[5] निगाहे, वह मुतज़िर राहे
वह पासे ज़ब्त[6] से दिल में दबी हुई आहे
वह इन्तज़ार की रातें, तवील, तीर-ओ-तार[7]
वह नीम-ख़्वाब शबिस्ताँ, वह मख़मली बाँहे
कहानियाँ थी कहीं खो गयी है, मेरे नदीम!
मचल रहा है रगे-ज़िंदगी में ख़ूने-बहार
उलझ रहे है पुराने ग़मों से रूह के तार
चलो कि चलके चिरागाँ करें दयारे-हबीब[8]
है इन्तज़ार में अगली मुहब्बतों के मज़ार
मुहब्बतें जो फ़ना हो गयी है, मेरे नदीम!

---

१ आचार विचार की दुनिया २ लाल, रंगीन ३ चाँद-तारे ४ साथी ५ धैर्यहीन ६ धैर्य की चिंता ७ अँधेरी, काली ८ दोस्त का घर।

२

"दिले बफरोख्तम जाने खरीदम"[1]

—निज़ामी

१ दिल बेचता हूँ जान खरीदता हूँ ।

मुझसे पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न मांग

मुझसे पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न मांग
मैंने समझा था कि तू है तो दरख्शाँ[1] है हयात[2]
तिरा गम है तो गमे-दह्र[3] का झगडा क्या है ?
तेरी सूरत से है आलम मे बहारो को सबात[4]
तेरी आँखो के सिवा दुनिया मे रक्खा क्या है ?
तू जो मिल जाये तो तकदीर नग्[5] हो जाये
यू न था, मैंने फकत चाहा था यू हो जाये
और भी दुख हैं जमाने मे मुहब्बत के सिवा
राहतें और भी है वस्ल[6] की राहत के सिवा
अनगिनत सदियो के तारीक बहीमान[7] तिलिस्म
रेशम-ओ-अतलस-ओ-कमख्वाब मे बुनवाये हुए
जा-ब-जा बिकते हुए कूच-ओ-बाजार मे जिस्म
खाक मे लिथडे हुए, खून मे नहलाये हुए
जिस्म निकले हुए अमराज[8] के तन्नूरो से
पीप बहती हुई गलते हुए नासूरो से
लौट जाती है उधर को भी नजर क्या कीजे
अब भी दिलकश है तिरा हुस्न मगर क्या कीजे ?
और भी दुख हैं जमाने मे मुहब्बत के सिवा
राहतें और भी है वस्ल की राहत के सिवा
मुझसे पहली सी मुहब्बत मिरी महबूब न मांग !

---

१ चमकदार २ जीवन ३ दुनिया का दुःख ४ स्थिरता ५ उलट जाना बदल जाना ६ प्रणय, मिलन ७ पाशविक, बबर ८ बीमारिया।

गजल

दोनो जहान तेरी मुहब्बत मे हारके
वह जा रहा है कोई शबे-गम गुजारके
वीरॉ है मयकद, खुम-ओ-साग़र उदास है
तुम क्या गये कि रूठ गये दिन बहार के
इक फुसते-गुनाह मिली, वह भी चार दिन
देखे है हमने हौसले परवरदिगार के
दुनिया ने तेरी याद से बेगान कर दिया
तुझसे भी दिल फरेब है गम रोजगार के
भूले से मुस्करा तो दिये थे वह आज 'फज'
मत पूछ वलवले दिले नाक्द कार[1] के

---

१ अनुभवहीन हृदय।

सोच

क्यो मेरा दिल शाद नही है क्यो खामोश रहा करता हूँ ?
छोडो मेरी रामकहानी मैं जैसा भी हूँ अच्छा हूँ

मेरा दिल गमगी है तो क्या गमगी यह दुनिया है सारी
यह दुख तेरा है न मेरा हम सबकी जागीर है प्यारी

तू गर मेरी भी हो जाये दुनिया के गम यूं ही रहेंगे
पाप के फदे, जुल्म के बधन अपने कहे से कट न सकेंगे

गम हर हालत मे मुहलिक[1] है अपना हो या और किसी का
रोना धोना, जी को जलाना यू भी हमारा, यू भी हमारा

क्यो न जहा का गम अपनालें बा'द मे सब तदबीरें सोच
बा'द मे सुख के सपन देखें सपनो की ता'बीरें[2] सोचें

बे-फिकरे धन-दौलत वाले ये आखिर क्यो खुश रहते है
इनका सुख आपस मे बाँट ये भी आखिर हम जैसे है

हमने माना जग कडी है सर फूटेंगे, खून बहेगा
खून मे गम भी बह जायेंगे हम न रहे, गम भी न रहेगा

---

१ घातक २ साकार रूप।

गजल

वफा-ए-वा'द नही, वा'द-ए-दिगर भी नही
वह मुझसे रूठे तो थे, लेकिन इस कदर भी नही

बरस रही है हरीमे-हवस[1] मे दौलते-हुस्न
गदा-ए-इ'श्क[2] के कासे मे इक नजर भी नही

न जाने किसलिए उम्मीदवार बैठा हूँ
इक ऐसी राह पे जो तेरी रहगुजर भी नही

निगाहे-शौक सरे-बज्म बे-हिजाब[3] न हो
वह बे-खबर ही सही, इतने बे खबर भी नही

यह अ'हदे-तर्के मुहब्बत[4] है किस लिए आखिर
सुकूने कल्ब[5] इधर भी नही, उधर भी नही

---

१ वासना का घर २ प्रेम का भिखारी ३ निलज्ज ४ प्रेम को त्यागने का प्रण ५ हृदय की शान्ति।

रकीब से

आ कि वाबस्त[1] है उस हुस्न की यादें तुझ से
जिसने इस दिल को परीखान बना रखा था
जिसकी उल्फत मे भुला रखी थी दुनिया हमने
दह्र[2] को दह्र का अफसान बना रखा था

आशना हैं तिरे कदमो से वह राहे जिन पर
उसकी मदहोश जवानी ने इ'नायत की है
कारवाँ गुजरे है जिनसे उसी रा'नाई[3] के
जिसकी इन आँखो ने वे-सूद[4] इ'बादत[5] की है

तुझसे खेली हैं वह महबूब हवाएँ जिनमे
उसके मलबूस[6] की अफसुद[7] महक बाकी है
तुझ पे भी बरसा है उस बाम से महताब का नूर
जिसमे बीती हुई रातो की कसक बाकी है

तूने देखी है वह पेशानी[8], वह रुखसार[9], वह होट
जिंदगी जिनके तसव्वुर[10] मे लुटा दी हमने
तुझ पे उट्ठी हैं वह खोई हुई साहिर[11] आखें
तुझको मा'लूम है क्यो उ'म्र गवाँ दी हमने

---

१ जुडी हुई २ दुनिया ३ छटा ४ यथ ५ उपासना, पूजा ६ वस्त्र ७ उदास ८ माथा ९ गाल १० कल्पना ११ जादूगर।

हम पे मुश्तरिक[12] हैं एहसान गमे-उल्फत के
इतने एहसान कि गिनवाऊँ तो गिनवा न सकू
हमने इस इ'श्क मे क्या खोया है क्या सीखा है
जुज[13] तिरे और को समझाऊँ तो समझा न सकू

आ'जिज़ी सीखी, गरीबो की हिमायत सीखी
यास-ओ हिरमाँ[14] के, दुख-दद के मा'नी सीखे
ज़ेरदस्तो[15] के मसाइब[16] को समझना सीखा
सर्द आहो के, रुखे-जद[17] के मा'नी सीखे

जब कही बैठ के रोते है वह बेकस जिनके
अश्क आँखो मे बिलकते हुए सो जाते हैं
नातवानो[18] के निवालो पे झपटते है उकाब[19]
बाज तोले हुए मँडलाते हुए आते है

जब कभी बिकता है बाज़ार मे मजदूर का गोश्त
शाहराहो पे गरीबो का लहू बहता है
आग सी सीने मे रह-रहके उबलती है न पूछ
अपने दिल पर मुझे काबू ही नही रहता है

---

१२ समान सम्मिलित १३ अतिरिक्त १४ निराशा १५ कमजो
१६ मुसीबतें १७ पीला चेहरा १८ कमजोरो १९ गिद्ध।

तनहाई

फिर कोई आया दिले-ज़ार[1] नही कोई नहीं
राहरो[1] होगा, कही और चला जायेगा
ढल चुकी रात, बिखरने लगा तारो का गुबार[2]
लडखडाने लगे ऐवानो[3] मे ख्वाबीद चिराग़
सो गई रास्त तक-तक के हर इक राहगुज़ार
अजनबी खाक ने धुंदला दिये कदमो के सुराग़
गुल करो शम्एं, बढा दो मय-ओ-मीना-ओ-अयाग़[4]
अपने बे-ख्वाब किवाडो को मुकफ्फल कर लो
अब यहाँ कोई नही, कोई नही आयेगा!

---

१ पथिक २ धूल ३ महलो ४ शराब, सुराही और प्याला।

राज़-उल्फत छुपा के देख लिया
दिल बहुत कुछ जलाके देख लिया

और क्या देखने को बाकी है
आप से दिल लगाके देख लिया

आस उस दर से टूटती ही नहीं
जाके देखा, न जाके देख लिया

वह मिरे होके भी मिरे न हुए
उनको अपना बनाके देख लिया

आज उनकी नज़र मे कुछ हमने
सबकी नज़रें बचाके देख लिया

'फैज़' तकमीले-ग़म[1] भी हो न सकी
इ'श्क को आज़माके देख लिया

---

१ दुःख की पूर्ति।

ग़ज़ल

कुछ दिन से इंतज़ारे-सवाले-दिगर[1] में है
वह मुज़्महिल[2] हया जो किसी की नज़र में है

सीखी यहीं मिरे दिले-काफ़िर ने बंदगी
रब्बे-करीम है तो तिरी रहगुज़र में है

माज़ी में जो मज़ा मिरी शाम-ओ-सहर में था
अब वह फ़क़त तसव्वुरे-शाम-ओ-सहर में है

क्या जाने किसको किससे है अब दाद की तलब
वह ग़म जो मेरे दिल में है तेरी नज़र में है

---

१ दूसरे सवाल का प्रतीक्षा २ बुझी हुई, क्षीण।

गजल

फिर हरीफे-बहार[1] हो बैठे
जाने किस-किसको आज रो बैठे
थी मगर इतनी रायगाँ[2] भी न थी
आज कुछ जिंदगी से खो बैठे
तेरे दर तक पहुँच के लौट आये
इ'श्क की आबरू डुबो बैठे
सारी दुनिया से दूर हो जाये
जो जरा तेरे पास हो बैठे
न गयी तेरी बे-रुखी न गयी
हम तिरी आरजू भी खो बैठे
'फैज' होता रहे जो होना है
शे'र लिखते रहा करो बैठे

---

१ बहार के दुश्मन २ व्यर्थ।

चद रोज़ और मिरी जान !

चद रोज़ और मिरी जान ! फक्त चद ही रोज़
जुल्म की छाँव मे दम लेने पे मजबूर हैं हम
और कुछ देर सितम सह लें, तड़प लें, रो लें
अपने अजदाद[1] की मीरास[2] है मा'ज़ूर[3] हैं हम
जिस्म पर कैद है, जज्बात पे ज़जीर हैं
फिक्र महबूस[4] है, गुफ्तार प ता ज़ीरें[5] हैं
अपनी हिम्मत है कि हम फिर भी जिये जाते हैं
ज़िदगी क्या किसी मुफलिस की क़बा है जिसमे
हर घडी दद के पैवद लगे जाते हैं
लेकिन अब जुल्म की मी'याद के दिन थोड़े हैं
इक ज़रा सब्र, कि फरियाद के दिन थोड़े हैं
अ'स-ए-दह्र[6] की झुलसी हुई वीरानी मे
हमको रहना है तो यू ही तो नहीं रहना है
अजनबी हाथो का बे-नाम गरांबार[7] सितम
आज सहना है हमेशा तो नहीं सहना है
यह तिरे हुस्न से लिपटी हुई आलाम[8] की गद
अपनी दो रोज़ जवानी की शिकस्तो का शुमार
चाँदनी रातो का बेकार दहकता हुआ दद
दिल की बे-सूद तड़प, जिस्म की मायूस पुकार
चद रोज़ और मिरी जान ! फक्त चद ही रोज़

---

१ पूर्वज २ देन, परंपरा ३ लाचार ४ बंदी ५ प्रतिबंध ६ समय का फैलाव ७ भारी, बोझिल ८ दुख।

मर्गे-सोज़े मुहब्बत

आओ कि मर्गे-सोज़े-मुहब्बत[1] मनायें हम
आओ कि हुस्ने-माह[2] से दिल को जलायें हम
खुश हो फिराके-कामत-ओ-रुखसारे-यार[3] से
सर्व-ओ-गुल-ओ-समन से नज़र को सतायें हम
वीरानी-ए-हयात[4] को वीरानतर करें
ले नासह[5] आज तेरा कहा मान जाय हम
फिर ओट लेके दामने-अब्रे-बहार[6] की
दिल को मनायें हम, कभी आँसू बहायें हम
सुलझायें बे-दिली से ये उलझे हुए सवाल
वां जायें या न जायें, न जायें कि जायें हम
फिर दिल को पासे-जब्त[7] की तल्कीन[8] कर चुकें
और इम्तहाने-जब्त से फिर जी चुरायें हम
आओ कि आज खत्म हुई दास्ताने-इ'श्क
अब खत्मे-आशिकी के फसाने सुनाये हम

---

१ प्रेम की जलन का अंत २ ३ प्रेमिका के मुख और गालों की लाली ४ जीवन की नीरसता ५ उपदेशक ६ बहार के बादल का आँचल ७ धैर्य चिंता ८ नसीहत ।

कुत्ते

ये गलियो के आवार बेकार कुत्ते
कि बख्शा गया जिनको जोके-गदाई[1]
ज़माने की फटकार सरमाय[2] इनका
जहाँ भर की धुतकार इनकी कमाई

न आराम शब को, न राहत सवेरे
गलाज़त मे घर, नालियो मे बसेरे
जो विगडें तो इक दूसरे से लडा दो
ज़रा एक रोटी का टुकडा दिखा दो
ये हर एक की ठोकरे खाने वाले
ये कानून से उकताके मर जाने वाले

यह मज़लूम[3] मख़लूक़[4] गर सर उठाये
तो इसान सब सरकशी[5] भूल जाये
ये चाहे तो दुनिया को अपना बना लें
ये आकाओ[6] की हड्डियां तक चबा लें

कोई इनको एहसासे-जिल्लत[7] दिला दे
कोई इनकी सोई हुई दुम हिला दे

---

१ भीख माँगने की रुचि २ पूंजी ३ दलित-पीडित ४ प्राणी ५ घमड ६ मालिको ७ अपमान का आभास ।

बोल

बोल, कि लब आज़ाद हैं तेरे
बोल, ज़बाँ अब तक तेरी है
तेरा सुतवाँ जिस्म है तेरा
बोल, कि जाँ अब तक तेरी है
देख कि आहनगर[1] की दुकाँ में
तुंद है शोले, सुर्ख है आहन
खुलने लगे कुफ्लों के दहाने
फैला हर इक ज़ंजीर का दामन
बोल, यह थोड़ा वक़्त बहुत है
जिस्म-ओ-ज़बाँ की मौत से पहले
बोल, कि सच ज़िंदा है अब तक
बोल, जो कुछ कहना है कह ले

---

१ लोहार।

शीशों का मसी

गजल

फिर लौटा है खुरशीदे-जहाँताब[1] सफर से
फिर नूरे-सहर[2] दस्त-ओ-गरेबाँ[3] है सहर से

फिर आग भडकने लगी है साजे-तरब[4] मे
फिर शो'ले लपकने लगे हर दीद-ए-तर[5] से

फिर निकला है दिवान कोई फूक के घर को
कुछ कहती है हर राह हर इक राहगुजर से

वह रग है इमसाल गुलिस्ताँ की फजा का
ओझल हुई दीवारे-कफस हद्दे-नजर से

सागर तो खनकते है शराव आये न आये
वादल तो गरजते है घटा वरसे न वरसे

पापोश[6] की क्या फिक्र है, दस्तार सँभालो
पायाव[7] है जो मौज गुजर जायेगी सर से

---

१ दुनिया को रोशनी देनेवाला सूरज २ सुवह की रोशनी ३ उलझी हुई (गरेवा हाथ मे पकडे हुए) ४ मस्ती का साज ५ भीगी आंख ६ जूता पैर तक।

इकबाल

आया हमारे देस मे इक खुशनवा[1] फकीर
आया और अपनी धुन मे गज़लस्वाँ गुजर गया
सुनसान राहे खल्क[2] से आवाद हो गईं
वीरान मयकदो का नसीव सँवर गया
थी चद ही निगाहे जो उस तक पहुँच सकी
पर उसका गीत सबके दिलो मे उतर गया

अब दूर जा चुका है वह शाहे गदानुमा[3]
और फिर से अपने देस की राहें उदास हैं
चद इक को याद है कोई उसकी अदा-ए खास
दो इक निगाहे चद अजीज़ो के पास हैं
पर उसका गीत सबके दिलो मे मुकीम[4] है
और उसकी लय से सैकडो लज्जतशनास हैं

इस गीत के तमाम महासिन[5] हैं ला-ज़वाल
इसका वफूर,[6] इसका खरोश,[7] इसका सोज-ओ-साज
यह गीत मिस्ले शो'ल -ए-जव्वाल तुद-ओ-तेज़
इसकी लपक से बादे-फना का जिगर गुदाज
जैसे चिराग वहशते सरसर से बे-खतर
या शम्ए-बज्म सुब्ह की आमद से बे-खवर

---

१ मधुर भाषी २ प्राणियो ३ रक जसा राजा ४ स्थापित
५ सुदरताए ६ प्रचुरता ७ उत्साह।

गज़ल

कई वार इसका दामन भर दिया हुस्ने-दो आलम[1] से
मगर दिल है कि उसकी खान वीरानी नही जाती

कई वार इसकी खातिर जर्रे जर्रे का जिगर चीरा
मगर यह चश्मे-हैराँ, जिसकी हैरानी नही जाती

नही जाती मताए'-ला'ल-ओ-गौहर[2] की गराँयावी[3]
मताए'-गैरत-ओ-ईमाँ[4] की अरजानी[5] नही जाती

मिरी चश्मे-तन आसाँ[6] को वसीरत[7] मिल गई जब से
बहुत जानी हुई सूरत भी पहचानी नही जाती

सरे-खुसरव[8] से नाजे-कजकुलाही[9] छिन भी जाता है
कुलाहे-खुसरवी[10] से बू-ए-सुल्तानी नही जाती

व-जुज दीवानगी वाँ और चारा ही कहो क्या है?
जहाँ अक्ल-ओ-खिरद[11] की एक भी मानी नही जाती

---

१ लोक परलोक की सुंदरता २ हीरे मोती की दौलत ३ महँगापन ४ स्वाभिमान और सच्चाई की दौलत ५ सस्तापन ६ आलसी, निकम्मा ७ ज्ञान चक्ष, देखने की शक्ति ८ बादशाह खुसरो का सर ९ राजत्व का गौरव १० खुसरो का ताज ११ समझ-बूझ।

मौजूए' सुख़न

गुल हुई जाती है अफ्सुद सुलगती हुई शाम
धुलके निकलेगी अभी चश्म-ए-महताब से रात
और—मुश्ताक[1] निगाहों की सुनी जायेगी
और—उन हाथों से मस[2] होंगे ये तरसे हुए हाथ
उनका आँचल है, कि रुखसार, कि पैराहन[3] है
कुछ तो है जिससे हुई जाती है चिलमन रंगी
जाने उस जुल्फ की मौहूम[4] घनी छाँव में
टिमटिमाता है वह आवेज[5] अभी तक कि नहीं ?

आज फिर हुस्ने-दिलआरा[6] की वही धज होगी
वही रुखसार, वही काजल की लकीर
रंगे-रुखसार पे हल्का सा वह गाजे का गुबार
संदली हाथ पे धुंधली सी हिना की तहरीर[7]

अपने अफकार[8] की, अशआ'र की दुनिया है यही
जाने मज़मूं[9] है यही, शाहिदे-मा'नी[10] है यही

आज तक सुख-औ-सियह सदियों के साये के तले
आदम-औ-हव्वा की औलाद पे क्या गुजरी है ?
मौत और जीस्त की रोजान सफआराई[11] में
हम पे क्या गुज़रेगी, अजदाद[12] पे क्या गुजरी है ?

---

१ उत्सुक, लालायित २ स्पर्श ३ वस्त्र ४ हल्की, धुंधली ५ [illegible] का कुंडल ६ मनमोहक रूप ७ रेखाएँ, लिखाई ८ विचार ९ विषय सार-तत्त्व १० अर्थ की सुंदरता ११ मोर्चेबन्दी १२ पूर्वज।

इन दमकते हुए शहरो की फरावाँ[13] मखलूक
क्यो फकत मरने की हसरत मे जिया करती है ?
ये हमी सेत, फटा पडना है जोबन जिनका
किसलिए इनमे फकत भूख उगा करती है

यह हर इक सिम्त पुर-असरार[14] कडी दीवारें
जल बुझे जिनमे हजारो की जवानी के चिराग
यह हर इक गाम पे उन ख्वाबो की मकतलगाहे[15]
जिनके परतो[16] से चिराग़ाँ हैं हजारो के दिमाग
ये भी है ऐसे कई और भी मजमू होगे
लेकिन उस शोख के आहिस्त से खुलते हुए होट
हाय उस जिस्म के कमबख्त दिलआवेज खुतूत
आप ही कहिये कही ऐसे भी सफ्से[17] होगे
अपना मौजूए'-सुखन इनके सिवा और नही
तब्ए'-शायर[18] का वतन इनके सिवा और नही

---

१३ बहुसख्यक १४ रहस्यमय १५ वधिवेदी १६ परछाईं
१७ जादू १८ कवि स्वभाव ।

हम लोग

दिल के ऐवाँ मे लिये गुलशुद[1] शम्ओ की कतार
नूरे-खुरशीद[2] से सहमे हुए उकताये हुए
हुस्ने-महबूब के सय्याल[3] तसव्वुर की तरह
अपनी तारीकी को भीचे हुए, लिपटाये हुए

गायते-सूद-ओ जिया[4], सूरते-आगाज़-ओ-मआल[5]
वही बे-सूद तजस्सुस[6] वही बेकार सवाल
मुज्महिल साअ'ते-इमरोज[7] की बे-रंगी से
यादे-माजी[8] से गमी[9], दहशते-फर्दा[10] से निढाल
तश्ना[11] अफकार जो तस्कीन नही पाते हैं
सोख्ता[12] अश्क जो आँखो मे नही आते हैं
इक कडा दद कि जो गीत मे ढलता ही नही
दिल के तारीक शिगाफो[13] से निकलता ही नही
और इक उलझी हुई मौहूम सी दरमा[14] की तलाश
दस्त-ओ जिदाँ[15] की हवस, चाके-गरीबा की तलाश

---

१ बुझी हुई २ सूरज की रोशनी ३ बहती हुई ४ लाभ-हानि का कारण ५ आदि और अत का स्वरूप ६ जिज्ञासा ७ वर्तमान काल ८ अतीत की याद ९ गमगीन १० भविष्य का भय ११ प्यासे १२ सूखे हुए १३ दरारो १४ सान्त्वना १५ जगत और बदीगृह।

शाहराह

एक अफ़सुद शाहराह है दराज़[1]
दूर उफ़क पर नज़र जमाये हुए
सर्द मिट्टी पे अपने सीने के
सुमगी[2] हुस्न को बिछाये हुए
जिस तरह कोई ग़मज़द औरत
अपने वीरांकदे[3] मे महवे-ख़याल
वस्ले-महबूब के तमव्वुर मे
मू-ब-मू[4] चूर, अ'ज़ो-अ'ज़ो[5] निढाल

---

१ लेटी हुई, सबी २ सुमई ३ निजन एकांत उजडा पर ४ रोम-रोम ५ अग अग।

सियासी लीडर के नाम

सालहा-साल ये बे-आसरा, जकडे हुए हात
रात के सरत-ओ सियह सीने मे पैवस्त रहे
जिस तरह तिनका समदर से हो सरगर्मे सितेज[1]
जिस तरह तीतरी कुहसार[2] पे यलगार[3] करे
और अब रात के सगीन-ओ-सियह सीने मे
इतने घाव है कि जिस सिम्त नजर जाती है
जा ब जा नूर ने इक जाल सा बुन रक्खा है
दूर से सुब्ह की धडकन की सदा आती है
तेरा सरमाय, तिरी आस यही हात तो हैं
और कुछ है भी तिरे पास ? यही हात तो हैं
तुझको मजूर नही गल्ब-ए-जुल्मत[4] लेकिन
तुझको मजूर है ये हाथ कलम हो जाये
और मशरिक[5] की कमीगह[6] मे धडकता हुआ दिन
रात की आहनी मय्यत[7] के तले दब जाये !

---

१ समपरत २ पहाड ३ हमला ४ अंधेरे का प्रभुत्व ५ पूरब ६ शिव की ताक मे छिपकर बैठने की जगह ७ लाश ।

ऐ दिले-बेताब, ठहर

तीरगी[1] है कि उमडती ही चली आती है
शब की रग-रग से लहू फूट रहा हो जैसे
चल रही है कुछ इस अदाज से नब्जे-हस्ती
दोनो आलम का नशा टूट रहा हो जसे

रात का गम लहू और भी बह जाने दो
यही तारीकी तो है गाज-ए-रुखसारे-सहर[2]
सुब्ह होने ही को है, ऐ दिले-बेताब, ठहर

अभी जजीर छनकती है पसे पर्द-ए-साज[3]
मुतलक-उल-हुक्म[4] है शीराज-ए-असबाब[5] अभी
सागरे-नाब[6] मे आँसू भी ढलक जाते हैं
लग्जिशे-पा[7] मे है पाबदी-ए-आदाब[8] अभी

अपने दीवानो को दीवान तो बन लेने दो
अपने मयखानो को मयखान तो बन लेने दो
जल्द यह सतवते-असबाब[9] भी उठ जायेगी
यह गराँबारी-ए-आदाब[10] भी उठ जायेगी
स्वाह जजीर छनकती है, छनकती ही रहे

---

१ अँधेरा २ प्रात काल के गालों की लाली ३ साज के पर्दे के पीछे ४ निरकुश ५ कारणो का क्रम ६ शराब का प्याला ७ पैरों की लडखडाहट ८ शिष्टता या व्यवस्था का प्रतिबध ९ कारणा की सत्ता १० व्यवस्था का बोध।

मिरे हमदम, मिरे दोस्त !

गर मुझे इसका यकी हो, मिरे हमदम, मिरे दोस्त !
गर मुझे इसका यकी हो कि तेरे दिल की थकन
तेरी आँखो की उदासी, तेरे सीने की जलन
मेरी दिलजोई, मिरे प्यार से मिट जायेगी
गर मिरा हर्फ़े-तसल्ली वह दवा हो जिनसे
जी उठे फिर तिरा उजडा हुआ बे-नूर दिमाग़
तेरी पेशानी से धुल जायें ये तज़लील[1] के दाग
तेरी मदक़ूक[2] जवानी को शफा हो जाये
गर मुझे इसका यकी हो, मिरे हमदम, मिरे दोस्त !

रोज़-ओ-शब, शाम-ओ-सहर, मैं तुझे बहलाता रहूँ
मैं तुझे गीत सुनाता रहूँ हल्के, शीरीं
आबशारो के, बहारो के, चमनज़ारो के गीत
आमदे-सुब्ह के, महताब के, सय्यारो[3] के गीत

तुझसे मैं हुस्न-ओ-मुहब्बत की हिकायात[4] कहूँ
कैसे मगरूर हसीनाओ के बर्फ़ाब[5] से जिस्म
गर्म हाथो की हरारत मे पिघल जाते हैं
कैसे इक चेहरे के ठहरे हुए मानूस[6] नुक़ूश
देखते-देखते यकलख्त बदल जाते हैं
किस तरह आ'रिज़े-महबूब का शफ्फाफ बिल्लूर[7]
यकबयक बाद-ए-अहमर[8] से दहक जाता है

---

१ अपमान २ क्षयग्रस्त ३ सितारो ४ कहानियां ५ ब
६ परिचित ७ सुरा-पात्र ८ लाल रग की शराब ।

शीशो का मसी

कैसे झुकती है सरे-शाख से खुद बर्गे-गुलाब[९]
किस तरह रात का ऐवान[१०] महक जाता है
यूं ही गाता रहूँ, गाता रहूँ, तेरी खातिर
गीत बुनता रहूँ, बैठा रहूँ, तेरी खातिर

पर मिरे गीत तिरे दुख का मदावा[११] ही नहीं
नग्म-ए-जर्राह नहीं, मूनिस-ओ-गमख्वार[१२] सही
गीत नश्तर तो नहीं, मरहमे-आजार[१३] सही
तेरे आजार का चार नहीं नश्तर के सिवा
और यह सफ्फाक[१४] मसीहा मिरे कब्जे मे नहीं
इस जहाँ के किसी जी-रूह[१५] के कब्जे मे नहीं
हाँ मगर तेरे सिवा, तेरे सिवा, तेरे सिवा

---

९ गुलाब की पखडी १० महल ११ इलाज १२ दोस्त और दु ख बँटाने वाला १३ कष्ट को कम करनेवाला मरहम १४ निमम १५ प्राणी, जिसके रूह हो।

३

दस्ते - सबा

मताए'-लौह-ओ-कलम[1] छिन गयी तो क्या गम है
कि खूने-दिल मे डुबो ली हैं उँगलियाँ मैंने
जबाँ पे मुह्र लगी है तो क्या, कि रख दी है
हर एक हल्क - ए - जजीर मे जबाँ मैंने

---

१ क़लम और तख्ती की पूँजी ।

सुब्हे-आजादी

(अगस्त '४७)

यह दाग दाग उजाला, यह शबगजीद[1] सहर
वह इंतजार था जिसका, यह वह सहर तो नहीं
यह वह सहर तो नहीं जिसकी आरजू लेकर
चले थे यार कि मिल जायेगी कहीं न कहीं
फलक के दश्त में तारों की आखिरी मंजिल
कहीं तो होगा शबे-सुस्तमौज का साहिल
कहीं तो जाके रुकेगा सफीन-ए-गमे-दिल
जवाँ लहू की पुर-असरार[2] शाहराहों से
चले जो यार तो दामन पे कितने हाथ पड़े
दयारे-हुस्न की बे-सब्र खवाबगाहों से
पुकारती रहीं बाँहें, बदन बुलाते रहे
बहुत अजीज थी लेकिन रुखे-सहर की लगन
बहुत करीब[3] था हसीनाने-नूर का दामन
सुबुक-सुबुक थी तमन्ना, दबी-दबी थी थकन

सुना है हो भी चुका है फिराके-जुल्मत-ओ-नूर[4]
सुना है हो भी चुका है विसाले-मंजिल-ओ-गाम[5]
बदल चुका है बहुत अहले-दर्द का दस्तूर
निशाते-वस्ल हलाल व अजाबे-हिज्र[6] हराम
जिगर की आग, नजर की उमंग, दिल की जलन
किसी पे चार-ए-हिज्राँ[7] का कुछ असर ही नहीं

---

१ रात की डसी हुई २ रहस्यमय ३ निकट ४ अँधेरे और रोशनी का अलगाव ५ मंजिल और कदम का मिलन ६ विरह की मुसीबत। ७ विरह का समाधान

गज़ल

कभी-कभी याद मे उभरते है नक्शे-माज़ी मिटे मिटे से
वह आज माइश दिल-ओ नजर की, वह कुरबतें सी, वह फासले से

कभी-कभी आरजू के सहरा मे आके रुकते हैं काफिले से
वह सारी बातें लगाव की सी, वह सारे उनवा[1] विसाल के से

निगाह-ओ-दिल को करार कैसा, निशात-ओ-गम[2] मे कमी कहाँ की
वह जब मिले है तो उनसे हर बार की है उल्फत नये सिरे से

बहुत गराँ है यह ऐ'शे-तनहा, कही सुबुकतर[3], कही गवारा
वह दर्दे-पिन्हाँ कि सारी दुनिया रफीक[4] थी, जिसके वास्ते से

तुम्ही कहो रिंद-ओ-मुहतसिब[5] मे है आज शब कौन फर्क ऐसा
यह आके बैठे है मयकदे मे, वह उठके आये है मयकदे से

---

१ शीर्षक २ उल्लास और वेदना ३ कोमलतर ४ साथी
५ पीनेवाला और शराब पीने से रोकनेवाला।

सुब्हे-आज़ादी

(अगस्त '४७)

यह दाग-दाग उजाला, यह शबगज़ीद[1] सहर
वह इंतज़ार था जिसका, यह वह सहर तो नहीं
यह वह सहर तो नहीं जिसकी आरज़ू लेकर
चले थे यार कि मिल जायेगी कहीं न कहीं
फलक के दश्त में तारों की आख़िरी मंज़िल
कहीं तो होगा शबे-सुस्तमौज का साहिल
कहीं तो जाके रुकेगा सफ़ीन-ए-ग़मे-दिल
जवाँ लहू की पुर-असरार[2] शाहराहों से
चले जो यार तो दामन पे कितने हाथ पड़े
दयारे-हुस्न की बे-सब्र ख़्वाबगाहों से
पुकारती रहीं बाहें, बदन बुलाते रहे
बहुत अज़ीज़ थी लेकिन रुख़े-सहर की लगन
बहुत क़रीब[3] था हसीनान-ए-नूर का दामन
सुबुक-सुबुक थी तमन्ना, दबी-दबी थी थकन

सुना है हो भी चुका है फ़िराके-ज़ुल्मत-ओ-नूर[4]
सुना है हो भी चुका है विसाले-मंज़िल-ओ-गाम[5]
बदल चुका है बहुत अह्ले-दर्द का दस्तूर
निशाते-वस्ल हलाल व अज़ाबे-हिज्र[6] हराम
जिगर की आग, नज़र की उमंग, दिल की जलन
किसी पे चारए-हिज्राँ[7] का कुछ असर ही नहीं

---

१ रात की डसी हुई २ रहस्यमय ३ निकट ४ अँधेरे और रोशनी का अलगाव ५ मंज़िल और क़दम का मिलन ६ विरह की मुसीबत। ७ विरह का समाधान

कहाँ से आई निगारे-सबा[८], किधर को गई
अभी चिरागे-सरे-रह को कुछ खबर ही नहीं

अभी गरानी-ए-शब में कमी नहीं आई
नजाते-दीद-ओ-दिल[९] की घडी नहीं आई
चले चलो कि वह मंजिल अभी नहीं आई

---

८ प्रात काल की सुखद हवा की सुंदरी मुक्ति।

९ आंख और दिल

लौह-ओ-कलम

हम परवरिदे-लौह - ओ-कलम करते रहेंगे
जो दिल पे गुज़रती है रकम करते रहेंगे
असबाबे - ग़मे - इश्क बहम[1] करते रहेंगे
वीरानी - ए - दौराँ पे करम करते रहेंगे
हा, तल्खी-ए-अय्याम[2] अभी और बढ़गी
हाँ, अह्‌ले-सितम मश्के-सितम करते रहेंगे
मजूर यह तल्खी, यह सितम हमको गवारा
दम है तो मदावा-ए-अलम[3] करते रहेंगे
मयखान सलामत है तो हम सुर्खी-ए-मय से
तज़ईने - दर - ओ - बामे - हरम[4] करते रहेंगे
बाकी है लहू दिल मे तो हर अश्क से पैदा
रंगे - लब - ओ - रुखसारे - सनम करते रहेंगे
इक तर्ज़े - तगाफुल है सो वह उनको मुबारक
इक अर्ज़े - तमन्ना है सो हम करते रहेंगे

---

१ जुटाना २ दिनो की कटुता ३ दुःख का इलाज ४ मस्जिद के दर और छत की सजावट।

न पूछ जब मे तिरा इतजार कितना है
कि जिन दिनो से मुझे तेरा इतज़ार नही
तिरा ही अ'क्स है उन अजनबी वहारो मे
जो तेरे लब, तिरे वाज़, तेरा कनार[1] नही

सबा के हात मे नर्मी है उनके हातो की
ठहर-ठहर के यह होता है आज दिल को गुमाँ
वह हाथ ढूढ रहे है बिसाते-महफिल मे
कि दिल के दाग कहा है, नशिस्ते-दद[2] कहाँ

---

१ गा॰ २ पीडा का स्थान ।

दो आवाजें

पहली आवाज

अब सई[1] का इमकाँ और नहीं, परवाज[2] का मजमूं हो भी चुका
तारों पे कमंदें फेंक चुके, महताब पे शबख़ूं[3] हो भी चुका
अब और किसी फर्दा[4] के लिए इन आखों मे क्या पैमा[5] कीजे
किस ख्वाब के झूठे अफसूं[6] मे तस्कीने-दिले-नादाँ कीजे
जीने के फसाने रहने दो, अब इनमे उलझकर क्या लेंगे
इक मौत का धंदा बाकी है, जब चाहेंगे निबटा लेंगे
यह तेरा कफन, वह मेरा कफन, यह मेरी लहद, वह तेरी है

दूसरी आवाज

हस्ती की मताए'-बेपायाँ,
जागीर तिरी है न मेरी
इस बज्म मे अपनी मिशअ'ले-दिल
बिस्मिल है तो क्या दरख्शाँ है तो क्या
यह बज्म चिरागा रहती है,
इक ताक अगर वीरा है तो क्या
अफसुद है गर अय्याम तिरे,
बदला नही मस्लके शाम-ओ-सहर[7]
ठहरे नही मौसमे गुल के कदम,
कायम है जमाले-शम्स-ओ-कमर[8]
आबाद है वादी ए-काकुल-ओ-लब[9],
शादाब-ओ हसी गुलगश्ते-नजर[10]

---

१ कोशिश २ उड़ान ३ रात के समय हमला ४ भविष्य ५ वादा ६ जादू ७ शाम और सुब्ह का रास्ता (क्रम) ८ सूरज और चाँद की सुंदरता ९ लटो और होटो की घाटी १० नजर का बाग में टहलना

मक्सूम[11] है लज्जते दर्दे-जिगर,
मौजूद है ने'मते-दीद-ए-तर
इस दीद-ए-तर का शुक्र करो,
इस जौके-नजर का शुक्र करो
इस शाम-ओ सहर का शुक्र करो,
इस शम्स-ओ-कमर का शुक्र करो

पहली आवाज

—गर है यही मस्लके-शम्स-ओ कमर,
इन शम्स-ओ-कमर का क्या होगा
रा'नाई-ए-शब का क्या होगा, अदाजे-सहर का क्या होगा
जब खूने-जिगर बर्फाब बना, जब आँखे आहनपोश हुइ
इस दीद-ए-तर का क्या होगा, इस जौके नजर का क्या होगा
जब शे'र के खेमे राख हुए, नग्मो की तनाबें टूट गयी
ये साज कहाँ सर फोडेगे, इस किल्के-गुहर[12] का क्या होगा
जब कुजे कफस मस्कन[13] ठहरा,
और जेब-ओ गरीवाँ तौक-आ-रसन[14]
आये कि न आये मौसमे गुल, इस दर्दे-जिगर का क्या होगा

दूसरी आवाज

ये हाथ सलामत है जब तक,
इस खू मे हरारत है जब तक
इस दिल मे सदाकत[15] है जब तक,
इस नुत्क[16] मे ताकत है जब तक
इन तौक-ओ-सलासिल का हम तुम
सिखलायेंगे शोरिशे-बरबत-ओ-नै[17]
वह शोरिश जिसके आगे जुबू[18],
हगाम-ए-मतवले-कैसर ओ-क[19]

---

११ बँटी हुई १२ मोती बिखरने वाला कलम १३ रहने की जगह १४ गले का फदा १५ सच्चाई १६ वाणी १७ न=बाँसुरी १८ तुच्छ १९ रोम के बादशाह कैसर और ईरान के कैसरो के नक्कारखाने का शोर।

आजाद हैं अपने फिक्र-ओ-अमल,
भरपूर खजीन[२०] हिम्मत
इक उम्र है अपनी हर साअ'त,
इमरोज़ है अपना हर फर्द
यह शाम-ओ सहर, यह शम्स-ओ-कमर,
ये अख्तर-ओ-कौकब[२१] अपने है
यह लौह-ओ-कलम, यह तब्ल-ओ-अ'लम[२२],
यह माल-ओ-हशम[२३] सब अपने है

---

२० भंडार २१ सितारे २२ डंका और झंडा २३ सम्पत्ति और फौज चाकर।

दामने-यूसुफ

जान बेचने को आये तो बे-दाम बेच दी
ऐ अह्‌ले-मिस्र, वज्ए'-तकल्लुफ[1] तो देखिये
इसाफ है कि हुक्मे-अ'कूबत[2] मे पेशतर
इक बार सू-ए-दामने-यूसुफ तो देखिये

फिर हश्र के सामाँ हुए ऐवाने-हवस मे
बैठे हैं जुल-अद्‌ल[3], गुनहगार खडे है
हाँ, जुर्मे-वफा देखिये किस-किस पे है साबित
वह सारे खताकार सरे-दार[4] खडे है

---

१ तकल्लुफ का अन्दाज २ यातना का हुक्म।
३ इसाफ करने वाले ४ फाँसी के तख्ते पर।

तौक-ओ-दार का मौसम

रविश-रविश है वही इंतजार का मौसम
नहीं है कोई भी मौसम, बहार का मौसम
गराँ है दिल पे गमे-रोजगार का मौसम
है आजमाइशे - हुस्ने - निगार[1] का मौसम
खुशा[2] नज्जारे - ए - रुखसारे-यार की साअ'त
खुशा करारे - दिले - बेकरार[3] का मौसम
हदीसे-बादे-ओ-साकी[3] नहीं तो किस मसरफ
खिरामे - अब्रे - सरे - कोहसार[4] का मौसम
नसीब सुहबते-यारा नहीं तो क्या कीजे
यह रक्से-साय-ए-सर्व-ओ-चिनार का मौसम
ये दिल के दाग तो दुखते थे यूँ भी पर कम-कम
कुछ अबके और है हिज्राने-यार का मौसम
यही जुनूं का, यही तौक-ओ-दार[6] का मौसम
यही है जब्र, यही इख्तियार का मौसम
कफस है बस मे तुम्हारे, तुम्हारे बस मे नहीं
चमन मे आतिशे-गुल के निखार का मौसम
सबा की मस्तखिरामी तहे - कमद[7] नहीं
असीरे-दाम[8] नहीं है बहार का मौसम
बला से हमने न देखा तो और देखेंगे
फरोगे - गुलशन - ओ - सूरते-हजार का मौसम

---

१ प्रेमिका के सौंदर्य की परीक्षा २ धन्य है ३ शराब और साकी का जिक्र ४ पहाड पर बादलों का चलना ५ सब और चिनार के पेडों की परछाइयों का नाचना ६ गले का फंदा और फाँसी ७ फंदे मे ८ जाल म फँसा हुआ।

तिरा जमाल निगाहो मे लेके उट्ठा हूँ
निखर गई है फज़ा तेरे पैरहन की सी
नसीम मेरे शबिस्ताँ से होके आई है
मेरी सहर मे महक है तिरे बदन की सी

सरे-मकतल

कहाँ है मंजिले-राहे-तमन्ना हम भी देखेंगे
यह शब हम पर भी गुजरेगी, यह फर्दा हम भी देखेंगे
ठहर ऐ दिल, जमाले रू-ए-जेबा[1] हम भी देखेंगे
ज़रा सैकल[2] तो हो ले तश्नगी बाद गुसारो की
दबा रखेंगे कब तक जोशे-सहबा हम भी देखेंगे
उठा रखेंगे कब तक जाम-ओ मीना हम भी देखेंगे
सला[3] आ तो चुके महफिल मे उस कू-ए-मलामत[4] मे
किसे रोकेगा शोरे-पदे-बेजा[5] हम भी देखेंगे
किसे है जाके लौट आने का यारा हम भी देखेंगे
चले हैं जान-ओ-ईमाँ आजमाने आज दिलवाले
वह लायें लश्करे-अगयार-ओ-आ'दा[6] हम भी देखेंगे
वह आयें तो सरे-मकतल[7], तमाशा हम भी देखेंगे
यह शब की आखिरी साअ'त गराँ कैसी भी हो हमदम
जो इस साअ'त मे पिन्हाँ है उजाला हम भी देखेंगे
जो फर्के-सुब्ह[8] पर चमकेगा तारा हम भी देखेंगे

---

१ सुन्दर मुखडे का रूप २ तेज, धारदार ३ आवाज ४ निंदा गली ५ अनुचित उपदेश का शोर ६ दुश्मन की फौज ७ कत्ल ने की जगह पर ८ सुब्ह का माथा।

ग़ज़ल

तुम आये हो न शबे-इंतजार गुजरी है
तलाश में है सहर बार-बार गुजरी है

जुनूं में जितनी भी गुजरी ब-कार गुजरी है
अगरचे दिल पे खराबी हजार गुजरी है

हुई है हजरते-नासह से गुफ्तगू जिस शब
वह शब जरूर सरे-कू ए-यार[1] गुजरी है

वह बात सारे फसाने में जिसका जिक्र न था
वह बात उनको बहुत नागवार गुजरी है

न गुल खिले है, न उनसे मिले, न मय पी है
अजीब रंग में अबके बहार गुजरी है

चमन पे गारते-गुलची[2] से जाने क्या गुजरी
कफस से आज सबा बे-करार गुजरी है

---

१ याद की गली में २ फूल चुननेवाली की लाई हुई तबाही।

गजल

तुम्हारी याद के जब जख्म भरने लगते है
किसी बहाने तुमको याद करने लगते हैं

हदीसे-यार के उनवाँ निखरने लगते है
तो हर हरीम[1] मे गेसू सँवरने लगते है

हर अजनबी हमे महरम[2] दिखायी देता है
जो अब भी तेरी गली से गुजरने लगता है

सबा से करते है गुरबत-नसीब[3] जिक्रे-वतन
तो चश्मे-नुम्ह मे आँसू उभरने लगते है

वह जब भी करते है इस नुक्त - ओ - लब[4] की बखिय गरी
फजा मे और भी नग्मे बिखरने लगते है

दरे-कफस[5] पे अँधेरे की मुहर लगती है
तो 'फैज' दिल मे सितारे उतरने लगते है

---

१ घर २ परिचित ३ परदेसी ४ वाणी और हाठ ५ कारागार का द्वार।

हमारे दम से है कू - ए - जुनू[1] मे अब भी खजिल[2]
अ'वा - ए - शेस - ओ - कवा - ए - अमीर - ओ - ताजे - शही
हमी से सुन्नते - मसूर - ओ - कैस[3] जिंदा है
हमी से वाकी है गुलदामनी - ओ - कजकुलही[4]

---

१ उन्माद की गली २ लज्जित ३ मसूर और मजनू की परम्परा
४ दामन म फूल होना (समृद्धि) और कुलाह का तिरछा होना (बाकपन)।

गज़ल

शफ़क[1] की राख में जल-बुझ गया सितार-ए-शाम
शबे-फ़िराक[2] के गेसू फ़ज़ा में लहराये
कोई पुकारो कि इक उम्र होने आई है
फलक को काफ़िल-ए-रोज़-ओ-शाम[3] ठहराये
यह ज़िद है याद हरीफ़ाने-बाद पैमाँ[4] की
कि शब को चाँद न निकले, न दिन को अब्र आये
सबा ने फिर दरे-ज़िंदाँ पे आके दी दस्तक
सहर करीब है, दिल से कहो कि न घबराये

---

१ सूर्यास्त की लाली २ विरह की रात ३ दिन और रात का क्रम
४ शराब पीनेवालों के प्रतिज्ञाओं।

तुम्हारे हुस्न के नाम !

सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम
बिखर गया जो कभी रंगे-पैरहन[1] सरे-बाम[2]
निखर गयी है कभी सुब्ह, दोपहर, कभी शाम
कही जो कामते-जेबा[3] पे सज गई है कबा[4]
चमन मे सब-ओ-सनोबर सँवर गये है तमाम
बनी बिसाते गजल जब डुबो लिए दिल ने
तुम्हारे साय-ए-रुखसार-ओ-लब[5] मे सागर-ओ-जाम
सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम

तुम्हारे हात पे है ताबिशे-हिना[6] जब तक
जहाँ मे बाकी है दिलदारी ए-उस्से-सुखन[7]
तुम्हारा हुस्न जवाँ है तो मेहरबाँ है फलक
तुम्हारा दम है तो दमसाज[8] है हवा-ए-वतन
अगरचे तग है औकात, सरत है आलाम
तुम्हारी याद से शीरी है तल्खी-ए-अय्याम[9]
सलाम लिखता है शायर तुम्हारे हुस्न के नाम

---

१ वस्त्रो का रग २ अटारी पर ३ आकर्षक कद ४ चोगा ५ गाल और होठ की परछाइ ६ महँदी की दमक ७ कविता की दुल्हन की रसिकता ८ मित्र, समर्थक ९ जीवन की कटुता ।

तराना

दरबारे-वतन में जब इक दिन सब जानेवाले जायेंगे
कुछ अपनी सज़ा को पहुँचेंगे कुछ अपनी जज़ा[1] ले जायेंगे
ऐ खाकनशीनो, उठ बैठो, वह वक्त करीब आ पहुँचा है
जब तख्त गिराये जायेंगे, जब ताज उछाले जायेंगे
अब टूट गिरेंगी जंजीरें, अब ज़िंदानो[2] की खैर नहीं
जो दरिया झूम के उट्ठे है, तिनको से न टाले जायेंगे
कटते भी चलो, बढते भी चलो, बाजू भी बहुत हैं, सर भी बहुत
चलते भी चलो कि अब डेरे मंजिल ही पे डाले जायेंगे
ऐ जुल्म के मातो, लब खोलो, चुप रहनेवालो, चुप कब तक
कुछ हश्र तो उनसे उट्ठेगा, कुछ दूर तो नाले जायेंगे

---

१ पुरस्कार २ जेलखाना।

ग़ज़ल

इ'ज्जे-अह्‌ले-सितम[1] की बात करो
इ'श्क के दम-कदम की बात करो
बज्म में अह्‌ले तरब[2] को शरमाओ
बज्मे - असहावे - गम[3] की बात करो
बामे - सरवत[4] के खुशनसीबों से
अज्मते - चश्मे - नम[5] की बात करो
है वही बात यू भी और यूं भी
तुम सितम या करम की बात करो
खैर हैं अह्‌ले - दैर जैसे हैं
आप अह्‌ले - हरम की बात करो
हिज्र की शब तो कट ही जायेगी
रोजे - वस्ले - सनम[6] की बात करो
जान जायेंगे जानने वाले
'फैज' फरहाद-ओ-जम[7] की बात करो

---

१ अत्याचार करनेवालो की बेबसी २ सुखी लोग ३ दुखी लोगो की दुनिया ४ समृद्धि का महल ५ भीगी आंखो की महानता ६ प्रिय मिलन का दिन ७ फरहाद और बादशाह जमशेद ।

नज्रे सौदा[1]

फिक्रे-दिलदारी ए-गुलजार[2] करूँ या न करूँ
जिक्रे मुर्गाने-गिरफ्तार[3] करूँ या न करूँ
किस्स-ए-साजिशे अगयार कहूँ या न कहूँ
शिकव-ए-यारे-तरहदार करूँ या न करूँ
जाने क्या वज्अ[4] है अब रस्मे-वफा की, ऐ दिल
वज्ए'-दैरीना[4] पे इसरार[5] करूँ या न करूँ
जाने किस रग मे तफसीर[6] करें अहले हवस
मदहे-जुल्फ-ओ-लब-ओ-रुखसार[7] करूँ या न करूँ
यूँ बहार आई है इमसाल कि गुलशन मे सबा
पूछती है गुजर इस बार करूँ या न करूँ
गोया इस सोच मे है दिल मे लहू भरके गुलाब
दामन-ओ-जेब को गुलनार करूँ या न करूँ
है फकत मुर्गे-गजलस्वां[8] कि जिसे फिक्र नही
मो'तदिल[9] गर्मी-ए-गुफ्तार करूँ या न करूँ

---

१ सौदा की अपित २ चमन के आकर्षण की चिंता ३ पिंजरे मे बन्द पक्षियों की चर्चा ४ पुरानी पद्धति ५ आग्रह ६ व्याख्या ७ बालो, होठो और गाता की प्रशसा ८ गाता हुआ पक्षी ९ जिसमे सर्दी-गर्मी बराबर हो, सतुलित ।

दो इ'श्क

(१)

ताज हैं अभी याद मे ऐ साकी-ए-गुलफाम[१]
वह अक्से-रुखे-यार से महके हुए अय्याम[२]
वह फूल सी खिलती हुई दीदार की साअत
वह दिल सा धडकता हुआ उम्मीद का हगाम

उम्मीद कि लो जागा गमे दिल का नसीबा
लो शोक की तरसी हुई शब हो गई आखर
लो डूब गये दद के बे-ख्वाब सितारे
अब चमकेगा बे-सब्र निगाहो का मुकद्दर

इस बाग से निकलेगा तिरे हुस्न का खुरशीद[३]
उस कुज से फूटेगी किरन रगे-हिना की
इस दर से बहेगा तिरी रफ्तार का सीमाब[४]
उस राह पे फूलेगी शफक[५] तेरी कबा की

फिर देखे है वह हिज्र के तपते हुए दिन भी
जब फिक्रे-दिल-ओ जाँ मे फुगा[६] भूल गयी है
हर शब वह सियाह बोझ कि दिल बैठ गया है
हर सुब्ह की लौ तीर सी सीने मे लगी है

---

१ फूल जसा साकी २ दिन ३ सूरज ४ पारा ५ सूर्यास्त की लाली ६ विलाप।

तनहाई मे क्या-क्या न तुझ याद किया है
क्या-क्या न दिले-जार ने ढूढी है पनाहे
आँखो से लगाया है कभी दस्ते-सबा को
डाली है कभी गदने-महताब मे बाँहे

(२)

चाहा है उसी रग मे लैला ए-वतन को
तडपा है उसी तौर से दिल उसकी लगन मे
ढूढी है यू ही शौक ने आसाइशे-मजिल[७]
रुखसार के खम मे कभी काकुल[८] की शिकन मे

इस जाने-जहाँ को भी यू ही कल्ब-ओ-नजर[९] ने
हँस-हँस के सदा दी, कभी रो-रो के पुकारा
पूरे किये सब हर्फे-तमन्ना के तकाजे
हर दद को उजियाला, हर इक गम को सँवारा

वापस नही फेरा कोई फरमान जुनू का
तनहा नही लौटी कभी आवाज जरस[१०] की
खैरीयते-जा, राहते तन,[११] सेहते-दामाँ[१२]
सब भूल गई मसलहतें अह्ले-हवस की

इस राह मे जो सब पे गुजरती है वह गुजरी
तनहा पसे-जिंदाँ कभी रुस्वा[१३] सरे-बाजार
गरजे हैं बहुत शख सरे-गोश-ए-मिंबर[१४]
कडके हैं बहुत अह्ले हकम[१५] बर-सरे-दरबार[१६]

---

७ मंजिल का सहारा ८ केश ९ हृदय और दृष्टि १० घटा
११ शरीर का सुख १२ दामन का सुरक्षित रहना। १३ बदनाम
१४ मच पर से १५ अधिकारी १६ दरबार मे

छोडा नहीं गरो ने कोई नावके-दुश्नाम[17]
छूटी नहीं अपनो से कोई तर्जे-मलामत[18]
इस इ'श्क न उस इ'श्क पे नादिम[19] है मगर दिल
हर दाग है इस दिल मे ब-जुज दागे-नदामत[20]

---

१७ गाली का तीर १८ निंदा का ढग १९ लज्जित २० लज्जा का कलंक ।

ग़ज़ल

गरानी ए-शबे-हिज्राँ[1] दुचंद[2] क्या करते
इ'लाजे-दर्द तिरे दर्दमंद क्या करते

वही लगी, है जो नाज़ुक मुक़ाम दिल के
यह फ़र्क़ दस्ते अ'दू के गज़द[3] क्या करते

जगह जगह पे थे नासह तो कू-ब-कू दिलबर
इन्हें पसंद, उन्हें नापसंद क्या करते

जिन्हें ख़बर थी कि शर्ते नवागरी[4] क्या है
वह ख़ुशनवा गिल-ए-क़ैद-ओ-बंद क्या करते

गुलू-ए-इ'श्क़ को दार-ओ-रसन[5] पहुँच न सके
तो लौट आये तिरे सरबलंद,[6] क्या करते

---

१ विरह की रात का बोझ २ दुगना ३ भाला ४ गाने की शर्त
५ फांसी का फन्दा ६ स्वाभिमानी, सर ऊंचा रखनेवाले।

गज़ल

वही है दिल के करईं[1] तमाम कहते हैं
वह इक खलिश कि जिसे तिरा नाम कहते हैं
तुम आ रहे हो कि बजती है मेरी जजीरें
न जाने क्या मिरे दीवार-ओ-बाम कहते हैं
यही कनारे-फलक[2] का सियहतरीन गोश
यही है मतलए'-माहे-तमाम[3] कहते हैं
पियो कि मुफ्त लगा दी है खूने-दिल की कशीद
गराँ है अबके मये-लाल फाम कहते हैं
फकीहे-शहर[4] से मय का जवाज क्या पूछे
कि चाँदनी को भी हज़रत हराम कहते हैं
नवा-ए-मुर्ग[5] को कहते है अब जियाने-चमन[6]
खिले न फूल इसे इन्तजाम कहते हैं
कहो तो हम भी चले 'फैज़', अब नही सरे-दार
वह फर्क-मतब-ए-खास-ओ-आम कहते हैं

---

१ निकट २ आसमान की गोद ३ पूरे चाँद की पृष्ठभूमि ४ शहर मे धमशास्त्र का ज्ञाता ५ चिड़ियों का गाना ६ बाग की क्षति ।

गज़ल

रंग पैराहन का, खुशबू जुल्फ लहराने का नाम
मौसमे-गुल है तुम्हारे बाम पर आने का नाम

दोस्तो उस चश्म-ओ लब की कुछ कहो जिसके बगैर
गुलसिताँ की बात रंगी है न मयखाने का नाम

फिर नज़र मे फूल महके, दिल मे फिर शम्एँ जली
फिर तस्व्वुर ने लिया उस बज्म मे जाने का नाम

दिल्बरी ठहरा ज़बाने-खल्क[1] खुलवाने का नाम
अब नही लेते परी-रू[2] जुल्फ बिखराने का नाम

अब किसी लैला को भी इकरारे-महबूबी नही
इन दिनो बदनाम है हर एक दीवाने का नाम

मुहतसिब की खैर, ऊँचा है उसी के फैज से
रिंद का, साकी का, मय का, खुम का, पैमाने का नाम

हम से कहते हैं चमनवाले, गरीबाने-चमन[3]
तुम कोई अच्छा-सा रख लो अपने वीराने का नाम

'फैज़' उनको है तकाज़ा-ए-वफा हम से जिन्हे
आशना के नाम से प्यारा है बेगाने का नाम

---

१ दुनिया की ज़बान २ परियो जैसे चेहरेवाले ३ जो चमन से बाहर चले गये।

नौह

मुझको शिकवा है मिरे भाई कि तुम जाते हुए
ले गये साथ मेरी उ'म्रे-गुजश्ता की किताब

उसमे तो मेरी बहुत कीमती तस्वीरे थी
उसमे बचपन था मेरा और मेरा अह्दे-शबाब

उसके बदले मे मुझे तुम दे गये जाते-जाते
अपने गम का यह दमकता हुआ खू-रग_गुलाब

क्या करूँ भाई, यह ए'जाज[1] मैं क्यू कर पहनू
मुझसे ले लो मेरी सब चाक कमीसो का हिसाब

आखिरी बार है, लो मान लो इक यह भी सवाल
आज तक तुम से मैं लौटा नही मायूसे-जवाब[2]

आके ले जाओ तुम अपना यह दमकता हुआ फूल
मुझको लौटा दो मेरी उ'म्रे-गुजश्ता की किताब

१८ जुलाई, १९५२

---

१ सम्मान २ उत्तर से निराश ।

ईरानी तुलबा के नाम

(ओ अम्न और आजादी की जद्द-ओ-जेह्द मे काम आये)

"यह कौन सखी[1] हैं
जिनके लहू की
अशर्फ़िया छन-छन, छन-छन
धरती की पैहम[2] प्यासी
कशकोल[3] मे ढलती जाती है
कशकोल को भरती जाती हैं

ये कौन जवान है, अर्जे-अजम,[4]
ये लखलुट[5]
जिनके जिस्मो की
भरपूर जवानी का कुदन
यूं खाक मे रेज -रेज है
यू कूच - कूच बिखरा है
ऐ अर्जे-अजम, ऐ अर्जे-अजम,
क्यूं नोच के हँस-हँस फेंक दिये
इन आँखो ने अपने नीलम
इन होटो ने अपने मर्जान[6]
इन हाथो की बेकल चाँदी
किस काम आयी, किस हाथ लगी ?"
"ऐ पूछने वाले परदेसी,
ये तिफ्ल-ओ-जवाँ
उस नूर के नौरस[7] मोती है
उस आग की कच्ची कलियाँ हैं

---

१ दानी २ निरन्तर ३ भीख का पात्र ४ ईरान ५ लाखो लुटाने वाले ६ मूगा ७ नये।

से जुल्म की जबां रात में फूटी
सुब्हे-बगावत का गुलशन
और सुब्ह हुई मन-मन, तन-तन
इन जिस्मों का चाँदी-सोना
इन चेहरों के नीलम-मर्जा
जगमग, जगमग, रख़्शाँ-रख़्शा[८]
जो देखना चाहे परदेसी
पास आये देखे जी भरकर
यह ज़ीस्त[९] की रानी का झूमर
यह अम्न की देवी का कंगन !"

८ दमकते हुए ९ ज़िन्दगी।

ग़ज़ल

दिल में अब यूं तिरे भूले हुए ग़म आते हैं
जैसे बिछुड़े हुए काबे में सनम[1] आते हैं

एक-इक करके हुए जाते हैं तारे रोशन
मेरी मंज़िल की तरफ तेरे कदम आते हैं

रक़्से-मय[2] तेज़ करो साज की लय तेज करो
सू-ए मयख़ान[3] सफीराने-हरम[4] आते हैं

कुछ हमीं को नहीं एहसान उठाने का दिमाग़
वह तो जब आते हैं माइल-ब-करम[5] आते हैं

और कुछ देर न गुज़रे शबे-फ़ुरक़त[6] से कहो
दिल भी कम दुखता है, वह याद भी कम आते हैं

---

१ मूर्तियाँ २ मदिरा का नृत्य ३ मयखाने की तरफ ४ मस्जिद के दूत ५ कृपा करने को तयार ६ विरह की रात।

अगस्त १९५२

रोशन कहीं बहार के इमकाँ हुए तो हैं
गुलशन में चाक चन्द गरेबाँ हुए तो है
अब भी खिजाँ का राज है लेकिन कहीं-कहीं
गोशे चमन-चमन में गज़लख्वाँ हुए तो है
ठहरी हुई है शब की स्याही वहीं मगर
कुछ कुछ सहर के रंग परअफ्शाँ[1] हुए तो है
उनमें लहू जला हो हमारा कि जान-ओ-माल
महफिल में कुछ चिराग फरोजाँ[2] हुए तो है
हाँ कज[3] करो कुलाह कि सब-कुछ लुटाके हम
अब बेनियाजे-गर्दिशे-दौराँ[4] हुए तो है
अहले-कफस की सुबहे चमन में खुलेगी आख
बादे-सबा से बाद-ओ-नमाँ हुए तो है
है दश्त अब भी दश्त मगर खूने-पासे 'फैज'
सैराब चन्द खारे-मुगीलां[5] हुए तो है

---

१ उजागर २ प्रकाशमान ३ टेढ़ी ४ समय की गति के प्रति उद
५ बबूल के काँटे।

निसार मैं तिरी गलियो पे

निसार मैं तिरी गलियो पे ऐ वतन, कि जहाँ
चली है रस्म कि कोई न सर उठा के चले
जो कोई चाहनेवाला तवाफ[1] को निकले
नजर चुरा के चले, जिस्म-ओ-जाँ बचा के चले
है अह्ले-दिल के लिए अब यह नज्मे-बस्त-ओ-कुशाद[2]
कि सग-ओ खिश्त[3] मुकय्यद[4] है और सग[5] आजाद

बहुत है जुल्म के दस्ते-बहाना-जू[6] के लिए
जो चन्द अह्ले-जुनूँ तेरे नामलेवा है
बने हैं अह्ले-हवस, मुद्दई भी, मुसिफ भी
किसे वकील करे, किससे मुसिफी चाहे
मगर गुजारनेवालो के दिन गुजरते हैं
तिरे फिराक मे यू सुब्ह-ओ-शाम करते है

बुझा जो रोजने जिंदाँ तो दिल यह समझा है
कि तेरी माँग सितारो मे भर गयी होगी
चमक उठे है सलासिल[7] तो हमने जाना है
कि अब सहर तिरे रुख पे बिखर गई होगी
गरज तसव्वुरे-शाम-ओ-सहर मे जीते हैं
गिरफ्ते-साय-ए-दीवार-ओ-दर मे जीते है

यू ही हमेशा उलझती रही है जुल्म से खल्क
न उनकी रस्म नई है, न अपनी रीत नई
यू ही हमेशा खिलाये है हमने आग मे फूल
न उनकी हार नई है, न अपनी जीत नई
इसी सबब से फलक का गिल नही करते
तिरे फिराक मे हम दिल बुरा नही करते

---

१ परिक्रमा २ बँधने और खुलने की व्यवस्था ३ ईंट पत्थर ४ कैद ५ कुत्ते ६ बहाना ढूढनेवाले हाथ ७ जजीरें।

गज़ल

अब वही हर्फ़े-जुनूँ[1] सबकी ज़बाँ ठहरी है
जो भी चल निकली है, वह बात कहाँ ठहरी है
आज तक शेख के इकराम[2] मे जो शै थी हराम
अब वही दुश्मने'-दी[3] राहते-जाँ[4] ठहरी है
है खबर गर्म कि फिरता है गुरेज़ाँ[5] नासह
गुफ्तगू आज सरे-कू-ए-बुताँ[6] ठहरी है
है वही आरिज़े-लैला,[7] वही शीरी का दहन[8]
निगहे-शौक घडी-भर को जहाँ ठहरी है
वस्ल की शब थी तो किस दर्ज सुबुक[9] गुज़री थी
हिज्र की शब है तो क्या सख्त गराँ ठहरी है
इक दफअ बिखरी तो हाथ आई है कब मौजे शमीम
दिल से निकली है तो क्या लब पे फुगा ठहरी है
दस्ते-सयाद[10] भी आजिज है कफे-गुलची[11] भी
बू-ए-गुल ठहरी न बुलबुल की ज़बाँ ठहरी है
आते-आते यूँ ही दम भर को रुकी होगी बहार
जाते-जाते यू ही दम भर को खिज़ा ठहरी है
हमने जो तर्ज़े-फुगाँ की है कफस मे ईजाद
'फैज़' गुलशन मे वही तर्ज़े-बयाँ ठहरी है

---

१ उन्माद का शब्द २ अनुकंपा, कृपादृष्टि ३ दीन धर्म की दुश्मन ४ प्राणो को सुख देनेवाली ५ भागा भागा ६ हसीनो की गली मे ७ लैला के गाल ८ मुह ९ हल्की १० शिकारी का हाथ ११ फूल चुननेवाले का हाथ।

शीशो का मसीहा कोई नहीं

मोती हो कि शीश, जाम कि दुर[1]
जो टूट गया, सो टूट गया
कब अश्को[2] से जुड़ सकता है
जो टूट गया, सो छूट गया

तुम नाहक टुकडे चुन-चुनकर
दामन मे छुपाये बैठे हो
शीशो का मसीहा कोई नही
क्या आस लगाये बैठे हो

शायद कि इन्ही टुकडो मे कही
वह सागरे-दिल है, जिसमे कभी
सद[3] नाज से उतरा करती थी
सहबा - ए - गमे - जानां[4] की परी

फिर दुनियावालो ने तुमसे
यह सागर लेकर फोड दिया
जो मय थी बहा दी मिट्टी मे
महमानो का शहपर[5] तोड दिया

ये रगी रेजे[6] हैं शायद
उन शोख बिलूरी सपनो के
तुम मस्त जवानी मे जिनसे
खिल्वत[7] को सजाया करते थे

---

१ मोती २ आसुओ ३ सौ ४ प्रेमिका के विरह की मदिरा ५ डैना भवसे मुख्य पख ६ कण ७ एकात।

नादारी, दफ्तर, भूख और गम
उन सपनो से टकराते थे
बेरह्म था चौमुख पथराव
ये काँच के ढाँचे क्या करते

या शायद इन जर्रों मे कही
मोती है तुम्हारी इज्जत का
वह जिसमे तुम्हारे इज्ज़[८] पे भी
शमशादकदो[९] ने नाज किया

उस माल की धुन मे फिरते थे
ताजिर भी बहुत, रहजन[१०] भी कई
है चोरनगर, याँ मुफलिस की
गर जान बची तो आन गई

ये सागर-शीशे, ला'ल-ओ-गुहर
सालिम हो तो कीमत पाते है
यू टुकडे-टुकडे हो तो फकत
चुभते है लहू रुलवाते है

तुम नाहक शीशे चुन-चुनकर
दामन मे छुपाये बैठे हो
शीशो का मसीहा कोई नही
क्या आस लगाये बैठे हो

यादो के गरेबानो के रफू
पर दिल की गुजर कब होती है
इक बखिय उधेडा, एक सिया
यू उ'म्र बसर कब होती है

इस कारगहे-हस्ती मे जहाँ
ये सागर-शीशे ढलते है
हर शै का बदल मिल सकता है
सब दामन पुर हो सकते हैं

---

८ विनम्रता ९ सब के पेड जैसे कदवाले १० बटमार।

जो हाथ बढे यावर[11] है यहा
जो आँख उठे, वह बख्तावर[12]
यां धन-दौलत का अन्त नही
हो घात मे डाकू लाख मगर

कब लूट-झपट से हस्ती की
दूकानें खाली होती हैं
या परबत-परबत हीरे है
यां सागर-सागर मोती हैं

कुछ लोग है जो इस दौलत पर
पर्दे लटकाते फिरते हैं
हर परबत को हर सागर को
नीलाम चढाते फिरते है

---

११ मददगार १२ भाग्यवान।

कुछ वो भी है जो लड-भिडकर
ये पद नोच गिराते है
हस्ती के उठाईगीरो की
हर चाल उलझाये जाते है
इन दोनो मे रन पडता है
नित वस्ती-वस्ती, नगर-नगर
हर वसते घर के सीने मे
हर चलती राह के माथे पर
ये कालिख भरते फिरते है
वो जोत जगाते रहते है
ये आग लगाते फिरते है
वो आग वुझाते रहते है
सव सागर शीशे ला'ल ओ-गुहर
इस वाजी मे वद जाते है
उटठो सव खाली हाथो को
इस रन से वुलावे आते है

गजल

आये कुछ अब्र, कुछ शराब आये
उसके वा'द जो आये अजाब[1] आये

(कतअ)

बामे-मीना[2] से माहताब[3] उतरे
दस्ते-साकी[4] मे आफताब[5] आये
हर रगे-खू मे फिर चिरागाँ हो
सामने फिर वह बे-नकाब आये

उ'म्र के हर वर्क पे दिल की नजर
तेरी मेह्र-ओ वफा[6] के बाब[7] आये

(कतअ)

कर रहा था गमे-जहाँ का हिसाब
आज तुम याद बे-हिसाब आये
न गयी तेरे गम की सरदारी
दिल मे यू रोज इनकलाब आये

जल उठे बज्मे-गैर के दर-ओ बाम
जब भी हम खानमा-खराब[8] आये

(कतअ)

इस तरह अपनी खामशी गूजी
गोया हर सिम्त से जवाब आये
'फज' थी राह सर-ब मर मजिल
हम जहा पहुँचे बामयाब आये

---

१ मुसीबत २ सुराही के छज्जे पर से ३ चाँ ४ साकी व
५ सूरज ६ कृपा और निष्ठा ७ अध्याय ८ जिसका घर उजड गय

नज्रे-गालिब[1]

किस गुमाँ[2] प तवक्को'[3] जियाद रखते है
फिर आज कू-ए-बुताँ[4] का इरादा रखते हैं
बहार आयेगी जब आयेगी, यह शत नहीं
कि तश्ना काम[5] रहे गरचे बाद रखते है
तिरी नजर का गिला,क्या ? जो है गिला दिल को
तो हमसे है कि तमन्ना जियाद रखते है
नही शराब से रगी तो गर्के-खू[6] है कि हम
खयाले - बज्ए - कमीस - ओ - लबाद[7] रखते हैं
गमे-जहाँ हो, गमे-यार ! हो कि तीरे-सितम
जो आये, आये कि हम दिल कुशाद[8] रखते है
जवाबे-वाइ'ज-चाबुक जबाँ[9] मे 'फैज' हमे
यही बहुत है जो दो हर्फे-साद रखते है

---

१ गालिब को समर्पित २ भ्रम ३ आशा ४ हसीनो की गली ५ प्यासा ६ खून मे डूबे ७ कमीज और लबादे की शक्ल के अंतर का ध्यान ८ चौडा, बडा ९ पैनी जबानवाले वाइ'ज का जवाब ।

गज़ल

तेरी सूरत जो दिलनशीं की है
आशना शक्ल हर हसीं की है
हुस्न से दिल लगाके हस्ती की
हर घड़ी हमने आतशीं[1] की है
सुब्हे-गुल[2] हो कि शामे-मयखान
मदह उस रु-ए-नाज़नीं की है
शेख से बे-हिरास[3] मिलते है
हमने तौबः अभी नहीं की है
जिक्रे-दोज़ख, बयाने-हूर-ओ-कुसूर[4]
बात गोया यही कहीं की है
अश्क तो कुछ भी रंग ला न सके
खूं से तर आज आस्तीं की है
कैसे मानें हरम के सहल-पसन्द
रस्म जो आ'शिकों के दीं[5] की है
'फ़ैज' औजे-खयाल[6] से हमने
आसमाँ सिंध की जमीं की है

---

१ आग जसी जलती हुई २ फूल (बाग) की सुबह ३ नि
४ सुन्दरियो और महलो की चर्चा ५ दीन=धर्म ६ कल्पना की उडान

जिंदाँ की एक शाम

शाम के पेच-ओ-खम[1] सितारो से
जीन-जीन उतर रही है रात
यू सबा पास से गुज़रती है
जैसे कह दी किसी ने प्यार की बात
सह्ने-जिंदाँ[2] के बे-वतन अशजार[3]
सरनिगूं[4] मह्व[5] हैं बनाने मे
दामने आसमाँ पे नक्श-ओ-निगार

शान-ए बाम[6] पर दमकता है
मेह्रबाँ चाँदनी का दस्ते-जमील[7]
खाक मे घुल गयी है आबे-नजूम
नूर मे घुल गया है अ'र्श[8] का नील
सब्ज गोशो मे नीलगूं साये
लहलहाते है जिस तरह दिल मे
मौजे-दर्दे फिराके-यार[9] आये

दिल से पैहम खयाल कहता है
इतनी शीरी है जिंदगी इस पल
जुल्म का ज़ह्र घोलनेवाले
कामराँ[10] हो सकेंगे आज न कल
जल्वगाहे-विसाल[11] की शम्एँ
वह बुझा भी चुके अगर तो क्या
चाँद को गुल करें, तो हम जानें

---

१ टेढे-मेढ़ २ जेल का आँगन ३ पेड ४ नतमस्तक ५ व्यस्त ६ कोठे का बंधा ७ सुंदर हाथ ८ आसमान ९ प्रेमिका के विरह की पीडा की लहर १० सफल ११ जहाँ प्रणय की लीला होती है।

जिंदाँ की एक सुब्ह

रात बाकी थी अभी जब सरे बालीं[1] आकर
चाँद ने मुझसे कहा, "जाग सहर आई है!
जाग, इस शब जो मये ख्वाब[2] तिरा हिस्सा थी
जाय के लब से तहे-जाम उतर आई है।"
अक्से-जानाँ[3] को विदा' करके उठी मेरी नजर
शब के ठहरे हुए पानी की सियह चादर पर
जा-ब-जा रक्स में आने लगे चादी के भँवर
चाँद के हाथ से तारो के कँवल गिर-गिरकर
डूबते, तैरते, मुरझाते रहे, खिलते रहे
रात और सुब्ह बहुत देर गले मिलते रहे

सह्ने-जिंदाँ में रफीकों[4] के सुनहरे चेहरे
सतहे-जुल्मत से दमकते हुए उभरे कम-कम
नीद की ओस ने उन चेहरो से धो डाला था
देस का दद, फिराके-रुखे-महबूब[4] का गम
दूर नौबत[5] हुई, फिरने लगे बेजार कदम
जर्द फाको के सताये हुए पहरवाले
अह्ले-जिंदा के गजबनाक खरोशाँ[6] नाले
जिनकी बाँहो में फिरा करते है बाहे डाले
लज्जते-ख्वाब[7] से मख्मूर[8] हवाएँ जागी
जेल की जह्र भरी चूर मदाएँ[9][10] जागी
दूर दरवाज खुला कोई, कोई बन्द हुआ

---

१ सिरहाने २ स्वप्न की मदिरा ३ प्रेमिका का प्रतिबिंब (कल्पन
४ साथियो ५ घटा बजाना ६ तेज ७ रोना ८ स्वप्न का आनन्द ९ न
में चूर १० आवाजें।

दूर मचली कोई जजीर, मचलके रोई
दूर उतरा किसी ताले के जिगर में खंजर
सर पटकने लगा रह-रहके दरीच[11] कोई
गोया फिर ख्वाब से बेदार हुए दुश्मने-जाँ
सग-ओ-फौलाद से ढाले जिन्नाते-गराँ[12]
जिनके चंगुल में शब-ओ-रोज हैं फरियादकुना[13]
मेरे बेकार शब-ओ-रोज की नाजुक परियाँ
अपने शहपूर[14] की रह देख रही है ये असीर
जिसके तरकश में हे उम्मीद के जलते हुए तीर
(नातमाम)

११ झरोखा, खिडकी १२ बडे बडे पिशाच १३ फरियाद करते हुए
१४ शाहजादा।

याद

दश्ते - तनहाई[1] मे ऐ जानाँ-जहाँ लरजाँ[2] हैं
तेरी आवाज के साये, तिरे होटो के सराब[3]
दश्ते - तनहाई मे, दूरी के खस - ओ - खाक[4] तले
खिल रहे है तिरे पहलू के समन[5] और गुलाब

उठ रही है कही कुरबत[6] से तिरी साँस की आँच
अपनी खुशबू मे सुलगती हुई मद्धम - मद्धम
दूर—उफक पार, चमकती हुई, कतर - कतर
गिर रही है तिरी दिलदार नजर की शबनम

इस कदर प्यार से, ऐ जाने-जहाँ रक्खा है
दिल के रुखसार पे इस वक्त तिरी याद ने हाथ
यू गुमाँ होता है, गरच है अभी सुब्हे-फिराक,[7]
ढल गया हिज्र[8] का दिन, आ भी गई वस्ल की रात

---

१ एकात का जगल २ कम्पित ३ मृगतृष्णा ४ घास और धूल ५ चमेली ६ निकटता ७ विरह का सवेरा ८ विरह।

गजल

यादे-ग़िजाल चश्मा,[1] जिक्रे-समन इ'जारा[2]
जब चाहा कर लिया है कुंजे-कफस बहारां

आंखो मे दर्दमन्दी, होटो पे उज्रख्वाही[3]
जानान - बार आई शामे - फिराके - यारां

नामूसे-जान-ओ-दिल[4] की बाजी लगी थी वरन
आसां न थी कुछ ऐसी राहे-वफाशआ'रां[5]

मुजरिम हो स्वाह कोई, रहता है नासहो का
रू-ए-सुखन[6] हमेशा सू - ए - जिगरफिगारां[7]

है अब भी वक्त जाहिद,[8] तरमीमे-जुह्द[9] कर ले
सू - ए - हरम चला है अबोहे - बाद स्वारां[10]

शायद करीब पहुँची सुब्हे-विसाल[11] हमदम
मौजे-सबा लिये है खुशबू - ए - खुशकनारां[12]

है अपनी किश्ते-वीरां[13] सरसब्ज इस यकी से
आयेंगे इस तरफ भी इक रोज अब्र-ओ-बारां[14]

आयेगी 'फैज' इक दिन वादे-बहार लेकर
तस्लीमे - मयफरोशा,[15] पैगामे - मयगुसारां[16]

---

१ मृगनयनियो की याद २ चमेली के फूल जैसे गालवालो की चर्चा ३ विवशता प्रकट करना ४ जान और दिल की मर्यादा ५ वफा करनवालो का रास्ता ६ बात की दिशा ७ घायल जिगरवालो की तरफ ८ तपस्वी, विरक्त ९ वैराग्य मे सुधार १० शराबियो की भीड ११ मिलन प्रभात १२ सुन्दर गोदवालो की सुगन्ध १३ उजडी क्यारी १४ बादल और बारिश १५ शराब बेचनेवालों का सलाम १६ शराब पीनेवालों का सन्देश।

गजल

कर्जे-निगाहे-यार अदा कर चुके है हम
सब कुछ निसारे-राहे-वफा कर चुके हैं हम

कुछ इम्तहाने-दस्ते जफा कर चुके है हम
कुछ उनकी दस्तरस[1] का पता कर चुके हैं हम

अब एहतियात की कोई सूरत नहीं रही
कातिल से रस्म-ओ-राह सिवा[2] कर चुके हैं हम

देखें है कौन-कौन, जरूरत नहीं रही
कू-ए-सितम मे सबको खफा कर चुके है हम

अब अपना इख्तियार है चाहे जहाँ चलें
रहबर से अपनी राह जुदा कर चुके हैं हम

उनकी नजर मे क्या करें फीका है अब भी रग
जितना लहू था सर्फे-कबा[3] कर चुके हैं हम

कुछ अपने दिल की खू[4] का भी शुकरान चाहिये
सौ बार उनकी खू का गिला कर चुके हैं हम

---

१ पहुँच २ अधिक ३ वस्त्र पर व्यय ४ स्वभाव, आदत ।

मुलाकात

(१)

यह रात उस दर्द का शजर[1] है
जो मुझसे तुझसे अजीमतर है
अजीमतर है कि इसकी शाखो
मे लाखो मिशअ'ल-ब-कफ[2] सितारो
के कारवाँ घिर के खो गये है
हज़ार महताब इसके साये
मे अपना सब नूर खो गये है

यह रात उस दद का शजर है
जो मुझसे तुझसे अजीमतर है
मगर इसी रात के शजर से
ये चद लम्हो के जर्द पत्ते
गिरे है और तेरे गेसुओ[3] मे
उलझके गुलनार हो गये है
इसी की शबनम से खामशी के
ये चद कतरे तिरी जबी[4] पर
बरम के हीरे पिरो गये है

(२)

बहुत सियह है यह रात लेकिन
इसी सियाही मे रू-नुमा[5] है
वह नह्‌रे-खूं जो मिरी सदा है

---

१ पेड़ २ हाथ मे मशालें लिये हुए ३ बालो ४ माथा
५ प्रकट होना, सूरत दिखाना ।

इसी के साये मे नूरगर[६] है
वह मौजे-जर[७] जो तिरी नजर है

वह गम जो इस वक्त तेरी बाँहो
के गुलसिताँ मे सुलग रहा है

(वह गम जो इस रात का समर[८] है)
कुछ और तप जाये अपनी आहो
की आच मे तो यही शरर[९] है

हर इक सियह शाख की कमाँ से
जिगर मे टूटे हैं तीर जितने
जिगर से नोचे हैं और हर इक
का हमने तेश बना लिया है

(३)

अलम-नसीबो,[१०] जिगर-फिगारो
की सुब्ह अफलाक[११] पर नही है
जहा पे हम तुम खडे है दोनो
सहर का रोशन उफक यही है
यही पे गम के शरार[१२] खिलकर
शफक[१३] का गुलज़ार[१४] बन गये है
यही पे कातिल दुखो के तेशे
कतार-अदर-कतार किरनो
के आतशी हार बन गये हैं

---

६ आलोकित ७ सोने की लहर ८ फल ९ चिंगारी १० जिसके भा
मे दुख है ११ आसमान १२ चिनगारियाँ १३ सूर्यास्त की ला
१४ बाग।

यह गम जो इसे रात ने दिया है
यह गम सहर का यकी बना है
यकी जो गम से करीमतर[१५] है
सहर जो शब से अजीमतर है

मांटगोमरी जेल
२१ अक्तूबर—४ नवंबर, १९५३

१५ अधिक दयालु

४

ऐ साकिनाने-कुजे-कफस ! सुब्ह को सबा
सुनती ही जायेगी सू-ए-गुलजार, कुछ कहो

—सौदा

ग़ज़ल

शेख साहब से रस्म-ओ राह न की
शुक्र है ज़िंदगी तबाह न की

तुझको देखा तो सैर-चश्म[1] हुए
तुझको चाहा तो और चाह न की

तेरे दस्ते सितम का इ'ज्ज[2] नहीं
दिल ही काफ़िर था जिसने आह न की

थे शबे-हिज्र काम और बहुत
हमने फ़िक्रे-दिले-तबाह न की

कौन क़ातिल बचा है शहर में 'फ़ज'
जिससे यारी ने रस्म-ओ-राह न की

---

१ आँखें तृप्त होना २ कमज़ोरी

गज़ल

सब कत्ल होके तेरे मुकाबिल से आये है
हम लोग सुख-रू[1] हैं कि मंजिल से आये हैं

शम्ए-नजर, खयाल के अजुम[2], जिगर के दाग
जितने चिराग हैं तिरी महफिल से आये हैं

उठकर तो आ गये है तिरी बज्म से मगर
कुछ दिल ही जानता है किस दिल से आये हैं

हर इक कदम अजल[3] था, हर इक गाम जिदगी
हम घूम-फिर के कूच-ए-कातिल से आये हैं

बादे-खिजाँ[4] का शुक्र करो 'फैज' जिसके हाथ
नामे[5] किसी बहार-शमाइल[6] के आये है

---

१ सफल, विजयी २ सितारे ३ मौत ४ पतझड़ की
५ चिट्ठियाँ ६ बहार जसे स्वभाववाला

ऐ हबीबे-अ'बरदस्त !

[एक अजनबी खातून के नाम
खुशबू का तोहफा वसूल होने पर]

किसी के दस्ते-इ'नायत ने कुजे-जिंदाँ[1] में
किया है आज अजब दिलनवाज बंदोबस्त
महक रही है फजा जुल्फे-यार की सूरत
हवा है गर्मी ए-खुशबू से इस तरह सरमस्त
अभी-अभी गुजरा है कोई गुलबदन गोया
कही करीब से, गेसू-ब-दोश[2], गुच-ब-दस्त[3]
लिये है बू-ए-रफाकत[4] अगर हवा-ए-चमन
तो लाख पहरे बिठायें कफस पे जुल्म परस्त
हमेश सब्ज रहेगी वह शाखे-मेह्र-ओ-वफा
कि जिसके साथ बँधी है दिलो की फतह-ओ शिकस्त

यह शे'रे-हाफिजे शीराज, ऐ सबा, कहना,
मिले जो तुझसे कही वह हबीबे-अ'बरदस्त[5]
"खलल पिजीर बवद हर बिना कि मी बीनी
बजुज बिना-ए-महब्बत कि खाली अज खलल अस्त"[6]

सेंट्रल जेल
हैदराबाद
२८-२९ अप्रल, १९५३

---

१ जेल का कोना २ कंधे पर बाल बिखराये ३ हाथ म कली लिये ४ दोस्ती की सुगध ५ खुशबूदार हाथोंवाला दोस्त ६ हर बुनियाद में दरार पड जाती है अलावा मुहब्बत की बुनियाद के जिसमें दरार नही पडती।

ग़ज़ल

सितम की रस्मे वहुत थी लेकिन, न थी तिरी अजुमन से पहले
सज़ा खता-ए-नज़र से पहले, अ'ताव[1] जुर्मे सुखन से पहले

जो चल सको तो चलो कि राहे-वफा वहुत मुख्तसर हुई है
मुकाम है अव कोई न मंज़िल, फराजे-दार-ओ रसन[2] से पहले

नहीं रही अव जुनू की ज़ंजीर पर वह पहली इजारदारी
गिरफ्त करते हैं करनेवाले खिरद[3] पे- दीवानपन से पहले

करे कोई तेग का नजारा, अव उनको यह भी नही गवारा
व-ज़िद है कातिल कि जाने-बिस्मिल फिगार[4] हो जिस्म-ओ तन से पहले

गुरूरे-सव-ओ-समन से कह दो कि फिर वही ताजदार होंगे
जो खार-ओ खस वाली-ए-चमन थे उ'रूजे-सव-ओ-समन[5] से पहले

इधर तकाजे है मसलहत के, उधर तकाजा-ए-दर्दे दिल है
जवाँ सँभालें कि दिल सँभालें, असीर[6] ज़िक्रे-वतन से पहले

हैदराबाद जेल
१७-२२ मई, १९५४

---

१ दड २ फाँसी का तख्त ३ अक्ल ४ घायल ५ सव और समन का उत्थान ६ बदी।

ग़ज़ल

शामे-फ़िराक़[1] अब न पूछ आई और आके टल गई
दिल था कि फिर बहल गया, जाँ थी कि फिर सँभल गई

बज़्मे-ख़याल में तिरे हुस्न की शम्अ जल गई
दर्द का चाँद बुझ गया, हिज्र की रात ढल गई

जब तुझे याद कर लिया, सुब्ह महक महक उठी
जब तिरा ग़म जगा लिया, रात मचल-मचल गई

दिल से तो हर मुआ'मला करके चले थे साफ़ हम
कहने में उनके सामने बात बदल-बदल गई

आख़िरे-शब[2] के हमसफ़र 'फ़ैज़' न जाने क्या हुए
रह गई किस जगह सबा[3], सुब्ह किधर निकल गई

जिनाह अस्पताल, कराची
जुलाई, १९५३

---

१ विरह की शाम २ पिछला पहर ३ सुगंधित पवन

ग़ज़ल

रहे-ख़िज़ाँ[1] मे तलाशे-बहार करते रहे
शबे-सियह[2] से तलब हुस्ने-यार करते रहे

ख़याले-यार कभी ज़िक्रे-यार करते रहे
इसी मताअ[3] पे हम रोज़गार करते रहे

नहीं शिकायते-हिज्राँ कि इस वसीले से
हम उनसे रिश्ते-ए-दिल उस्तवार[4] करते रहे

वो दिन कि कोई भी जब वज्हे-इंतज़ार न थी
हम उनमे तेरा सिवा इंतज़ार करते रहे

हम अपने राज़ पे नाज़ाँ थे, शर्मसार न थे
हर एक से सुख़ने-राज़दार[5] करते रहे

जिया ए-बज़्मे-जहाँ[6] बार-बार माँद हुई
हदीसे शो'ल रुख़ाँ[7] बार-बार करते रहे

उन्हीं के फ़ैज़ से बाज़ारे-अक्ल रोशन है
जो गाह् गाह् जुनूँ इख़्तियार करते रहे

जिन्नाह् अस्पताल, कराची
२१ अगस्त

---

१ पतझड का रास्ता २ काली रात ३ पूंजी ४ मजबूत
५ भेद की बात ६ दुनिया की चमक-दमक ७ आग की लपटा जैसे (प्रकाशमान) चेहरेवालो की चर्चा

न आज लुत्फ[1] कर इतना कि कल गुज़र न सके
वह रात कि जो तिरे गेसुओ की रात नही
यह आरज़ू भी बडी चीज़ है मगर हमदम
विसाले-यार फकत आरज़ू की बात नही

---

१ कृपा

गज़ल

बात बस से निकल चली है
दिल की हालत सँभल चली है

अब जुनूं हद से बढ़ चला है
अब तबीअ़त बहल चली है

अश्क खूंनाब[1] हो चले हैं
गम की रंगत बदल चली है

या यूं ही बुझ रही है शम्एं
या शबे-हिज्र टल चली है

लाख पैगाम हो गये हैं
जब सबा एक पल चली है

जाओ, अब सो रहो सितारो
दर्द की रात ढल चली है

मांटगोमरी जेल
२१ नवंबर, १९५३

---

१ खून के रंग के

वासोख्त

सच है हमी को आपके शिकवे बजा न थे
बेशक सितम जनाब के सब दोस्तान थे

हाँ, जो जफा भी आपने की, काय'दे से की
हाँ, हम ही कारबदे-उसूले-वफा[1] न थे

आये तो यूं कि जैसे हमेश थे मेह्रबाँ
भूले तो यूं कि गोया कभी आश्ना[2] न थे

क्यो दादे-गम हमी ने तलब की बुरा किया
हमसे जहाँ मे कुश्त-ए-गम[3] और क्या न थे

गर फिक्रे-जख्म की तो खतावार हैं कि हम
क्यो मह्वे-मदहे-खूबी-ए-तेगे-अदा[4] न थे

हर चारगर को चारगरी से गुरेज था
वरन हमे जो दुख थे, ला दवा न थे

लब पर है तल्खी ए-मये-अय्याम,[5] वरन 'फैज़'
हम तल्खी-ए-कलाम[6] पे माइल[7] ज़रा न थे

मांटगोमरी जेल
२४ नवबर, १९५३

---

१ वफा के उसूल के पाबद २ परिचित ३ गम के मारे हुए ४ अदा की तलवार के गुणों की प्रशसा मे व्यस्त ५ समय की शराब की कडवाहट ६ बात की कटुता ७ प्रवृत्ति रखना

गजल

शाख पर खूने-गुल रवाँ है वही
शोखी-ए-रंगे-गुलसिताँ है वही

मर वही है तो आस्ताँ[1] है वही
जाँ वही है तो जाने-जाँ है वही

अब जहाँ मेहवाँ नहीं कोई
कूच ए-यारे-मेहवा है वही

बक[2] सौ बार गिरके खाक हुई
रौनके खाके-आशियाँ है वही

आज की शब विसाल की शब है
दिल से हर रोज दास्ताँ है वही

चाँद-तारे इधर नहीं आते
वरन जिंदाँ मे आसमाँ है वही

मांटगोमरी जेल

---

१ चौखट २ बिजली

गज़ल

कब याद मे तेरा साथ नही, कब हात मे तेरा हात नही
सद शुक्र कि अपनी रातो मे अब हिज्र की कोई रात नही

मुश्किल है अगर हालात वहाँ, दिल बेच आयें जाँ बेच आये
दिलवालो कूच-ए-जानाँ मे क्या ऐसे भी हालात नही

जिस धज से कोई मकतल मे गया, वह शान सलामत रहती है
यह जान तो आनी-जानी है, इस जान की तो कोई बात नही

मैदाने-वफा दरबार नही, याँ नाम ओ नसब की पूछ कहाँ
आ'शिक तो किसी का नाम नही, कुछ इ'श्क किसी की जात नही

गर बाजी इ'श्क की बाजी है, जो चाहो लगा दो डर कैसा
गर जीत गये तो क्या कहना, हारे भी तो बाजी मात नही

मांटगोमरी जेल

ग़ज़ल

हम पर तुम्हारी चाह का इल्ज़ाम ही तो है
दुश्नाम[1] तो नहीं है यह इकराम[2] ही तो है

करते हैं जिस पे ता'न[3] कोई जुर्म तो नहीं
शौके-फ़िज़ूल-ओ-उल्फ़ते-नाकाम ही तो है

दिल मुद्दई के हर्फ़े मलामत[4] से शाद है
ऐ जाने जाँ यह हर्फ़ तिरा नाम ही तो है

दिल ना-उमीद तो नहीं, नाकाम ही तो है
लंबी है ग़म की शाम मगर शाम ही तो है

दस्ते-फलक[5] मे गर्दिशे तक़दीर तो नहीं
दस्ते-फलक मे गर्दिशे-अय्याम ही तो है

आखिर तो एक रोज करेगी नज़र वफ़ा
वह यारे-खुशखसाल[6] सरे-बाम ही तो है

भीगी है रात 'फ़ैज़' ग़ज़ल इब्तिदा करो
वक्ते-सरोद[7], दर्द का हंगाम ही तो है

मांटगोमरी जेल
६ मार्च, १९५४

---

१ गाली २ कृपा ३ व्यंग ४ निंदा का शब्द ५ आ
का हाथ ६ अच्छे गुणोंवाला यार ७ गाने का वक्त

शीशों का

ऐ रोशनियो के शहर !

सब्ज़-सब्ज़, सूख रही है फीकी, ज़र्द दोपहर
दीवारो को चाट रहा है तनहाई का ज़हर
दूर उफक तक घटती, बढती, उठती, गिरती रहती है
कुहर की सूरत बे-रौनक दर्दो की लहर

बिसात[1] है उस कुहरे के पीछे रोशनियो का शहर
ऐ रोशनियो के शहर

कौन कहे किस सिम्त है तेरी रोशनियो की राह
हर जानिब बे-नूर खडी है हिज्र की शहरपनाह
थक कर हर सू बैठ रही है शौक की मांद सिपाह

आज मिरा दिल फिक्र मे है
ऐ रोशनियो के शहर

शबख़ू से मुँह फेर न जाये अरमानो की रौ
खबर हो तेरी लैलाओ की, उन सबसे कह दो
आज की शब जब दिये जलायें, ऊँची रखें लौ

लाहौर जेल
मांटगोमरी जेल
२८ मार्च
१५ अप्रल } १९५४

---

१ फैला हुआ

गजल

गुलो मे रग भरे बादे-नौबहार चले
चले भी आओ कि गुलशन का कारोबार चले

कफस उदास है यारो सबा से कुछ तो कहो
कही तो बहरे-खुदा आज जिक्रे-यार चले

कभी तो सुब्ह तिरे कुजे-लब[1] से हो आगाज
कभी तो शब सरे-काकुल[2] से मुश्कबार चले

बडा है दद का रिश्ता यह दिल गरीब सही
तुम्हारे नाम पे आयेंगे गमगुसार चले

जो हम पे गुजरी सो गुजरी मगर शबे-हिज्राँ
हमारे अश्क तिरी आकबत सँवार चले

हुजूरे-यार हुई दफ्तरे-जुनूँ की तलब
गिरह में लेके गरेबाँ का तार-तार चले

मुकाम, 'फैज', राह मे कोई जचा ही नही
जो कू-ए-यार से निकले तो सू-ए-दार चले

---

१ होट का कोना २ लटो का सिरा

हम जो तारीक राहो मे मारे गये

[ईथेल और जूलियस रोज़नबर्ग के
खतों से मुतासिर होकर लिखी गयी]

तेरे होटो के फूलो की चाहत मे हम
दार[1] की खुश्क टहनी पे वारे गये
तेरे हातो की शम्ओ' की हसरत मे हम
नीम-तारीक राहो मे मारे गये

सूलियो पर हमारे लबो से परे
तेरे होटो की लाली लपकती रही
तेरी जुल्फो की मस्ती बरसती रही
तेरे हाथो की चाँदी दमकती रही

जब घुली तेरी राहो मे शामे-सितम
हम चले आये लाये जहाँ तक कदम
लब पे हर्फे गजल, दिल मे कदीले-गम
अदना गम था गवाही तिरे हुस्न की
देख कायम रहे इस गवाही पे हम
हम जो तारीक राहो पे मारे गये

नारसाई[2] अगर अपनी तकदीर थी
तेरी उल्फत तो अपनी ही तदबीर थी
किसको शिकव है गर शौक[3] के सिलसिले
हिज्र की कत्लगाहो से सब जा मिले

कत्लगाहो से चुनकर हमारे अ'लम[4]
और निकलेंगे उ'श्शाक[5] के काफिले

---

१ फाँसी २ विफलता ३ उत्कठा ४ झडे ५ प्रेमी

मुरतसर कर चले दद के फासले
कर चले जिनकी खातिर जहाँगीर[६] हम
जाँ गवाँकर तिरी दिलवरी का भरम
हम जो तारीक राहो मे मारे गये

माटगोमरी जेल
१५ मई, १९५४

६ विश्वव्यापी

फिक्रे-सूद-ओ-जियाँ[1] तो छूटेगी
मिन्नते-ईन-ओ आँ[2] तो छूटेगी
खैर, दोजख मे मय मिले न मिले
शेख साहब से जाँ तो छूटेगी

१ लाभ-हानि की चिंता २ इसकी उसकी खुशामद

गज़ल

कुछ मुहतसिबो[1] की खिल्वत मे, कुछ वाइ'ज़[2] के घर जाती है
हम बादकशो के हिस्से की, अब जाम मे कमतर जाती है

यूं अ'र्ज़-ओ-तलब[3] से कब ऐ दिल, पत्थर दिल पानी होते है
तुम लाख रज़ा की खू डालो, कब खू ए-सितमगर जाती है

बेदादगरो[4] की बस्ती है, यां दाद कहां खैरात कहां
सर फोडती फिरती है नादां फरियाद जो दर दर जाती है

हां, जां के जियां की हमको भी तशवीश है लेकिन क्या कीजे ?
हर रह जो उधर को जाती है, मकतल[5] से गुज़रकर जाती है

अब कूच-ए दिलबर का रहरव, रहजन भी बने तो बात बने
पहरे से अ'दू[6] टलते ही नही और रात बराबर जाती है

हम अह्ले-कफस तनहा भी नही, हर रोज़ नसीमे-सुब्हे-वतन
यादो से मुअ'त्तर[7] आती है, अश्को से मुनव्वर[8] जाती है

मांटगोमरी जेल
१७ जून, १९५४

---

१ प्रतिबंध लगानेवाला २ धर्मोपदेशक ३ प्रार्थना और याचना
४ अन्यायियो ५ कत्ल करने की जगह ६ दुश्मन ७ सुगंधित
८ आलोकित

दरीचे

गडी हैं कितनी सलीबें मिरे दरीचे मे
हर एक अपने मसीहा के खूं का रग लिये
हर एक वस्ले-खुदावद[1] की उमग लिये

किसी पे करते हैं अब्रे-बहार[2] को कुर्बां
किसी पे कत्ले-महे-ताबनाक[3] करते हैं
किसी पे होती है सरमस्त शाखसार[4] दो-नीम[5]
किसी पे वादे-सबा को हलाक करते है

हर आये दिन ये खुदावदगाने-मेह्र-ओ-जमाल
लहू मे गर्क मिरे गमकदे मे आते हैं
और आये दिन मिरी नजरो के सामने उनके
शहीद जिस्म सलामत उठाये जाते हैं

मॉटगोमरी जेल
वसम्बर, १९५४

---

१ खुदा से मिलना २ बहार के बादल ३ चमकदार चाँद की हत्या
४ डाली ५ दो टुकड़े

दर्द आयेगा दबे पांव

और कुछ देर मे, जब फिर मिरे तनहा दिल को
फिक्र आ लेगी कि तनहाई का क्या चारा करे
दर्द आयेगा दबे पाँव, लिये सुर्ख चिराग
वह जो इक दर्द धडकता है कहीं दिल से परे

शो'ल-ए-दर्द जो पहलू मे लपक उट्ठेगा
दिल की दीवार पे हर नक्श दमक उट्ठेगा
हल्क-ए-जुल्फ[1] कही, गोश-ए-रुखसार[2] कही
हिज्र का दश्त कही, गुलशने-दीदार कही
लुत्फ की बात कही, प्यार का इकरार कही

दिल से होगी फिर मिरी बात कि ऐ दिल, ऐ दिल
यह जो महबूब बना है तिरी तनहाई का
यह तो मेहमा है घडी भर का चला जायेगा
इससे कब तेरी मुसीबत का मदावा[3] होगा

मुश्तइ'ल[4] होके अभी उट्ठेंगे वहशी साये
वह चला जायेगा, रह जायेंगे बाकी साये
रात भर जिनसे तिरा खून-खराबा होगा

जग ठहरी है कोई खेल नही है, ऐ दिल
दुश्मने-जाँ है सभी सारे के सारे कातिल
यह कडी रात भी, साये भी, तनहाई भी

दर्द और जग मे कोई मेल नही है, ऐ दिल

---

१ बालों के घेरे २ गालो के कोने ३ इलाज ४ उत्तेजित

लाओ, सुलगाओ कोई जोशे-गज़ब का अंगार
तैश की आतिशे-जर्रार[५] कहाँ है, लाओ
वह दहकता हुआ गुलजार कहाँ है, लाओ
जिसमें गर्मी भी है, हरकत भी, तवानाई[६] भी

हो न हो अपने कबीले का भी कोई लश्कर
मुंतजिर होगा अंधेरे की फसीलों[७] के उधर
उनको शोलों के रजज़[८] अपना पता तो देंगे
खैर, हम तक वह न पहुँचें भी, सदा तो देंगे
दूर कितनी है अभी सुब्ह, बता तो देंगे

मांटगोमरी जेल
१ दिसंबर, १९५४

---

५ तेज आग ६ ताकत ७ प्राचीरों ८ वीरगाथा

सुब्ह फूटी तो आसमाँ पे तिरे
रंगे-रुखसार की फोहार गिरी
रात छाई तो रू-ए-आ'लम[1] पर
तेरी जुल्फो की आबशार[2] गिरी

---

१ दुनिया का चेहरा २ झरना

"AFRICA COME BACK*

(एक रजज[1])

आ जाओ, मैंने सुन ली तिरे ढोल की तरग
आ जाओ, मस्त हो गई मेरे लहू की ताल
"आ जाओ, एफ्रीका"

आ जाओ, मैंने धूल से माथा उठा लिया
आ जाओ, मैंने छील दी आँखो से गम की छाल
आ जाओ, मैंने दर्द से बाजू छुडा लिया
आ जाओ, मैंने नोच दिया बेकसी का जाल
"आ जाओ, एफ्रीका"

पजे मे हथकडी की कडी बन गई है गुज[2]
गर्दन का तौक तोड के ढाली है मैंने ढाल
"आ जाओ, एफ्रीका"

जलते है हर कछार मे भालो के मिरग-नैन
दुश्मन लहू से रात की कालिक हुई है लाल
"आ जाओ, एफ्रीका"

धरती धडक रही है मिरे साथ, एफ्रीका
दरिया थिरक रहा है तो बन दे रहा है ताल

---

*अफ्रीकी स्वतत्रता-प्रेमियो का नारा

१ वीर गाथा २ गदा

मैं एफ्रीका हूँ, धार लिया मैंने तेरा रूप
मैं तू हूँ, मेरी चाल है तेरी बबर की चाल
"आ जाओ, एफ्रीका"

आओ, बबर की चाल
आ जाओ, एफ्रीका

मांटगोमरी जेल
१४ जनवरी, १९५५

ग़ज़ल

गर्मी-ए-शौके-नज़ारा[1] का असर तो देखो
गुल खिले जाते हैं वह साय-ए-दर तो देखो

ऐसे नादाँ भी न थे जाँ से गुज़रनेवाले
नासहो, पदगरो,[2] राहगुजर तो देखो

वह तो वह है, तुम्हे हो जायेगी उल्फत मुझसे
इक नजर मिरा महबूबे-नजर तो देखो

वह जो अब चाक गरेबाँ भी नही करते हैं
देखनेवालो, कभी उनका जिगर तो देखो

दामने-दद को गुलज़ार बना रक्खा है
आओ, इक दिन दिले-पुरख़ूँ[3] का हुनर तो देखो

सुब्ह की तरह झमकता है शबे-गम का उफक
'फैज' तावदगी-ए-दीद ए-तर तो देखो

मांटगोमरी जेल
४ मार्च, १९५५

---

१ दर्शन की अभिलाषा का उत्साह २ उपदेश देनेवालो ३ खून से भरा हुआ दिल

यह फस्ल उमीदो की हमदम

सब काट दो
बिस्मिल[1] पौदो को
बे-आब सिसकते मत छोडो
सब नोच लो
बेकल फूलो को
शाखो पे बिलकते मत छोडो

यह फस्ल उमीदो की हमदम
इस बार भी गारत जायेगी
सब मेहनत सुबहो शामो की
अबके भी अकारत जायेगी

खेती के कोनो-खुदरो मे
फिर अपने लहू की खाद भरो
फिर मिट्टी सीचो अश्को से
फिर अगली रुत की फिक्र करो

फिर अगली रुत की फिक्र करो
जब फिर इक बार उजडना है
इक फस्ल पकी तो भर पाया
जब तक तो यही कुछ करना है

माटगोमरी जेल
३० मार्च, १९५५

---

१ मरे हुए

बुनियाद कुछ तो हो

(क़व्वाली)

कू-ए-सितम की सामशी आबाद कुछ तो हो
कुछ तो कहो सितमकशो,[1] फरियाद कुछ तो हो
वेदादगर से शिकव-ए-वेदाद कुछ तो हो
बोलो कि शोरे-हश्र[2] की ईजाद[3] कुछ तो हो

मरने चले तो सतवते-कातिल[4] का खौफ क्या
इतना तो हो कि बाँधने पाये न दस्त-ओ-पा
मकतल मे कुछ तो रंग जमे जश्ने-रक्स का

रंगी लहू से पंज-ए-सैयाद कुछ तो हो
खूं पर गवाह दामने-जल्लाद कुछ तो हो
जब खूं बहा[5] तलब करें बुनियाद कुछ तो हो

गर तन नहीं, जवाँ सही, आजाद कुछ तो हो
दुश्नाम, नाल, हा-ओ-हू, फरियाद कुछ तो हो
चीखे है दर्द, ऐ दिले-बर्बाद कुछ तो हो
बोलो, कि शोरे-हश्र की ईजाद कुछ तो हो
बोलो कि रोज़े-अद्ल की बुनियाद कुछ तो हो

मांटगोमरी जेल
१३ अप्रल, १९५५

---

१ जुल्म सहनेवालो २ प्रलय का शोर ३ शुरुआत ४ कातिल का आतंक ५ खून की कीमत।

कोई आ'शिक किसी महबूब से

याद की राहगुजर जिस पे इसी सूरत से
मुद्दतें बीत गई हैं तुम्हे चलते-चलते
खत्म हो जाये जो दो-चार कदम और चलो
मोड पडता है जहाँ दश्ते-फरामोशी[1] का
जिससे आगे न कोई मैं हूँ न कोई तुम हो
साँस थामे है निगाहे कि न जाने किस दम
तुम पलट आओ, गुजर जाओ, या मुडकर देखो

गरचे वाकिफ है निगाहे कि यह सब धोका है
गर कही तुमसे हम-आगोश हुई फिर से नजर
फूट निकलेगी वहा और कोई राहगुजर
फिर इसी तरह जहाँ होगा मुकाबिल[2] पैहम[3]
साय-ए-जुल्फ का और जुबिशे-बाजू का सफर
दूसरी बात भी झूठी है कि दिल जानता है
याँ कोई मोड, कोई दश्त, कोई घात नही
जिसके परदे मे मिरा माहे-रवाँ[4] डूब सके
तुमसे चलती रहे यह राह, यू ही अच्छा है
तुमने मुडकर भी न देखा तो कोई बात नही

---

१ विस्मृति का जगल २ सामने ३ लगातार ४ चलता हुआ चाँद।

अगस्त १९५५

शह्‌र मे चाक-गरेबाँ हुए नापद अबके
कोई करता ही नही जब्त की ताकीद[1] अबके

लुत्फ कर, ऐ निगहे-यार, कि ग़मवालो ने
हसरते-दिल की उठाई नही तमहीद[2] अबके

चाँद देखा तेरी आँखो मे, न होटो पे शफक
मिलती-जुलती है शबे-गम से तिरी दीद अबके

दिल दुखा है न वह पहला-सा, न जाँ तडपी है
हम ही गाफिल थे कि आई ही नही ईद अबके

फिर से बुझ जायेंगी शम्एँ, जो हवा तेज़ चली
लाके रक्खो सरे-महफिल कोई खुरशीद[3] अबके

कराची
१४ अगस्त, १९५५

---

१ आदेश २ भूमिका ३ सूरज

ग़ज़ल

यू बहार आई है इस बार कि जैसे कासिद[1]
कूच-ए-यार से बे-नैल-ओ-मराम[2] आता है

हर कोई शहर मे फिरता है सलामत-दामन
रिंद मयखाने से शाइस्त-खराम आता है

हवसे-मुतरिब-ओ साकी मे परीशाँ अकसर
अब्र आता है कभी माहे-तमाम आता है

शोकवालो की हजी[3] महफिले-शब मे अब भी
आमदे-सुब्ह की सूरत तिरा नाम आता है

अब भी ए'लाने-सहर करता हुआ मस्त कोई
दागे-दिल करके फरोजाँ सरे-शाम आता है

लाहौर
मार्च, १९५६

---

१ सदेश लानेवाला २ निराश ३ दुखी

५

यह ख़ून की महक है कि लबे-यार की ख़ुशबू
किस राह की जानिब से सबा आती है देखो
गुलशन में बहार आई कि ज़िंदाँ हुआ आबाद
किस सिम्त से नग़्मो की सदा आती है देखो

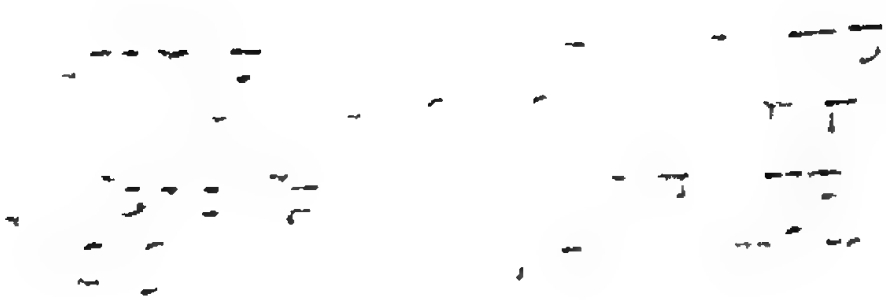

दस्ते-तहे-संग आमद [1]

बेजार फ़ज़ा, दर प-ए-आज़ारे-सबा [2] है
यूं है कि हर इक हमदमे-देरीन [3] ख़फ़ा है

हां, बादकशो, आया है अब रंग पे मौसम
अब सैर के क़ाबिल रविशे-आब-ओ हवा है

उमडी है हर इक सिम्त से इल्ज़ाम की बरसात
छाई हुई हर दांग [4] मलामत [5] की घटा है

वह चीज़ भरी है कि सुलगती है सुराही
हर कासा-ए-मय [6] ज़हरे हलाहल से सिवा [7] है

हां जाम उठाओ कि ब-यादे-लबे-शीरीं
यह ज़हर तो यारों ने कई बार पिया है

इस जज़्बा-ए-दिल की न जज़ा है न सज़ा है
मक़सूदे-गहे-शौक़ [8] वफ़ा है न जफ़ा है

एहसाने-ग़मे दिल जो ग़मे-दिल का सिला [9] है
उस हुस्न का एहसास है जो तेरी अ'ता [10] है

हर सुब्ह गुलिस्तां है तिरा रू-ए-बहारी [11]
हर फूल तिरी याद का नक़्शे कफ़े-पा है

हर भीगी हुई रात तिरी ज़ुल्फ़ की शबनम
ढलता हुआ सूरज तिरे होटों की फ़ज़ा है

---

१ पत्थर के नीचे आया हुआ हाथ २ सबा को तकलीफ़ पहुँचाने पर आमादा ३ पुराना दोस्त ४ दिशा ५ निंदा ६ शराब का प्याला ७ बढ़कर ८ लालसा के मार्ग का लक्ष्य ९ पुरस्कार १० दी हुई चीज़, उपहार। ११ खिला हुआ चेहरा

मयखानो की रौनक है, कभी खानकहो की
अपना लो हवसवालो ने जो रस्म चली है
दिलदारी-ए-चाइ'ज को हमी वाकी हैं वरन
अव शह्र मे हर रिंदे-खराबात वली है

जश्न का दिन

जुनू की याद मनाओ कि जश्न का दिन है
सलीब-ओ-दार[1] सजाओ कि जश्न का दिन है
तरब[3] की बज्म है बदलो दिलो के पैराहन[2]
जिगर के चाक सिलाओ कि जश्न का दिन है
तुनुक-मिजाज है साकी न रंगे-मय देखो
भरे जो शीश, चढाओ कि जश्न का दिन है
तमीजे-रहबर-ओ-रहजन[4] करो न आज के दिन
हर इक से हाथ मिलाओ कि जश्न का दिन है
है इतजारे-मलामत मे नासहो[5] का हुजूम
नजर सँभाल के जाओ कि जश्न का दिन है
बहुत अजीज हो लेकिन शिकस्त दिल यारो
तुम आज याद न आओ कि जश्न का दिन है
वह शोरिशे-गमे-दिल जिसकी लय नही कोई
गजल की धुन मे सुनाओ कि जश्न का दिन है

मार्च १९५७

---

१ सूली और फाँसी २ उल्लास ३ वस्त्र ४ मार्गदर्शक और बटमार का अन्तर ५ उपदेशको।

रात ढलने लगी है सीनो मे
आग सुलगाओ आबगीनो[1] मे
दिले-उ'दशाक की सबर लेना
फूल खिलते हैं इन महीनो मे

आज तनहाई किसी हमदमे-देरी[2] की तरह
करने आई है मिरी साकीगरी शाम ढले
मुतजिर बैठे हैं हम दोनो कि महताब उभरे
और तिरा अ'क्स झलकने लगे हर साये तले

अप्रल १९५७

१ शराब की बोतल २ पुराना दोस्त।

शाम

इस तरह है कि हर इक पेड कोई मंदिर है
कोई उजडा हुआ, बे-नूर पुराना मंदिर
ढूँढता है जो खराबी के बहाने कब से
चाक हर बाम, हर इक दर का दमे-आखिर है
आसमाँ कोई पुरोहित है जो हर शाम तले
जिस्म पर राख मले, माथे पे सिंदूर मले
सरनिगूं[1] बैठा है चुपचाप न जाने कब से

इस तरह है कि पसे-पर्दं कोई साहिर[2] है
जिसने आफाक[3] पे फैलाया है यूँ सहर[4] का दाम[5]
दामने-वक्त से पैवस्त है यूं दामने-शाम
अब कभी शाम बुझेगी न अँधेरा होगा
अब कभी रात ढलेगी न सवेरा होगा

आसमाँ आस लिये है कि यह जादू टूटे
चुप की जंजीर कटे, वक्त का दामन छूटे
दे कोई शख दुहाई, कोई पायल बोले
कोई बुत जागे, कोई साँवली घूंघट खोले

---

१ सर झुकाये २ जादूगर ३ क्षितिज ४ जादू ५ जाल।

शाम

इस तरह है कि हर इक पेड़ कोई मंदिर है
कोई उजड़ा हुआ, बे-नूर पुराना मंदिर
ढूंढता है जो खराबी के बहाने कब से
चाक हर बाम, हर इक दर का दमे-आखिर है
आसमाँ कोई पुरोहित है जो हर बाम तले
जिस्म पर राख मले, माथे पे सिंदूर मले
सरनिगूं[1] बैठा है चुपचाप न जाने कब से

इस तरह है कि पसे-पर्दे कोई साहिर[2] है
जिसने आफाक[3] पे फैलाया है यूं सहर[4] का दाम[5]
दामने-वक्त से पैवस्त है यूं दामने-शाम
अब कभी शाम बुझेगी न अँधेरा होगा
अब कभी रात ढलेगी न सवेरा होगा

आसमाँ आस लिये है कि यह जादू टूटे
चुप की जंजीर कटे, वक्त का दामन छूटे
दे कोई शंख दुहाई, कोई पायल बोले
कोई बुत जागे, कोई साँवली घूंघट खोले

---

१ सर झुकाये २ जादूगर ३ क्षितिज ४ जादू ५ जाल।

तुम यह कहते हो अब कोई चारा नहीं !

तुम यह कहते हो वह जग हो भी चुकी
जिसमे रक्खा नही है किसी ने कदम
कोई उतरा न मैदां मे दुश्मन न हम
कोई सफ[1] बन न पाई न कोई अ'लम[2]
मुतशिर[3] दोस्तो को सदा[4] दे सका
अजनबी दुश्मनो का पता दे सका
तुम यह कहते हो वह जग हो भी चुकी
जिसमे रक्खा नही हमने अब तक कदम

तुम यह कहते हो अब कोई चारा नही
जिस्म खस्ता है, हाथो मे यारा[5] नही

अपने बस का नही वारे-सगे-सितम[6]
वारे - सगे - सितम, वारे - कुहसारे - गम[7]
जिसको छूकर सभी इक तरफ हो गये
बात की बात मे जी-शरफ[8] हो गये

---

१ पात २ झडा ३ बिखरे हुए ४ आवाज ५ ताकत ६ अत्याचार के पत्थर का बोझ ७ दु ख के पहाड का बोझ ८ श्रेयस्कर।

तुम यह कहते हो अब कोई चार नही !

तुम यह कहते हो वह जग हो भी चुकी
जिसमे रक्खा नही है किसी ने कदम
कोई उतरा न मैदा मे दुश्मन न हम
कोई सफ[1] बन न पाई न कोई अ'लम[2]
मुतशिर[3] दोस्तो को सदा[4] दे सका
अजनबी दुश्मनो का पता दे सका
तुम यह कहते हो वह जग हो भी चुकी
जिसमे रक्खा नही हमने अब तक कदम

तुम यह कहते हो अब कोई चारा नही
जिस्म खस्त है, हाथो मे यारा[5] नही

अपने बस का नही वारे-सगे-सितम[6]
वारे - सगे - सितम, वारे - कुहसारे - गम[7]
जिसको छूकर सभी इक तरफ हो गये
बात की बात मे जी-शरफ[8] हो गये

---

१ पाँत २ झडा ३ बिखरे हुए ४ आवाज ५ ताकत ६ अत्याचार के पत्थर का बोझ ७ दु ख के पहाड का बोझ ८ श्रेयस्कर ।

तुम यह कहते हो अब कोई चारा नहीं !

तुम यह कहते हो वह जग हो भी चुकी
जिसमे रक्खा नही है किसी ने कदम
कोई उतरा न मैदां मे दुश्मन न हम
कोई सफ[1] बन न पाई न कोई अ'लम[2]
मुतशिर[3] दोस्तो को सदा[4] दे सका
अजनबी दुश्मनो का पता दे सका
तुम यह कहते हो वह जग हो भी चुकी
जिसमे रक्खा नही हमने अब तक कदम

तुम यह कहते हो अब कोई चारा नही
जिस्म खस्त है, हाथो मे यारा[5] नही

अपने बस का नही बारे-सगे-सितम[6]
बारे - सगे - सितम, बारे - कुहसारे - गम[7]
जिसको छूकर सभी इक तरफ हो गये
बात की बात मे जी-शरफ[8] हो गये

---

१ पात २ झडा ३ बिखरे हुए ४ आवाज ५ ताकत ६ अत्याचार के पत्थर का बाझ ७ दु ख के पहाड का बोझ ८ श्रेयस्कर। —

[illegible] है न सुख़न, अब न हर्फ़ है न पयाम
[illegible] नहीं और जाम बहुत है
[illegible] का मिज़ाज, दर्द का रंग
[illegible] कि दिल उदास बहुत है

[illegible] चारागरो,[1] लाओ लब-ओ-दिल की गवाही
[illegible] करो, साज़ सदा क्यों नहीं देते
[illegible] हाथों को शरमायेगा कब तक
[illegible] प्यालो, मरीज़ों का पता क्यों नहीं देते
[illegible] दिल जब नहीं फ़ज़' किसी का
[illegible] है तो भुला क्यों नहीं देते

[illegible]
[illegible]

न दीद है न सुखन, अब न हर्फ है न पयाम
कोई भी हील-ए-तस्कीन नहीं और आस बहुत है
उम्मीदे-यार, नजर का मिजाज, दर्द का रंग
तुम आज कुछ भी न पूछो कि दिल उदास बहुत है

हाँ नुक्ता वरो,[1] लाओ लब-ओ-दिल की गवाही
हाँ नग्म गरो, साज सदा क्यों नहीं देते
पैमाने-जुनूँ[2] हाथों को शरमायेगा कब तक
दिलवालो, गरेबाँ का पता क्यों नहीं देते
बर्बादी-ए-दिल जब्र नहीं 'फैज' किसी का
वह दुश्मने-जाँ है तो भुला क्यों नहीं देते

लाहौर जेल
३१ दिसंबर, १९५८

---

१ मन की बात जानने वालो २ उन्माद का प्रण ।

न दीद है न सुखन, अब न हर्फ है न पयाम
कोई भी हील-ए-तस्कीन नहीं और आस बहुत है
उम्मीदे-यार, नज़र का मिज़ाज, दर्द का रंग
तुम आज कुछ भी न पूछो कि दिल उदास बहुत है

हाँ नुक्ता वरो,[1] लाओ लब-ओ-दिल की गवाही
हाँ नग्मा गरो, साज सदा क्यों नहीं देते
पैमाने-जुनूं[2] हाथों को शरमायेगा कब तक
दिलवालो, गरेबां का पता क्यों नहीं देते
बर्बादी-ए-दिल जब्र नहीं 'फैज़' किसी का
वह दुश्मने-जाँ है तो भुला क्यों नहीं देते

लाहौर जेल
३१ दिसंबर, १९५८

१ मन की बात जानने वाले २ उन्माद का प्रण ।

वे-दम हुए बीमार, दवा क्यो नही देते
तुम अच्छे मसीहा हो शफा क्यो नही देते
दर्दे शबे - हिज्राँ की जज़ा[1] क्यो नही देते
खूने-दिले - वहशी का सिला[2] क्यो नही देते
मिट जायेगी मखलूक तो इसाफ करोगे
मुसिफ हो- तो अब हश्र[3] उठा क्यो नही देते

१ पुरस्कार २ ईनाम ३ प्रलय का दिन।

न दीद है न सुखन, अब न हर्फ है न पयाम
कोई भी हील-ए-तस्कीन नहीं और आस बहुत है
उम्मीदे-यार, नज़र का मिज़ाज, दर्द का रंग
तुम आज कुछ भी न पूछो कि दिल उदास बहुत है

हाँ नुक्ता वरो,[1] लाओ लब-ओ-दिल की गवाही
हाँ नग्म गरो, साज़ सदा क्यों नहीं देते
पैमाने-जुनूं[2] हाथों को शरमायेगा कब तक
दिलवालो, गरेबाँ का पता क्यों नहीं देते
बर्बादी-ए दिल जब्र नहीं 'फैज़' किसी का
वह दुश्मने-जाँ है तो भुला क्यों नहीं देते

लाहौर जेल
३१ दिसंबर, १९५८

---

१ मन की बात जानने वाली २ उन्माद का प्रण ।

न दीद है न सुखन, अब न हर्फ है न पयाम
कोई भी हील -ए-तस्कीन नही और आस बहुत है
उम्मीदे-यार, नजर का मिजाज, दर्द का रंग
तुम आज कुछ भी न पूछो कि दिल उदास बहुत है

हाँ नुक्ता वरो,[1] लाओ लब-ओ-दिल की गवाही
हा नग्म गरो, साज सदा क्यो नही देते
पैमाने-जुनूँ[2] हाथो को शरमायेगा कब तक
दिलवालो, गरेवा का पता क्यो नही देते
बर्बादी-ए-दिल जब्र नही 'फैज' किसी का
वह दुश्मने-जाँ है तो भुला क्यो नही देते

लाहौर जेल
३१ दिसबर, १९५८

---

१ मम की बात जानने वालो २ उन्माद का प्रण ।

वे-दम हुए बीमार, दवा क्यो नही देते
तुम अच्छे मसीहा हो शफा क्यो नही देते
दर्दे शबे-हिज्राँ की जजा[1] क्यो नही देते
खूने दिले-वहशी का सिला[2] क्यो नही देते
मिट जायेगी मखलूक तो इसाफ करोगे
मुसिफ हो तो अब हश्र[3] उठा क्यो नही देते

१ पुरस्कार २ ईनाम ३ प्रलय का दिन।

शोरिशे ज़ंजीर बिस्मिल्लाह

हुई फिर इम्तहाने-इ'श्क की तदबीर बिस्मिल्लाह
हर इक जानिब मचा कुहरामे-दार-ओ गीर बिस्मिल्लाह
गली-कूचो मे बिखरी शोरिशे-ज़ंजीर बिस्मिल्लाह

दरे-ज़िंदाँ पे बुलवाये गये फिर[1] से जुनूवाले
दरीद[1] दामनोवाले, परीशा गेसुओवाले
जहाँ मे दर्दे-दिल की फिर हुई तौकीर[2] बिस्मिल्लाह
हुई फिर इम्तहाने-इ'श्क की तदबीर बिस्मिल्लाह

गिनो सब दाग दिल के, हसरते शौकी निगाहो की
सरे-दरबार पुर्सिश[3] हो रही है फिर गुनाहो की
करो यारो शुमारे-नाल-ए-शबगीर बिस्मिल्लाह

सितम की दास्ताँ कुश्त दिलो का माजरा कहिये
जो ज़ेरे-लब न कहते थे वह सब कुछ बरमला[4] कहिये
मुसिर है मुहतसिब राज़े-शहीदाने-वफा कहिये
लगी है हर्फे नागुफ्त[5] पर अब ता'ज़ीर[6] बिस्मिल्लाह
सरे-मकतल चलो बे-जहमते-तकसीर[7] बिस्मिल्लाह
हुई फिर इम्तहाने-इ'श्क की तदबीर बिस्मिल्लाह

लाहौर जेल
जनवरी १९५९

---

१ फटे हुए २ गौरव, गरिमा ३ पूछ-गछ ४ खुलकर, मुह पर
५ अनकही बात ६ पाबदी ७ अपराध करने का कष्ट किये बिना।

आज बाज़ार मे पा-ब-जौलाँ चलो

चश्मे नम, जाने-शोरीदः[1] काफी नही
तुहमते - इ'श्के - पोशीद[2] काफी नही
आज बाज़ार मे पा-ब-जौलाँ[3] चलो

दस्त-अफ्शाँ[4] चलो, मस्त-ओ-रक्साँ[5] चलो
खाक बर-सर चलो, खूँ - ब - दामाँ चलो
राह तकता है सब शह्‌रे-जानाँ चलो

हाकिमे - शह्‌र भी, मजमए'-आ'म भी
तीरे, इल्ज़ाम भी, सगे - दुश्नाम[6] भी
सुब्हे - नाशाद भी, रोज़े - नाकाम भी

इनका दमसाज़[7] अपने सिवा कौन है
शह्‌रे-जानाँ मे अब बा-सफा[8] कौन है
दस्ते-कातिल के शायाँ[9] रहा कौन है

रख्ते दिल[10] बाँध लो दिलफिगारो चलो
फिर हमी कत्ल हो आयें यारो चलो

लाहौर जेल
११ फरवरी १९५९

---

१ उद्विग्न प्राण २ गुप्त प्रेम का लाछन ३ पैर म जजीर डाले ४ हाथ म अफ्शाँ लेकर ५ मस्त और नाचत हुए ६ गाली का पत्थर ७ हमदर्द ८ पाक पवित्र, शुद्ध ९ योग्य १० दिल का सफर का सामान।

ग़ज़ल

यह जफा-ए-गम का चार, वह नजाते-दिल का आ'लम
तिरा हुस्न दस्ते-ई'सा[1], तिरी याद रू-ए-मरियम[2]

दिल-ओ-जां फिदा-ए-राहे[3] कभी आके देख हमदम
सरे-कू-ए-दिलफिगारां[4] शबे-आरजू का आ'लम

तिरी दीद से सिवा है तिरे शौक मे बहारां
वह जमी जहां गिरी है तिरे गेसुओ की शबनम

ये अजब कयामतें हैं तिरी रहगुजर मे गुजरां
न हुआ कि मरमिटे हम, न हुआ कि जी उठें हम

लो सुनी गई हमारी, यूं फिरे हैं दिन कि फिर से
वही गोश-ए-कफस[5] है, वही फस्ले-गुल का मातम

लाहौर जेल
फ़रवरी, १९५९

---

१ ईसा का हाथ २ मरियम का चेहरा ३ राह मे निछावर ४ टूटे हुए दिल वालो का गली मे ५ पिंजरे का कोना।

कंदे-तनहाई

दूर आफाक[1] पे लहराई कोई नूर की लहर
ख्वाब ही ख्वाब हैं, बेदार हुआ दर्द का शहर
ख्वाब ही ख्वाब हैं, नज़र बे-ताब होने लगी
अ'दमाबादे - जुदाई[2] मे सहर होने लगी
कास-ए-दिल[3] मे भरी अपनी सुबूही[4] मैंने
घोलकर तल्खी-ए-दीरोज़[5] मे इमरोज़ का ज़हर

दूर आफाक पे लहराई कोई नूर की लहर
आख से दूर किसी सुब्ह की तमहीद[6] लिये
कोई नग्म, कोई खुशबू, कोई काफिर सूरत
अ'दमाबादे - जुदाई मे मुसाफिर सूरत
बे-खबर गुज़री परीशानी-ए-उम्मीद लिये
घोलकर तल्खी-ए-दीरोज़ मे इमरोज़ का ज़हर
हसरते - रोज़े - मुलाकात रकम की मैंने
देस-परदेस के यारानें-कदहख्वार[7] के नाम
हुस्ने-आफाक, जमाले-लब-ओ'रुखसार के नाम

जेल लाहौर किला
मार्च १९५९

---

१ क्षितिज २ विरह का यमलोक ३ हृदय का भिक्षा-पात्र ४ सुबह पीने की शराब ५ बीते दिनों की कड़वाहट ६ भूमिका ७ शराब पीनेवाले दोस्त ।

हम खस्ता तनों से मुहतासिबो क्या माल मनाल[1] का पूछते हो
जो उ'म्र मे हमने भर पाया सब सामने लाये देते हैं
दामन मे है मुश्ते-खाके जिगर,[2] साग़र मे है खूने-हसरते मय[3]
लो हमने दामन झाड दिया, लो जाम उलटाये देते हैं

किला लाहौर
मार्च १९५९

१ सपत्ति २ जिगर की मुट्ठी भर खाक ३ शराब की लालसा का खून

हम्द

मलिक - ए - शह्‌रे - जिंदगी तेरा
शुक्र किस तौर से अदा कीजे
दौलते-दिल का कुछ शुमार नहीं
तंगदस्ती का क्या गिला कीजे

जो तिरे हुस्न के फकीर हुए
उनको तशवीशे - रोजगार[1] कहाँ
दर्द बेचेंगे गीत गायेंगे
इससे खुशवक्त कारोबार कहाँ

जाम छलका तो जम गई महफिल
मिन्नते - लुत्फे - गमगुसार[2] किसे ?
अश्क टपका तो खिल गया गुलशन
रंजे - कमजर्फी-ए-बहार[3] किसे ?

खुशनसीबी है कि चश्म-ओ-दिल की मुराद
दैर में है न खानकाह में है
हम कहाँ किस्मत आजमाने जायें
हर सनम अपनी बारगाह में है

कौन ऐसा गनी[4] है जिससे कोई
नक्दे-शम्स ओ कमर[5] की बात करे
जिसको शौके - नबर्द[6] हो हमसे
जाये तस्खीरे - कायनात[7] करे

न १९५९

---

१ काम की चिंता २ सहानुभूति करने वाले के आनंद की प्रार्थना बहार के आछेपन का दुःख ४ सूरमा ५ चाँद सूरज पेश करना ६ लड़ाई का शौक ७ सृष्टि विजय।

गजल

तिरे गम को जाँ की तलाश थी, तिरे जाँ-निसार चले गये
तिरी रह मे करते थे सर तलब, सरे-रहगुज़ार चले गये

तिरी कज-अदाई[1] से हारके शबे-इतजार चली गयी
मिरे जब्ने-हाल[2] से रूठ कर मिरे गमगुसार चले गये

न सवाले-वस्ल, न अ'र्जे-गम, न हिकायतें न शिकायतें
तिरे अ'ह्द[3] मे दिले-जार के सभी इख्तियार चले गये

यह हमी थे जिनके लिबास पर सरे-रू सियाही लिखी गयी
यही दाग थे जो सजाके हम सरे-बज्मे-यार चले गये

न रहा जुनूने-रुखे-वफा, यह रसन यह दार करोगे क्या
जिन्हे जुर्मे-इ'श्क पे नाज़ था वह गुनहगार चले गये

जुलाई १९५९

---

१ बाकी अदाएँ दिखाना २ अपनी दशा पर सतोष ३ युग ।

आ गयी फस्ले सुकूं चाक गरेबाँवालो
सिल गये होट कोई जख्म सिले या न सिले
दोस्तो बज्म मजाओ कि बहार आई है
खिल गये जख्म, कोई फूल खिले या न खिले

अप्रैल १९५९

ढलती है मौजे मय की तरह रात इन दिनो
खिलती है सुब्ह गुल की तरह रंग ओ बू से पुर
वीरां हैं जाम, पास[1] करो कुछ बहार का
दिल आरजू से पुर करो, आँखें लहू से पुर

---

१ खयाल, ध्यान ।

गज़ल

कब ठहरेगा दर्द ऐ दिल, कब रात बसर होगी
सुनते थे वह आयेंगे, सुनते थे सहर[1] होगी

कब जान लहू होगी, कब अश्क गुहर[2] होगा
किस दिन तिरी शनवाई ऐ दीद-ए-तर होगी

कब महकेगी फ़स्ले गुल, कब बहकेगा मयखान
कब सुब्हे-सुखन होगी, कब शामे-नजर होगी

वाइ'ज[3] है न ज़ाहिद[4] है, नासह है न कातिल है
अब शह्र मे यारो की किस तरह बसर होगी

कब तक अभी रह देख ऐ कामते जानान[5]
कब हश्र मुअ'य्यन[6] है तुझको तो खबर होगी

दिसबर १९५९

---

१ प्रभात २ मोती ३ धर्मोपदेशक ४ नियम-सयम का पालन करने वाला ५ प्रेमिका का डीलडौल (शरीर) ६ निश्चित ।

दो मर्सिए

(१)

मुलाकात मिरी

सारी दीवार सियह हो गयी ता हल्क ए-बाम[1]
रास्ते बुझ गये, रुख्सत हुए रहगीर तमाम
अपनी तनहाई से गोया हुई फिर रात मिरी
हो न हो आज फिर आई है मुलाकात मिरी
इक हथेली पे हिना, एक हथेली पे लहू
इक नजर जह्र लिये, एक नजर में दारू

देर से मजिले-दिल में कोई आया न गया
फुरकते-दर्द में बे-आब हुआ तरत-ए दाग
किससे कहिये कि भरे रग से जरमों के अयाग[2]
और फिर खुद ही चली आई मुलाकात मिरी
आशना[3] मौत जो दुश्मन भी है गमख्वार भी है
वह जो हम लोगों की कातिल भी है दिलदार भी है

---

१ ऊपर के घेरे तक २ सुरा पात्र ३ परिचित।

(२)

खत्म हुई बारिशे-संग

नागहाँ[1] आज मिरे तारे-नज़र से कटकर
टुकडे-टुकडे हुए आफाक[2] पे खुरशीद-आ कमर[3]
अब किसी मिस्त अँधेरा न उजाला होगा
बुझ गई दिल की तरह राहे-वफा मेरे बा'द
दोस्तो, काफिल-ए-दर्द का अब क्या होगा

अब कोई और करे परवरिशे-गुलशने-गम
दोस्तो, खत्म हुई दीद-ए-तर की शबनम
थम गया शोरे-जुनूं, खत्म हुई बारिशे-संग[4]
खाके-रह आज लिये है लबे-दिलदार का रंग
कू-ए-जानाँ मे खुला मेरे लहू का परचम[5]
देखिये, देते है किस-किसको सदा मेरे बा'द
"कौन होता है हरीफे-मये मर्दअफगने-इ'श्क[6]
है मुकर्रर[7] लबे-साकी पे सिला मेरे बा'द"

नवंबर १९६०

---

१ अचानक २ क्षितिज ३ सूरज चाद ४ पथराव ५ झडा
६ मर्दों को पछाड देने वाली इश्क की शराब से टक्कर लेने वाला ७ दुबारा।

इन दिनों रस्म-ओ-रहे-शह्‌रे-निगाराँ क्या है
कासिदा,[1] कीमते-गुलगश्ते-बहाराँ क्या है
कू-ए-जानाँ है कि मकतल है कि मयखान है
आजकल सूरते-बर्बादी-ए-यारां क्या है

---

१ सदेशवाहक

आज यू मौज दर-मौज गम थम गया,
इस तरह गमजदो को करार आ गया
जैसे खुशबू ए-जुल्फे-बहार आ गयी,
जैसे पैगामे-दीदारे-यार आ गया

जिसकी दीद-ओ तलब वह्म समझे थे हम,
रू-ब-रू फिर सरे-रहगुजार आ गया
सुब्हे-फर्दा[1] को फिर दिल तरसने लगा,
उम्रे-रफ्ता[2] तिरा ए'तबार आ गया

रत बदलने लगी रगे-दिल देखना,
रगे-गुलशन से अब हाल खुलता नही
जुल्म छलका कोई या कोई गुल खिला,
अश्क उमडे कि अब्रे-बहार आ गया

खूने-उ'श्शाक[3] से जाम भरने लगे,
दिल सुलगने लगे, दाग जलने लगे
महफिले-दर्द फिर रग पर आ गई,
फिर शबे आरजू पर निखार आ गया

सरफरोशी के अदाज बदले गये,
दा'वते-कत्ल पर मकतले शह्र मे
डालकर कोई गर्दन मे तौक आ गया,
लादकर कोई काधे पे दार[4] आ गया

'फैज' क्या जानिये यार किस आस पर,
मुतजिर है कि लायेगा कोई खबर
मयकशो पर हुआ मुहतसिब मेहरबाँ,
दिलफिगारो पे कातिल को प्यार आ गया

---

१ आनेवाला सवेरा २ बीता जीवन ३ प्रेमियो का खून ४ फासी, सूली ।

कहाँ जाओगे

और कुछ देर मे लुट जायेगा हर बाम पे चाँद
अ'क्स खो जायेंगे आईने तरस जायेंगे
अ'श के दीद-नमनाक से बारी-बारी
सब सितारे सरे-खाशाक[1] बरस जायेंगे
आस के मारे थके-हारे शबिस्तानो[2] मे
अपनी तनहाई समेटेगा, बिछायेगा कोई
बे-वफाई की घडी, तर्के-मुदारात[3] का वक्त
इस घडी अपने सिवा याद न आयेगा कोई
तर्के दुनिया का समा, खत्मे-मुलाकात का वक्त
इस घडी ऐ दिले-आवारा कहाँ जाओगे
इस घडी कोई किसी का भी नही, रहने दो
कोई इस वक्त मिलेगा ही नही रहने दो
और मिलेगा भी तो इस तौर कि पछताओगे
इस घडी ऐ दिले-आवारा कहाँ जाओगे
और कुछ देर ठहर जाओ कि फिर नश्तरे-सुब्ह
जख्म की तरह हर इक आँख को बेदार करे
और हर कुश्ता ए-वामाँदगी-ए-आखिरे-शब[4]
भूलकर साअ'ते-दरमादगी-ए-आखिरे-शब[5]
जान-पहचान मुलाकात पे इसरार[6] करे

दिसम्बर १९६१

---

१ घास फूस पर २ शयन-कक्ष ३ आदर सम्मान को त्यागना ४ पिछले पहर की शिथिलता का मारा हुआ ५ पिछले पहर की बेबसी का समय ६ आग्रह।

गजल

यक-ब यक शोरिशे-फुगाँ[1] की तरह
फस्ले गुल आई इम्तहाँ की तरह

सह्ने गुलशन में बहरे-मुश्ताका[2]
हर रविश खिंच गई कमाँ की तरह

फिर लहू से हर एक कास-ए दाग[3]
पुर हुआ जामे-अगवाँ[4] की तरह

याद आया जुनूने गुमगश्त[5]
बे-तलब[6] कर्जे-दोस्ता की तरह

जाने किस पर हो मेह्रबाँ कातिल
बे सबब मर्गे नागहाँ[7] की तरह

हर सदा पर लगे है कान यहाँ
दिल सँभाले रहो जुबाँ की तरह

मई १९६२

---

१ रोने की आवाज़ २ इच्छुको के लिए ३ दाग (घाव) का भिक्षा पात्र ४ लाल जाम ५ खोया हुआ उन्माद ६ जो मागा न जाये ७ अचानक मौत।

शह्‌रे-यारां

आसमां की गोद मे दम तोडता है तिफ्ले-अब्र[1]
जम रहा है अब्र के होटो पे खू-आलूद कफ

बुझते-बुझते बुझ गई है अ'र्श[2] के हुजरो[3] मे आग
धीरे-धीरे बिछ रही है मातमी तारो की सफ

ऐ सबा, शायद तेरे हमराह यह खौफनाक शाम
सर झुकाये जा रही है शह्‌रे-यारां की तरफ

शह्‌रे-यारां जिसमे इस दम ढूढती फिरती है मौत
शेरदिल बांको मे अपने तीर-ओ नश्तर के हदफ[4]

इक तरफ बजती ह जोशे-जीस्त[5] की शहनाइयाँ
इक तरफ चिंघाडते है अह्‌रमन[6] के तब्ल-ओ दफ

जाके कहना, ऐ सबा, बा'द अज सलामे दोस्ती
आज शब जिस दम गुजर हो शह्‌रे-यारां की तरफ

दश्ते-शब मे इस घडी चुपचाप है शायद रवाँ
साकी-ए-सुब्हे-तरब[7], नग्म -व लब[8], सागर-ब-कफ[9]

वह पहुँच जाये तो होगी फिर से बरपा अजुमन
और तरतीबे-मुकाम-ओ-मनसब-ओ-जाह-ओ शरफ[10]

---

१ बादल का बालक २ आकाश ३ कोठरियो ४ लक्ष्य, निशाने ५ जीवन उत्साह ६ बदी का खुदा ७ उल्लास के प्रभात का साकी ८ होटो पर गीत लिये ९ हाथ मे सुरा पात्र लिये १० स्थान, पदवी, रुतबे और श्रेष्ठ का क्रम ।

गज़ल

न गँवाओ नावके-नीमकश[1], दिले-रेज-रेज गँवा दिया
जो बचे हैं सग समेट लो, तने दाग-दाग लुटा दिया

मिरे चार गरो को नवेद[2] हो, सफे-दुश्मनाँ को खबर करो
जो वह कज रखते थे जान पर वह हिसाब आज चुका दिया

करो कज जबी पे सरे-कफन, मिरे कातिलो को गुमाँ न हो
कि गुरूरे-इ'श्क का बाकपन पसे-मग[3] हमने भुला दिया

उधर एक हर्फ कि कुश्तनी[4], यहाँ लाख उ'ज्र[5] था गुफ्तनी[6]
जो कहा तो सुनके उडा दिया जो लिखा तो पढके मिटा दिया

जो रुके तो कोहे-गराँ[7] थे हम, जो चले तो जाँ से गुजर गये
रहे-यार हमने कदम-कदम तुझे यादगार बना दिया

---

१ आधा तिरछा हुआ तीर २ शुभसमाचार ३ मरने के बाद ४ मार देने योग्य ५ विवशता ६ कहने योग्य ७ बहुत बड़ा पहाड़।

खुशा जमानते-गम

दयारे-यार तिरी जोशिशे-जुनूँ पे सलाम
मिरे वतन तिरे दामाने-तार-तार की खैर
रहे-यकी[1] तिरी अफशाने-खाक-ओ खूं पे सलाम
मिरे चमन तिरे जख्मों के लाल जार की खैर
हर एक खान-ए-वीराँ[2] की तीरगी पे सलाम
हर एक खाक-ब-सर,[3] खानमाँ-खराब[4] की खैर
हर एक कुश्त-ए-नाहक[5] की खामशी पे सलाम
हर एक दीद-ए-पुरनम की आब-ओ ताब की खैर
रवाँ रहे यह रवायत, खुशा[6] जमानते-गम
निशाते-खत्मे-गमे-कायनात[7] से पहले
हर एक के साथ रहे दौलते-अमानते-गम
कोई नजात न पाये नजात से पहले
सुकूं मिले न कभी तेरे पाफिगारों[8] को
जमाले-खूने सरे-खार को नजर न लगे
अमाँ मिले न कहीं तेरे जानिसारों को
जलाले-फर्के-सरे-दार[9] को नजर न लगे

लदन, १९६२

---

१ आस्था का मार्ग २ उजडा घर ३ जिसके सर म धूल हो ४ जिसका घर उजड चुका हो ५ अन्याय का मारा हुआ ६ धन्य है ७ ससार के दु ख के अत का उल्लास ८ घायल पैरो वाले ९ फाँसी के माथ का तज ।

जब तेरी समदर आँखो मे

(गीत)

यह धूप किनारा, शाम ढले
मिलते हैं दोनो वक्त जहाँ

जो रात न दिन, जो आज न कल
पल भर को अमर, पल भर मे धुआँ
इस धूप किनारे, पल दो पल
होटो की लपक
बाहो की छनक
यह मेल हमारा, झूठ न सच
क्यो रार करो, क्यो दोष धरो
किस कारन झूठी बात करो
जब तेरी समदर आखो मे
इस शाम का सूरज डूबेगा
सुख सोयेंगे घर-दर वाले
और राही अपनी राह लेगा

लदन से, १९६३

रग है दिल का मिरे

तुम न आये थे तो हर चीज वही थी कि जो है,
आसमा हद्दे-नजर, राहगुजर राहगुजर, शीश -ए-मय शीश -ए-मय
और अब शीश -ए-मय, राहगुजर, रंगे-फलक
रग है दिल का मिरे "खूने-जिगर होने तक"
चपई रग कभी राहते-दीदार[1] का रग
सुमई रग कि है साअ'ते-बेजार का रग
जद पत्तो का, खस-ओ-खार का रग
सुख फूलो का, दहकते हुए गुलजार का रग,
जह्र का रग, लहू का रग, शबे-तार[2] का रग,
आसमा, राहगुजर, शीश -ए-मय
कोई भीगा हुआ दामन, कोई दुखती हुई रग
कोई हर लहज बदलता हुआ आईन है

अब जो आये हो तो ठहरो कि कोई रग, कोई रुत, कोई शै
एक जगह पर ठहरे
फिर से इक बार हर इक चीज वही हो कि जो है
आसमाँ हद्दे-नजर, राहगुजर राहगुजर, शीश -ए-मय शीश -ए-मय

मास्को
अगस्त १९६३

---

१ दर्शन का सुख २ काली रात ।

पास रहो

तुम मिरे पास रहो,
मेरे कातिल, मिरे दिलदार, मिरे पास रहो,
जिस घडी रात चले,
आसमानो का लहू पी के सियह रात चले,
मरहमे मुश्क[1] लिये नश्तरे-अलमास[2] लिये,
बैन करती हुई, हँसती हुई, गाती निकले
दर्द के कासनी पाजेब बजाती निकले
जिस घडी सीनो मे डूबे हुए दिल
आस्तीनो मे निहाँ[3] हाथो की रह तकने लगें,
आस लिये,
और बच्चो के बिलकने की तरह कुलकुले मय[4]
बहरे-नासूदगी[5] मचले तो मनाये न मने
जब कोई बात बनाये न बने
जब न कोई बात चले,
जिस घडी रात चले,
जिस घडी मातमी, सुनसान, सियह रात चले
पास रहो
मेरे कातिल, मिरे दिलदार, मिरे पास रहो

मास्को
१९६३

---

१ सुगंध का मरहम २ हीरे का नश्तर (फोडा चीरने का चाकू) ३ छुपा हुआ ४ शराब ढलने का कलकल स्वर ५ निराशा के कारण।

गजल

तिरी उम्मीद, तिरा इंतजार जब से है
न शब को दिन से शिकायत, न दिन को शब से है

किसी का दर्द हो करते है तेरे नाम रकम
गिला है जो भी किसी से तिरे सबब से है

हुआ है जब से दिले-नासुबूर बेकाबू
कलाम तुझसे नजर को बडे अदब से है

अगर शरर[1] है तो भडके, जो फूल है तो खिले
तरह-तरह की तलब, तेरे रंगे-लब से है

कहाँ गये शबे-फुरकत[2] के जागने वाले
सितारे-ए-सहरी[3] हमकलाम कब से है

बंबई
१९५७

---

१ चिंगारी २ विरह की रात ३ सुबह का सितारा।

गज़ल

हर सिम्त परीशाँ[1] तिरी आमद के करीने
धोखे दिये क्या-क्या हमें वादे-सहरी[2] ने

हर मंजिले-गुरबत[3] पे गुमाँ होता है घर का
बहलाया है हर गाम बहुत दर-ब-दरी ने

थे बज्म में सब दूदे-सरे-बज्म[4] से शादाँ
बेकार जलाया हमें रोशननजरी ने

मयखाने में आ'जिज आजुर्दादिली[5] से
मस्जिद का न रक्खा आशुफ्तसरी[6] ने

यह जाम-ए सदचाक[7] बदल लेने में क्या था
मुहलत ही न दी 'फैज़' कभी बखियागरी ने

लंदन
१९६२

---

१ बिखरे हुए २ सुबह की हवा ३ परदेस की मंजिल ४ महफिल पर छाया हुआ धुआँ ५ दिल का दुखी होना ६ सिरफिरापन ७ सौ जगह से फटा हुआ कपड़ा।

ग़ज़ल

शरहे-फ़िराक़[1], मदहे-लबे-मुश्कबू[2] करें
ग़ुरबतकदे[3] मे किसने तिरी गुफ्तगू करें

यार-आशना[4] नही कोई टकराये किससे जाम
किस दिलरुबा के नाम पे खाली सुबू[5] करें

सीने पे हाथ है, न नज़र को तलाशे-बाम
दिल साथ दे तो आज गमे आरज़ू करें

कब तक सुनेगी रात, कहाँ तक सुनायें हम
शिकवे गिले सब आज तिरे रू-ब-रू करें

हमदम, हदीसे कू ए-मलामत[6] सुनाइयो
दिल को लहू करें कि गरेबाँ रफ़ू करें

आशुफ्त सर[7] हैं, मुहतसिबो,[8] मुह न आइयो
सर बेच दें तो फिक्रे-दिल-ओ-जाँ अ'दू[9] करें

"तरदामनी[10] पे शेख, हमारी न जाइयो
दामन निचोड दें तो फरिश्ते वज़ू करें"

---

१ विरह की व्याख्या २ सुगधित होठो की प्रशसा ३ परदेस ४ यार से परिचित ५ सुरा पात्र ६ निंदा की गली की चर्चा ७ सिरफिरे ८ प्रतिबध लगाने वालो ९ दुश्मन १० दामन का भीगा होना (गुनहगार होने का चिह्न)।

मंजर

रहगुज़र, साये, शजर[1], मंजिल-ओ-दर, हल्क ए-बाम
बाम पर सीन-ए-महताब[2] खुला, आहिस्त
जिस तरह खोले कोई बंदे-क़बा, आहिस्त
हल्क-ए-बाम तले, मायो का ठहरा हुआ नील
नील की झील,
झील मे चुपके से तैरा, किसी पत्ते का हुबाव
एक पल तैरा, चला, फूट गया, आहिस्त
बहुत आहिस्त, बहुत हल्का, खुनुक[3] रंगे शराब
मेरे शीशे मे ढला, आहिस्त
शीश-ओ-जाम, सुराही, तेरे हाथो के गुलाब
जिम तरह दूर किसी रबाब का नक्श
आप ही आप बना, और मिटा, आहिस्त

दिल ने दुहराया कोई हर्फे वफा, आहिस्त
तुमने कहा, "आहिस्त !"
चाँद ने झुक के कहा
"और ज़रा आहिस्त !"

मास्को
१९६४

---

१ पेड २ चांद का सीना ३ शीतल ।

६
नई नज्में और ग़ज़लें

ग़ज़ल

अब बज़्मे-सुख़न सुहबते-सोख़्तगाँ[1] है
अब हल्क़-ए-मय[2] तायफ़-ए-बेतलबाँ[3] है

हम सहल तलब कौनसे फ़रहाद थे, लेकिन
अब शह्र में तेरे कोई हम सा भी कहाँ है

घर रहिये तो वीरानी-ए-दिल खाने को आवे
रह चलिये तो हर गाम पे ग़ोग़ा-ए-सगाँ[4] है

है साहबे-इंसाफ़, ख़ुद इंसाफ़ का तालिब
मुहर उसकी है, मीज़ान[5] ब-दस्ते-दिगराँ[6] है

अरबाबे-जुनूँ[7] यक-ब-दिगर[8] दस्त-ओ-गरेबाँ[9]
और जेशे-हवस[10] दूर से नज़्ज़ारकुनाँ है

---

१ जले हुओं का साथ २ मदिरा का क्षेत्र ३ उन लोगों की मंडली जिन्हें कुछ नहीं चाहिए ४ कुत्तों का शोर ५ तराज़ू ६ दूसरों के हाथ में ७ उन्माद वाले ८ एक दूसरे से ९ गरेबाँ में हाथ डाले हुए, लड़ते हुए १० कामनाओं की फ़ौज।

कतअ'

दीवारे-शब और अक्से-रुखे-यार सामने
फिर दिल के आईने से लहू फूटने लगा
फिर वज्ए एहतियात[1] से धुंधला गई नजर
फिर जब्ते आरजू[2] से बदन टूटने लगा

---

१ सावधानी २— का दमन।

ग़ज़ल

किये आरज़ू से पैमाँ[1], जो मआल[2] तक न पहुँचे
शब-ओ-रोज़े-आशनाई, मह-ओ-साल तक न पहुँचे

वह नज़र वहम न पहुँची कि मुहीते हुस्न[3] करते
तिरी दीद के वसीले खद्द-ओ-खाल तक न पहुँचे

वही चश्म-ए-बका[4] था, जिसे सब सराब[5] समझे
वही ख्वाब मो'तबर[6] थे, जो खयाल तक न पहुँचे

तिरा लुत्फ[7] वजहे-तस्की[8], न करारे-शरहे-गम[9] से
कि है दिल मे वह गिले भी, जो मलाल तक न पहुँचे

कोई यार जाँ से गुज़रा, कोई होश से न गुजरा
नदीमे-यक-दो-सागर[10], मिरे हाल तक न पहुँचे

'फैज' दिल जलायें, करें फिर से अर्जे-जानाँ[11]
तक आये, पे सवाल तक न पहुँचे

१ म बांधना ४ जीवन धारा
पीडा की व्याख्या ९ एक-

क़तआ'

दीवारे-ग़म और अक्से-रुख़े-यार सामने
फिर दिल के आईने में लहू फूटने लगा
फिर वज्ए-एहतियात[1] से धुंधला गई नज़र
फिर जब्ते-आरज़ू[2] से बदन टूटने लगा

१ [illegible] २ [illegible]

गज़ल

किये आरज़ू से पैमाँ[1], जो मआल[2] तक न पहुँचे
शब-ओ-रोज़े-आशनाई, मह-ओ-साल तक न पहुँचे

वह नज़र वहम न पहुँची कि मुहीते-हुस्न[3] करते
तिरी दीद के वसीले खद्-ओ खाल तक न पहुँचे

वही चश्म-ए-वका[4] था, जिसे सब सराब[5] समझे
वही ख्वाब मो'तबर[6] थे, जो खयाल तक न पहुँचे

तिरा लुत्फ[7] वज्हे-तस्की[8], न करारे शरहे गम[9] से
कि हैं दिल मे वह गिले भी, जो मलाल तक न पहुँचे

कोई यार जाँ से गुज़रा, कोई होश से न गुज़रा
ये नदीमे-यक-दो-सागर[10], मिरे हाल तक न पहुँचे

चलो 'फैज़' दिल जलायें, करे फिर से अर्जे-जानाँ[11]
वह सुखन जो लब तक आये, पे सवाल तक न पहुँचे

---

१ प्रण २ परिणाम ३ रूप के घेरे म बाधना ४ जीवन धारा ५ मृगतृष्णा ६ कृपा ७ सान्त्वना का कारण ८ पीडा की व्याख्या ९ एक-दो जाम पीने वाले १० प्रेमिका से कहना।

दीद -ए-बीना

फिर बक[1] फरोजाँ[2] है, सरे-वादी-ए-सीना[3]
फिर रग पे है शो'ल -ए-रुखसारे-हकीकत[4]
पैगामे - अजल,[5] दावते - दीदारे - हकीकत[6]
ऐ दीद -ए-बीना[7]
अब वक्त है दीदार का, दम है कि नही है
ऐ जज्ब -ए-दिल, दिल का भरम है कि नही है
अब कातिले-जाँ चार -गरे-कुल्फते-गम[8] है
गुलजारे-इरम,[9] परतवे-सहरा-ए-अ'दम[10] है
पिंदारे - जुनूं,[11] हौसल - ए - राहे-अ'दम[12]
है कि नही है

(२)

फिर बर्क फरोजाँ है सरे-वादी ए-सीना
ऐ दीद -ए-बीना
फिर दिल को मुसफ्फा[13] करो, इस लौह पे शायद
मावैने-मन-ओ-तू,[14] नया पैमाँ कोई उतरे
अब रस्मे-सितम, हिक्मते-खासाने-जमी[15] है
ताईदे-सितम,[16] मसलहते-मुफ्ती-ए-दी[17] है
अब सदियो के इकरारे-इताअ'त[18] को बदलने
लाजिम है कि इकार का फरमाँ कोई उतरे

---

१ बिजली २ चमकती हुई ३ सीना की घाटी मे, जहाँ हजरत मूसा को तूर का जल्वा हुआ था ४ सत्य के गाल की लपट ५ मौत का सदेश ६ सत्य के दर्शन का निमत्रण ७ देखने वाली आँख ८ दु ख की पीडा का इलाज करने वाला ९ स्वग के उद्यान की नकल पर बनाया हुआ शद्दाद का बाग १० स्वग के उद्यान की परछाइ ११ उन्माद का अभिमान १२ स्वग लोक तक पहुचने का हौसला १३ साफ १४ मेरे-तेरे बीच १५ पृथ्वी के खास लोगो की तरकीब १६ अन्याय का समर्थन १७ धर्म-गुरु की व्यवहार कुशलता १८ उपासना का बधन ।

सुनो कि शायद यह नूरे सबक[19] है इस सहीफे[20] का हर्फे-अव्वल
जो हरकस-ओ-नाकसे-जमी पर दिले-गदायाने-अजमईं'[21] पर
उतर रहा है फलक से अबके सुनो कि इस हर्फे-लम-यजल[22] के
हमी तुम्ही वदगाने-बेकस अलीम[23] भी हैं, खबीर[24] भी हैं
सुनो कि हम बेजुबान-ओ-बेकस बशीर[25] भी है, नजीर[26] भी हैं

हर इक अलिल-अम्र[27] को सदा दो कि अपनी फर्दे-अ'मल[28] सँभाले
उठेगा जब जम्मे-सरफरोशां[29] पड़ेंगे दार-ओ-रसन के लाले
कोई न होगा कि जो बचा ले जजा, सजा, सब यहीं पे होगी
यहीं अ'जाब-ओ-सवाब होगा यहीं से उट्ठेगा शोरे-महशर
यहीं पे रोजे-हिसाब होगा

---

१९ तेज रोशनी २० धर्म-ग्रन्थ २१ तमाम फकीरों का दिल २२ सृष्टि का आदि स्वर २३ सब कुछ जानने वाला २४ खबर रखने वाला २५ शुभ सदेश लाने वाला २६ डराने वाला ईश्वर का एक नाम २७ हाकिम २८ कर्मों की सूची २९ सर की बाजी लगाने वालो का समूह।

सोचने दो

इक ज़रा सोचने दो
इस खियाबाँ मे जो इस लहज़ [1] बियाबाँ [2] भी नही
कौन सी शाख मे फूल आये थे सब से पहले
कौन बेरग हुई दर्द-ओ-ता'ब [3] से पहले
और अब से पहले
किस घडी कौन से मौसम मे यहाँ
खून मे कह्त पडा
गुल की शह्-रग पे कडा
वक्त पडा
सोचने दो

इक ज़रा सोचने दो
यह भरा शह्र, जो वादी-ए-वीराँ भी नही
इसमे किस वक्त, कहाँ
आग लगी थी
इसके सफबस्त [4] दरीचो मे से किसमे अव्वल
ज़ह हुई [5] सुख शुआ'ओ [6] की कमाँ
सोचने दो

हमसे उस देस का तुम नाम-ओ-निशाँ पूछते हो
जिसकी तारीख न जुगराफिया अब याद आये
और याद आये तो महबूबे-गुज़श्त की तरह

रू-ब-रू आने से जी घबराये
हाँ, मगर जैसे कोई
ऐसे महबूब का दिल रखने को

---

१ क्षण २ जगल, निजन ३ पीडा और कष्ट ४ पक्तिबद्ध ५ झुकी ६ किरना।

आ निकलता है कभी रात बिताने के लिए
हम अब इस उम्र को आ पहुँचे है जब हम भी यूं ही
दिल से मिल आते है बस रस्म निभाने के लिए
दिल की क्या पूछते हो
सोचने दो

रुख़सत

दर्द इतना था कि उस रात दिले-वहशी ने
हर रगे-जाँ से उलझना चाहा
हर बुने-मू[1] से टपकना चाहा
और कहीं दूर, तिरे सह्‌ने-चमन[2] में गोया
पत्ता पत्ता मिरे अफ़सुर्द[3] लहू में धुलकर
हुस्ने-महताब से आजुर्द[4] नज़र आने लगा
मेरी वीरान-ए-तन[5] में गोया
सारे दुखते हुए रेशों की तनाबें खुलकर
सिलसिलावार पता देने लगीं
रुख़सते-काफ़िल-ए-शौक़[6] की तैयारी का
और जब याद की बुझती हुई शम्ओं में नज़र आया कहीं
एक पल आख़िरी लम्हा तेरी दिलदारी का
दर्द इतना था कि उससे भी गुज़रना चाहा
हमने चाहा भी मगर दिल न ठहरना चाहा

---

१ रोम रोम २ उद्यान ३ उदास ४ उदासीन ५ शरीर का निज
६ शौक के काफिले की विदाई।

इनकलाबे-रूस

मुर्गे-विस्मिल[1] के मानिंद शब तिलमिलाई
उफक-ता-उफक[2]
सुब्हे-महशर[3] की पहली किरन जगमगाई
तो तारीक आंखो से बोसीद[4] पर्दे हटाये गये
दिल जलाये गये
तबक-दर-तबक[5]
आसमानो के दर
यू खुल हफ्त अफलाक[6], आईन -सा हो गये
शर्क-ता-गब[7] सब कैदखानो के दर
आज वा हो गये
कस्रे-जम्हूर[8] की तरहे-नौ[9] के लिए आज नक्शे-कुहन[10]
सब मिटाये गये
सीन -ए-वक्त से सारे खूनी कफन
आज के दिन सलामत उठाये गये
आज पा-ए-गुलामाँ मे जजीरे-पा
ऐसे छनकी कि बाँगे-दिरा[11] बन गई
दस्ते-मजलूम मे हथकडी की कडी
ऐसे चमकी कि तेगे-कजा[12] बन गई

मास्को ५ नवबर, १९६७
(रूसी क्रांति की ५०वीं वर्षगाँठ)

---

१ घायल पक्षी २ क्षितिज से क्षितिज तक ३ प्रलय की सुबह ४ फटे-पुराने ५ हर स्तर पर ६ सात आकाश ७ पूरब से पश्चिम तक ८ लोकतत्र का महल ९ नयी व्यवस्था १० पुराने निशान ११ घटे की आवाज १२ प्रलय की तलवार

गज़ल

कब तक दिल की खैर मनाये, कब तक राह दिखलाओगे
कब तक चैन की मुहलत दोगे, कब तक याद न आओगे

बीता दीद-उमीद का मौसम, खाक उडती है आँखो मे
कब भेजोगे दर्द का बादल, कब उरखा बरसाओगे

अ'ह्दे-वफा या तर्के-मुहब्बत, जो चाहो सो आप करो
अपने बस की बात ही क्या है, हमसे क्या मनवाओगे

किसने वस्ल[1] का सूरज देखा, किस पर हिज्र[2] की रात ढली
गेसुओवाले कौन थे क्या थे, इनको क्या जतलाओगे

'फैज' दिलो के भाग मे है घर भरना भी, लुट जाना भी
तुम इस हुस्न के लुत्फ-ओ-करम पर कितने दिन इतराओगे

---

१ मिलन, प्रणय २ विरह ।

ग़ज़ल

चाँद निकले किसी जानिब तेरी जेबाई[1] का
रंग बदले किसी सूरत शबे-तनहाई का

दौलते-लब[2] से फिर ऐ खुसर वे-शीरीदहनाँ[3]
आज अरजाँ[4] हो कोई हर्फ शनासाई[5] का

गर्मी-ए-इश्क से हर अंजुमने-गुलबदनाँ[6]
तजकिरा छेडे तिरी पैरहन-आराई[7] का

सह्ने-गुलशन मे कभी ऐ शहे-शमशादकदाँ[8]
फिर नजर आये सलीक तिरी रा'नाई[9] का

एक बार और मसीहा ए-दिले दिलजदगाँ[10]
कोई वा'द, कोई इकरार मसीहाई का

दीद-ओ-दिल को सँभालो कि सरे-शामे-फिराक
साज़-ओ-सामान बहम पहुँचा है रुस्वाई[11] का

---

१ सुंदरता २ होंठो की दौलत ३ मीठे मुह (बोली) वालो के खुसरो (सरताज) ४ सस्ता ५ परिचय ६ फूल जैसे शरीरवालो की महफ़िल ७ वस्त्रो की सजावट ८ शमशाद के पेड जैसे कदवालो का सरताज ९ लालित्य, सुंदरता १० पीडित हृदयो के दिल का इलाज करने वाला ११ बदनामी।

आज के नाम

और आज के गम के नाम

क्लर्कों की अफ़सुर्द जानों के नाम
किरमख़ुर्द[1] दिलों और जवानों के नाम
पोस्टमैनों के नाम
तांगेवालों के नाम
रेलवानों के नाम
कारख़ानों के भूखे जियालों के नाम
बादशाहे-जहाँ, वाली-ए-मासिवा[2], नायबे-अल्लहे-
फिलअरज[3] दहक़ाँ[4] के नाम
जिसके ढोरों को जालिम हँका ले गये हैं
जिसकी बेटी को डाकू उठा ले गये हैं
हाथ भर खेत से एक अंगुश्त[5] पटवार ने काट ली है
दूसरी मालिये के बहाने से सरकार ने काट ली है
जिसकी पग[6] ज़ोरवालों के पाँवों तले
धज्जियाँ हो गयी हैं

उन दुखी माँओं के नाम
रात में जिनके बच्चे बिलकते हैं और
नींद की मार खाते हुए हाथों से सँभलते नहीं
मिन्नतों ज़ारियों[7] से बहलते नहीं

उन हसीनाओं के नाम
जिनकी आँखों के गुल
चिलमनों और दरीचों की बेला पे बेकार खिल खिल के

---

१ कीड़े का खाया हुआ २ सर्वोच्च स्वामी ३ इस धरती पर ईश्व
का प्रतिनिधि ४ किसान ५ उँगली ६ पगड़ी ७ रोना।

मुरझा गये हैं

उन व्याहताओं के नाम
जिनके बदन बे-मुहब्बत रियाकार[८] सेजों पे सज-सजके
उकता गये हैं

बेवाओं के नाम
कटरियों और गलियों मुहल्लों के नाम
जिनकी नापाक खाशाक[९] से चाँद रातों
को आ-आके करता है अकसर वजू[१०]
जिनकी गारों में करती है आह-ओ-बुका[११]
आँचलों की हिना
चूड़ियों की खनक
काकुलों की लहक
आरजूमंद सीनों की अपने पसीने में जलने की बू
तालिब इल्मों के नाम
वह जो असहाबे-तब्ल-ओ अलम[१२]
के दरों पर किताब और कलम
का तकाजा लिये, हाथ फैलाये
पहुँचे मगर लौटकर घर न आये
वो मासूम जो भोलपन में
वहाँ अपने नन्हे चराग़ों में लौ की लगन
ले के पहुँचे, जहाँ
बट रहे थे घटाटोप, बे-अंत रातों के साये

---

८ मक्कारी भरी ९ मिट्टी, कूड़ा-करकट १० नमाज से पहले हाथ पैर धोना ११ रोना धोना १२ दुदुभी और पताका के मालिक।

उन असीरो[13] के नाम
जिनके सीनो मे फर्दा[14] के शब-ताब[15] गौहर
जेलखानो की शोरीद रातो की सरसर[16] मे
जल जलके अजुम-नुमा[17] हो गये है

आनेवाले दिनो के सफीरो[18] के नाम
वह जो खुशबू ए-गुल की तरह
अपने पगाम पर खद फिदा हो गये हैं

---

१३ बंदियों १४ भविष्य १५ रात की चमक वाले १६ गम हव
१७ सितारो जैसे १८ सदेशवाहकों दूतो।

यतीम लहू

कही नही है, कही भी नही लहू का सुराग
न दस्त-ओ-नाखुने-कातिल[1] न अस्ती पे निशाँ
न सुर्खी-ए-लबे-खजर,[2] न रगे-नोके-सनाँ[3]
न खाक पर कोई धब्बा न बाम पर कोई दाग
कही नही है, कही भी नही लहू का सुराग
न सर्फे-खिदमते - शाहाँ[4] कि खूबहा[5] देते
न दी[6] की नज्र कि बया'न -ए-जजा[7] देते
न रज्मगाह[8] मे बरसा कि मो'तबर होता
किसी अ'लम[9] पे रकम होके मुश्तहर[10] होता
पुकारता रहा बे-आसरा यतीम लहू
किसी के पास समाअ'त[11] का वक्त था न दिमाग
न मुद्दई, न शहादत, हिसाब पाक हुआ
यह खूने-खाकनशीनाँ[12] था रिज्के-खाक[13] हुआ
कही नही है, कही भी नही लहू का सुराग

अप्रल १९६५

---

१ हत्यारे का हाथ और नाखून २ खजर की नोक की लाली ३ तलवार की नोक का रग ४ राजाओ की सेवा मे व्यय होने वाला ५ खून की क़ीमत ६ धर्म ७ पुण्यफल के लिए पेशगी भुगतान ८ रणक्षेत्र ९ पताका १० चचित ११ सुनवाई १२ मिट्टी में बैठनेवालो का खून १३ मिट्टी की खूराक ।

ऐ वतन, ऐ वतन

तेरे पैगाम पर ऐ वतन, ऐ वतन,
आ गये हम फिदा हो तिरे नाम पर
तेरे पैगाम पर ऐ वतन, ऐ वतन,
नज्र क्या दें कि हम मालवाले नहीं
आनवाले है इकबालवाले नहीं
हा, यह जाँ है कि सुख जिसने देखा नहीं
या यह तन कि जिस पे कपडे का टुकडा नहीं
अपनी दौलत यही, अपना धन है यही
अपना जो कुछ भी है, ऐ वतन, है यही
वार देगे यह सब कुछ तिरे नाम पर
तेरी ललकार पर, तेरे पैगाम पर
तेरे पैगाम पर, ऐ वतन, ऐ वतन,
हम लुटा देंगे जानें तिरे नाम पर
तेरे गद्दार गैरत से मुंह मोडकर
आज फिर ऐरो-गैरो से सर जोडकर
तेरी इज्जत का भाव लगाने चले
तेरी अस्मत का सौदा चुकाने चले
दम मे दम है तो यह करने देगे न हम
चाल उनकी कोई चलने न देंगे हम
तुझको बिकने न देंगे किसी दाम पर
हम लुटा देंगे जानें तिरे नाम पर
सर कटा देंगे हम तेरे पैगाम पर
तेरे पैगाम पर ऐ वतन, ऐ वतन !

कास -ए-सर लेके चलो

दीद -ए-तर[1] पे वहा कौन नज़र करता है
शीश ए-चश्म[2] मे खू-नावे-जिगर[3] लेके चलो
अव अगर जाओ पये अर्ज-ओ-तलव[4] उनके हुजूर[5]
दस्त ओ कशकोल[6] नही कास -ए-सर[7] लेके चलो

---

१ आँसू भरी आँख २ आँख का प्याला ३ जिगर का खून ४ विनती करने और माँगने के लिए ५ सामने ६ हाथ और भीख का प्याला ७ सर का भीख का प्याला।

सरे-आगाज़

शायद कभी अफ़्शा[1] हो निगाहों पे तुम्हारी
हर साद वरक जो सुखने कुश्त[2] से खूं[3] है
शायद कभी उस गीत का परचम हो सर अफ़राज़[4]
जो आमदे-सरसर[5] की तमन्ना मे निगूं[6] है
शायद कभी उस दिल की कोई रग तुम्हे चुभ जाये
जो सगे-सरे-राह[7] की मानिंद जुबूं[8] है

---

१ खुलना २ आहत वाणी ३ रंगीन ४ फहराना ५ गम हवा आना ६ झुका हुआ ७ रास्ते का पत्थर ८ दलित ।

दुआ[1]

आइये, हाथ उठायें हम भी
हम जिन्हे रस्मे-दुआ याद नही
हम जिन्हे सोजे - मुहब्बत[1] के सिवा
कोई बुत कोई खुदा याद नही
आइये, अज़ गुज़ारें कि निगारे-हस्ती[2]
जह्रे - इमरोज[3] मे शीरीनी ए-फर्दा[4] भर दे
वह जिन्हे ताबे-गराबारी - ए - अय्याम[5] नही
उनकी पलको पे शब-ओ-रोज को हल्का कर दे
जिनकी आँखो को रुखे-सुब्ह[6] का यारा[7] भी नही
उनकी रातो मे कोई शम्अ मुनव्वर[8] कर दे
जिनके कदमो को किसी राह का सहारा भी नही
उनकी नज़रो पे कोई राह उजागर कर दे
जिनका दी[9] पैरवी-ए-कज्ब-ओ रिया[10] है उनको
हिम्मते कुफ्र[11] मिले, जुरअते-तहकीक[12] मिले
जिनके सर मुतजिरे-तेगे-जफा[13] है उनको
दस्ते-कातिल को झटक देने की तौफीक[14] मिले
इ'श्क का तीर निहाँ,[15] जान तपा[16] है जिससे
आज इकरार करें और तपिश मिट जाये
हर्फे हक[17] दिल मे खटकता है जो काँटे की तरह
आज इजहार करें और खलिश मिट जाये

---

१ प्रेम की ज्वाला २ जीवन का सौंदर्य ३ वर्तमान का विष ४ भविष्य की मिठास ५ जीवन का बोझ उठाने की शक्ति ६ प्रभात का मुखड़ा ७ सहन शक्ति ८ प्रकाशमान ९ धर्म १० झूठे और मक्कारी का दिखावा ११ धर्मद्रोह का साहस १२ जिज्ञासा का साहस १३ अत्याचार की तलवार की प्रतीक्षा मे १४ सामर्थ्य १५ गुप्त तीर १६ दहकती हुई १७ सच्चे

कतअ'

इन दिनों रस्म-ओ रहे-शह्‌रे-निगाराँ[1] क्या है
कासिदा, कीमते - गुलगश्ते - बहारा[2] क्या है
कू-ए-जानाँ[3] है, कि मकतल[4] है, कि मयखान है
आजकल सूरते - परवादी - ए - यारां क्या है

• •

१ रूपनगर की रस्म २ बहार की सैर की कीमत ३ प्रेमिका की गली
४ कत्ल होने की जगह।